दज्जाल

कौन? कब? कहां?

मुसन्निफ़
मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

फ़ेहरिस्त

इन्तिसाब.....7
तीसरी इशाअत का मक़्सदः रहमते इलाही की जुस्तजू.....8
पहली इशाअत का मक़्सदः अकाबिर के साये तले.....12

पहला बाबः मेहदवियात

हज़रत मेहदी के नाम एक ख़त.....19
इब्तिदाई तीन बातें.....21
दम मस्त क़लन्दर.....31
कामयाबी का राज़.....39
तीन ख़ुशनसीब तबक़े.....45
अब भी वक़्त है.....52
जब लाद चलेगा बन्जारा.....62
दोधारी तलवार.....69
कोई इब्हाम सा इब्हाम है!.....76
ग्रहन दो चांद.....81
मुहलत का इख़्तिताम.....85
ग़फ़लत ज़ेबा नहीं.....95

दूसरा बाबः मसीहियात

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु की वसीयत उम्मते मुहम्मदिया के नाम.....106
मसीह का मअनी.....108
मसीहा का इन्तिज़ार.....110
मुसल्लमा अक़ीदा.....112
मोजज़ात की हिक्मत.....113
राहे वफ़ा के राही.....114

आख़िरी मअरके का मैदान.....115
बीच की कड़ी.....121
मसीहियात से मुतअल्लिक़ दस सवालात.....125
1) आप ही क्यों?.....125
2) आप की पहचान कैसे होगी?.....126
3) आप के साथी कौन होंगे?.....127
4) आप का क्या मिशन होगा?.....129
5) मख़्सूस वक़्त.....130
6) मुद्दते क़्याम.....131
7) आप कहां नाज़िल होंगे?.....132
8) आलमी ख़िलाफ़त के क़्याम के बाद के हालात.....133
9) इन्तिक़ाल और वफ़ात.....134
10) आप के बाद.....134
एक अहम सवाल का जवाब.....136

तीसरा बाबः दज्जालियात

झूटे मुद्दई की तीन निशानियां.....141
दज्जाल का नाम और इसका मअ़ना.....143
पहला सवालः दज्जाल कौन है?.....146
1) सामरी जादूगर.....148
2) हीरमआबैफ़.....149
दज्जाल का शख़्सी ख़ाका.....154
3) अमरीका.....154
तीन ज़िम्नी सवालात.....163
1) दज्जाली मज़हब.....163
2) दज्जाल के साथी.....168
दज्जाल के ज़ुहूर से क़ब्ल फ़रेब की दो मुम्किना सूरतें.....169

पहली सूरत.....171
दूसरी सूरत.....171
फ़ित्नए दज्जाल से बचने के दो ज़राए.....171
बेदारी का वक़्त.....173
3) दज्जाल की ताक़त.....173
दौलत और ख़ज़ाने.....176
पानी और ग़िज़ा.....178
क़ुदरती वसाइल.....181
दवा और इलाज.....184
दज्जाल की सवारी.....185
जन्नत और दोज़ख़.....186
शैतानों की इआनत.....186
इन्सानी आबादी पे इख़्तियार.....187
दूसरा सवालः दज्जाल कहां है?.....191
दज्जाल के तीन सवाल.....196
1) बीसान का बाग़.....196
2) बहीरहे तबरिया का पानी.....197
3) जुग़र का चश्मा.....197
दज्जाल के जासूस.....198
1-डेटा इन्फ़ारमेशन.....199
2-निगरां कैमरे.....204
3-चैनल और कम्प्यूटर.....204
4-सफ़री टिकट.....205
5-रुक़ूम की मुन्तक़ली.....205
6-इलैक्ट्रोनिक करन्सी.....205
दज्जाल का मक़ाम.....209

तीसरा सवालः दज्जाल कब बरआमद होगा?..221
करना क्या चाहिये?.....239
रूहानी तदाबीर.....241
पहली हिदायत.....242
दूसरी हिदायत.....242
तीसरी हिदायत.....243
चौथी हिदायत.....245
पांचवी हिदायत.....246
छटी हिदायत.....246
सातवीं हिदायत.....247
आठवीं हिदायत.....251
तज़वीराती तदाबीर.....251
पहली तदबीरः इत्तिबाए सहाबा.....253
दूसरी तदबीरः जिहाद.....257
तीसरी तदबीरः फ़ित्नए माल व औलाद से हिफ़ाज़त.....259
चौथी तदबीरः फ़ित्नए जिन्स से हिफ़ाज़त.....261
पांचवी तदबीदः फ़ित्नए ग़िज़ा से हिफ़ाज़त.....264
आख़िरी बात.....268
मेहदवियात और दज्जाल के बारे में एक अहम सवाल.....271
किताबियात.....274

इन्तिसाब

उन अह्ले ईमान के नाम
जो दज्जाली फ़ितना के हमनवाओं के ग़ैर मामूली
इक़्तिदार
.....नीज़.....
कुदरती क़वानीन व वसाइल पर उनके हमागीर
आलमी क़ब्ज़े के बावजूद उनके सामने सर झुकाने
पर तैयार नहीं
और
ईमानी ज़िंदगी के साथ जीना और उसी पर मरना
चाहते हैं

اللهم اجعلنا منهما برحمتک یا أرحم الراحمین.

तीसरी इशाअत का मुक़द्दमा

रहमते इलाही की जुस्तजू

हिकायात व शिकायातः

यह किताब किस तरह वजूद में आई? किस मक़्सद के लिये लिखी गई? इसके मज़ामीन के मआख़ज़ क्या हैं और किन हज़रात की तहक़ीक़ात की मदद से तरतीब दिया गया है? इसका अस्रे हाज़िर से क्या तअल्लुक़ है? मुस्तक़बिल क़रीब के हवाले से यह क्या रहनुमाई कर सकती है? इन हिकायात की तफ़सील और इन सब सवालात का जवाब किताब से इसके आख़िर में दी गई फ़ेहरिस्ते कुतुब से मिलता है। ज़ेरे नज़र मुक़द्दमे में वह चन्द बातें अर्ज़ करनी हैं जो पहली इशाअत के बाद सामने आईं।

सबसे पहले तो यह हुआ कि पहला एडीशन छपते ही तक़रीबन तीन हफ़्ते में ख़त्म हो गया। यह 1100 का नहीं, 3300 का एडीशन था। मुआसिरे पाकिस्तानी रिवायात और तारीख़ के मुताबिक़ इसे एक रिकार्ड क़रार दिया गया और दूसरे एडीशन की तलब उस वक़्त से सामने आने लगी जब पहला एडीशन छाप कर दम भी न लिया था.....यह सब उन क़ारईन की नेक तमन्नाओं और ख़ुलूस दुआओं का नतीजा है जो ग़ाइबाना तौर पर बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में इल्तिजा करते है कि दावत का यह अमल मुअस्सिर व मुफ़ीद हो और ख़ल्क़े ख़ुदा के लिये इस्लाह व हिदायत का ज़रीआ साबित हो।

दूसरा एडीशन 2200 की तादाद में छपने के लिये दिया गया।

किताब की तसहीह का वक़्त था न नज़रे सानी की मोहलत। दूसरा एडीशन जिस दिन आया उसी दिन.....या उस से अगले दिन.....ख़त्म हो गया। किताब की रसद इतनी न थी जितनी इसकी तलब मुसलसल सामने आ रही थी और नाशिरीन के लिये क़ारईन की मांग पूरी करना मुश्किल होता जा रहा था, लेकिन साथ ही कुछ शिकायात भी सामने आईं। किताब महंगी है और आसानी से दस्तियाब नहीं। पहली शिकायत क़ारईन से ज़्यादा हमारे लिये परेशानी और आर का बाइस थी और दूसरी बदइन्तेज़ामी और नातजुर्बाकारी की ऐसी अलामत थी जिसका इज़ाला ज़रूरी था। वाक़िआ यह है बन्दा की किताबें दावती मक़ासिद के लिये शाए की गई थीं, उनको दीगर कुतुब की बनिस्बत सस्ती और आसान फ़राहमी के मरबूत निज़ाम के तहत दस्तियाब होना चाहिये था.....लिहाज़ा बन्दा ने इसका अज़ ख़ुद जाइज़ा लिया कि इशाअत और तरसील के निज़ाम में ख़लल कहां है? और फिर उसकी फ़ौरी इस्लाह के लिये जो बन पड़ा, किया। क़ारईन से दरख़्वास्त है कि आईन्दा भी अपने ख़ैर-ख़्वाहाना मशवरों और मुस्लिहाना शिकायतों के लिये किताब के शुरू में दिये गये नम्बर पर इत्तिला देते रहें, ताकि दावते इलल-ख़ैर का यह मिशन मुशावरत और इज्तिमाइय्यत के साथ जारी रहे और हम सब की निजात और मग़फ़िरत का ज़रीआ बने।

तसहीह व तसहीलः

आपके हाथ में मौजूदा तीसरे एडीशन में इज़ाफ़ात कम हुए हैं। इस मौज़ू के हवाले से अहम इज़ाफ़ात "दज्जाल की आलमी रियासत" नामी नई किताब में इन्शाअल्लाह आएंगे। अलबत्ता तसहीह पर तवज्जुह दी गई है। नीज़ हत्तल-इम्कान मुश्किल अलफ़ाज़ की जगह आसान अल्फ़ाज़ लिखे गये हैं। बन्दा इन लोगों के लिये दुआ गो है और हमेशा रहेगा जिन्होंने अग़लात और सक़ील अल्फ़ाज़

की तरफ़ तवज्जुह दिलाई। वाज़ेह रहे कि जो अहादीस बन्दा ने हज़रत मौलाना मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम की किताब "अलामाते क़्यामत" से ली हैं उनके हवाल नहीं दिये। उन अहादीस के हवाले इसी किताब में देखे जा सकते हैं। इस किताब की तैयारी से लेकर इशाअत तक हर चीज़ में अल्लाह तआला की खुसूसी मदद और क़ारईन की दुआओं की बरकत शामिले हाल रही है। यह किताब तक़रीबन दो ढाई माह के अर्से में लिखी गई। कुछ अबवाब तो एक ही नशिस्त में तहरीर हुए। आमद का यह हाल था कि सुब्हानल्लाह! काग़ज़ कम पड़ जाते थे। अभी अख़बार में मज़ामीन क़िस्तवार छप रहे थे कि किताब प्रेस में जा चुकी थी। फिर जैसे ही छपी तो बाज़ नाक़दीन के मुताबिक़ "बेस्ट सैलर" साबित हुई। आगे का हाल खुदा को मालूम है लेकिन अब तक यह फ़रोख़्त के कई रिकार्ड तोड़ चुकी है। बहुत से अहबाब ने कई कई सौ नुस्ख़े ख़रीद कर फ़ी सबीलिल्लाह तक़सीम किये। उनके मुताबिक़ यह नज़रियए साज़ी में मुफ़ीद और तामीरे फ़िक्र व नज़र में इक्सीर है। ऐसे हज़रात के लिये किताब का पेपरबेक एडीशन शाए किया जाएगा। इन्शाअल्लाह तआला!

अव्वल व आख़िर

इस किताब की तसनीफ़ का अव्वल व आख़िर मक़सद "तज़कीर" था। यानी अपने मुसलमान भाइयों को रुजूअ़ इलल्लाह की दावत और इस फ़ित्ने का मुक़ाबला करने की तरग़ीब जो "तारीकी के देवता" की सरबराही में सच्चे और मेहरबान खुदा के ख़िलाफ़ और शैतान मर्दूद की हिमायत में बरपा किया जायेगा। इन्सानी तारीख़ के सबसे ज़्यादा ग़ैर मुअ़तदिल मिज़ाज, नफ़सियाती मरीज़, ज़ेहनी एबनोरमल और एहसासे बरतरी की मारी हुई क़ौम "यहूद" ने इंसानियत को खुदा के रास्ते से वरग़लाने और शैतान के

ग़ैर इंसानी रास्ते पर चलाने के लिये बड़े मुनज़्ज़म तरीक़े से और बड़ी मुस्तक़िल मिज़ाजी के साथ जो कोशिशें की हैं, इस तहक़ीक़ी काम का मक़सद इन इब्लीसी कोशिशों को बेनक़ाब करना था। इन कोशिशों का मक़सद यह था कि सच्चे मसीह (जनाब सय्यदना ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम) के दुश्मन झूटे मसीह (अद्दज्जालुल अकबर) का रास्ता हमवार किया जाये और वह मौजूं हालात मुहय्या कराए जायें जिन में अलमसीहुल कज़्ज़ाब, अद्दज्जालुल अज़ीम, अलमलऊनुल अकबर का ख़ुरूज मुमकिन हो सके। और इन कोशिशों का बेनक़ाब करने का मक़सद यह है कि इस किताब को जो मुस्लिम.....या ग़ैर मुस्लिम.....पढ़े, वह आने वाले वक़्त की संगीनी समझ सके। वह शैतान के दरबानों के मुक़ाबले में रहमानी लशकर का मुजाहिदीन बन सके। उस वक़्त से पहले जब हम कुछ करने के क़ाबिल न रहेंगे, जब हमें न्यू वर्ल्ड ऑर्डर (दज्जाल के आलमी शैतानी निज़ाम) में जकड़ लिया जायेगा, हमें बेदार हो जाना चाहिये। अब भी वक़्त है। हमें बेदार होना चाहिये। इससे पहले कि हमें नींद के दौरान हमेशा की नींद सुला दिया जाये, हमें बेदार हो जाना चाहिये। दुश्मन हमें दीने इस्लाम से दूर करना चाहता है, हमें हर क़ीमत पर दीन की तालीमात से चिमट जाना चाहिये और दुश्मन का फेंका हुआ गोला उसी की तरफ़ वापिस फेंक कर अपने उन भाइयों को भी जो दीन से दूर हो चुके हैं, ऐसा मुसलमान बनाने की कोशिश करनी चाहिये जिसके हर काम पर अल्लाह का हाथ होता है। जिसका हर क़दम दज्जाल के साए से बचते हुए अल्लाह की रहमत की तलाश में उठता है।

शाह मंसूर
रबीउस्सानी: 30 हिज्री

पहली इशाअत का मुक़द्दमा

अकाबिर के साए तले

ख़ूबी या ख़ामीः

यूं तो यह किताब "दज्जाल" के मुतअल्लिक़ है मगर "दज्जालियात" का उन्वान इसके बिल्कुल आख़िर में है। किताब की इब्तिदा में हज़रत मेहदी अलैहिस्सलाम का और उसके बाद सय्यदना हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का तज़किरा है। "मेहदवियात" और "मसीहियात" से गुज़रने के बाद ही "दज्जालियात" का ज़िक्र आपको देखने को मिलेगा।

यह इस वजह से कि दज्जाल के तज़किरे से पहले उसके ख़ातमे के लिये मबऊस की जाने वाली रूहानी शख़्सियात का तज़किरा हो जाना चाहिये। शर की ताक़तों का तज़किरा हो और उसके ख़ातमे के लिये ख़ैर की क़ुव्वतों का ज़िक्रे ख़ैर न हो तो यह मिज़ाजे शरीअत के ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा क़ारी को अस्ल उन्वान (दज्जालियात) तक पहुंचने के लिये दो तम्हीदी उन्वानात "मेहदवियात और मसीहयात" के मुतालए से फ़राग़त तक इन्तिज़ार करना होगा और "मसीहुलहुदा" के मुतालए के बाद ही वह "मसीहुज़्ज़ला" को पढ़ सकेगा। बाज़ किताबो के सरे वर्क़ या फ़ेहरिस्त में कुछ उन्वानात पुरकशिश अंदाज़ में होते हैं लेकिन मतन में उनका तज़किरा नहीं होता या ऐसी गर्म बाज़ारी नहीं होती जितनी उतनी ख़बर गर्म थी। इसके बरअक्स कभी ऐसा भी होता है कि मतन में "इज़ाफ़ियात" का वसी व अरीज़ खाता काफ़ी खुले हाथों से खोल लिया जाता है

लेकिन सरे वर्क़ में उनका तज़किरा नदारद। ज़ेरे नज़र किताब इसी दूसरी क़िस्म से तअल्लुक़ रखती है। कुछ नहीं कहा जा सकता कि यह खूबी है या ख़ामी? लेकिन यह अर्ज़ ज़रूर है कि अन्दाज़े तालीफ़ की ख़ामियों पर कभी मक़सदे तालीफ़ की अहमियात पर्दा डाल दिया करती है। क़ारईन से इल्तिमास है कि अंदाज़ से क़तएं नज़र कर लें। मक़सद को पेशे नज़र रखें। इन्शाअल्लाह! किताब की मक़सदियत आपको मायूस नहीं करेगी।

तक़्दीम व ताख़ीरः

यह तो एक बात हुई। दूसरी यह कि अगरचे ज़मानी तसलसुल के लिहाज़ से वाक़िआत की तरतीब कुछ इस तरह बनती है कि पहले हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होगा, फिर दज्जाल का ख़ुरूज होगा और फिर इस फ़ित्नए अज़ीम के ख़ातमे के लिये हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे। .....लेकिन ज़ेरे नज़र किताब में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का ज़िक्र पहले और दज्जाल का बाद में है। वजह इसकी यही है कि रहमानी क़ुव्वतों के नुमाइन्दों का ज़िक्र इकट्ठे हो जाये और फिर शैतानी ताक़तों का तज़किरा इसके बाद आ जाये। फिर जो चाहे जिस सफ़ में शामिल हो जाये जिस फ़ेहरिस्त में नाम लिखवाना पसन्द करे। यह नसीबे की बात है।

इब्हाम और उलझनेंः

आख़िरी और तीसरी बात यह है कि अलामाते क़्यामत के इब्हाम में जो इब्हाम दर इब्हाम पोशीदा है, वह बजाए ख़ुद एक क़्यामत है। इन अलामात की असरी ततबीक़ में जो पेचीदगियां पेश आती हैं और क़वी तरीन क़राइन पर क़ायम अंदाज़े जिस तरह ऐन वक़्त पुरवक़ूई हक़ाइक़ से दूर.....बहुत दूर.....पेचीदा उलझनों में घिरे दिखाई देते हैं, उनकी बिना पर यह मौज़ू जितना दिलचस्प है, ज़माने के हालात पर इसकी ततबीक़ उतना ही कठिन और हौसला-शिकन

काम है। एहतियात का दामन थामते हुए और अकाबिर की तशरीहात के साए तले पनाह लेते हुए जो कुछ इस आजिज़ से हो सका, पेशे ख़िदमत है। हत्तलइम्कान इस बात का ख़्याल रखा गया है कि अहादीस की अस्री ततबीक़ के शौक़ में फ़रामीने नबवी को खींच तान कर कोई मख़सूस मफ़हूम न पहनाया जाए न मख़सूस हालात के मुताबिक़ बज़ोर ढाला जाए। सिर्फ़ वही बात कही जाए तो अब साफ़ साफ़ समझ आती है और इस पर भी इसरार न किया जाए।

.....जाने या अल्लाह!

यहां यह सवाल ज़रूर उठेगा कि इस मौज़ू पर जो "माहज़र" जमा किया गया है, यह इससे क़ब्ल पेशे ख़िदमत करने में क्या मानेअ़ था? अगर हम आख़िरी ज़माने से क़रीब हैं और आख़िरी ज़मानों के फ़ित्नों की इतनी ही अहमियत है तो फिर आज तक इस मौज़ू से सर्फ़े नज़र की क्या हिक्मत थी? यह मस्लिहत थी या मुदाहिनत? दरीदह दानिस्ता चश्मपोशी थी या नावाक़फ़ियत? यह सवाल बज़ाते खुद माक़ूल और बरमहल है और इसका जवाब किताब के पहले मज़मून में मुफ़स्सल व मुदल्लल है। हम आजिज़ इंसानों से जो कुछ हो सकता है वह.....अलहम्दु लिल्लाह.....हम कर गुज़रे। आगे रब की बातें वही जाने। मंगतो के पास अल्लाह से मन्नत व ज़ारी और बंदों से ख़ैरख़्वाही के इलावा धरा ही क्या है???

इत्तिफ़ाक़ में इख़्तिलाफ़:

यहां यह बात वाज़ेह हो जानी चाहिये कि इस वक़्त दुनिया में मौजूद तीन बड़े आसमानी मज़ाहिब (इस्लाम, यहूदियत, ईसाइयत) के मानने वाले, तो दुनिया की ग़ालिब अक्सरियत भी हैं, एक हस्ती का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो आख़िरी ज़माने में ज़ाहिर होगी और इंसानियत के लिये नजात दहिन्दा साबित हो। हरआसमानी मिल्लत में इस "मसीह मौऊद" का वादा किया गया है.....लेकिन इस इज्माली

इत्तिफ़ाक़ के बाद तीनों मिल्लतों में इसकी तफ़सील में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है।

अह्ले इस्लाम हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के आसमान से नुज़ूल के मुन्तज़िर हैं। उनका अक़ीदा है कि वह नाज़िल होकर दज्जाल को क़त्ल करेंगे। सलीब तोड़ डालेंगे। ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे (यानी दुनिया में सलीब की इबादत और इस पलीद जानवर का गोश्त खाना बंद कर दिया जायेगा) जिज़्या (ग़ैर मुसलमानों से लिया जाने वाला टैक्स) ख़त्म कर देंगे (क्योंकि कोई ग़ैर मुस्लिम बाक़ी नहीं रहेगा) और दुनिया भर में आदिलाना इस्लामी शरीअत क़ायम करेंगे।

ईसाई हज़रात भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल के मुन्तज़िर हैं। फ़र्क़ यह है कि उनके नज़दीक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मसलूब होने के तीन दिन बाद आसमान पर ले जाए गये और फिर आख़िर ज़माना में नाज़िल होकर ग़ैर ईसाइयों का ख़ातिमा कर देंगे। इस दौरान ईसाई हज़रत आसमान के बालाख़ानों में बैठ कर ग़ैर ईसाई इंसानियत के ख़ातिमे का मुशाहदा करेंगे। जबकि मुसलमानों के नज़दीक सय्यदना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह पाक सही सालिम आसमान पर ले गये। यहूदी उनका बाल बीका नहीं कर सके। फिर क़्यामत के क़रीब आप आसमान से नाज़िल होकर यहूदियों का ख़ातिमा करेंगे और यहूदियों के साथ वह ईसाइ जो "सहवनी ईसाई" बन कर यहूदियों के मददगार थे, उनका भी ख़ातिमा हो जाएगा और बक़िया रहमदिल व हमदर्द ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हाथ पर इस्लाम क़बूल कर लेंगे।

यहूदी जिस शख़्सियत का इन्तिज़ार कर रहे हैं वह उनके अक़ाइद के मुताबिक़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की औलाद से "अलक़ाइमुलमुंतज़िर" है और यहूदियों का अक़ीदा है कि वह इसकी बदौलत तमाम दुनिया पर हुकूमत करेंगे। "मसिय्या" (यानी

अलमसीहुद्दज्जाल, मसीहुश्शर वज़्ज़लाला) की आमद पर आलमी यहूदी रियासत क़ायम हो जायेगी। तमाम ग़ैर यहूदी, यहूदियों की इताअत क़बूल कर लेंगे और यहूदी इनमें से सिर्फ़ इतने अफ़राद को ज़िंदा छोड़ेंगे जितनों की वह अपनी ख़िदमत के लिये ज़रूरत महसूस करेंगे।

आख़िरी मअरकाः

इन तीनों उम्मतों के नज़रियात में यह बात भी क़द्रे मुश्तरक है कि "मसीहा" के ज़रीए इंसानियत को नजात मिलने से पहले क़ुहे अर्ज़ पर एक ज़बरदस्त और तबाहकुन जंग बरपा होगी। इस मअरकए अज़ीम में जिसे "उम्मुल मआरिक" यानी जंगों की माँ कहा जाता है कम अज़ कम दो तिहाई इंसानी आबादी मलियामेट हो जायेगी। ज़िंदा बच जाने वाले एक तिहाई लोग इस दुनिया पर बिला शिर्कत ग़ैरे हुकूमत करेंगे। अब वह एक तिहाई क़ौम कौन होगी? और दुनिया पर किस नज़रियो के तहत हुक्मरानी करेगी? इसका फ़ैसला होना बाक़ी है और यह फ़ैसला फ़लस्तीन के क़रीब "हिरमजदून" की वादी में होगा जिसे अह्ले मग़रिब "आरमैगाडॉन" कहते हैं। ईसाई और यहूदी दोनों इस फ़ैसलाकुन मअरके की ज़बरदस्त तैयारी कर रहे हैं.....सही यह है कि कर चुके हैं.....और सिर्फ़ एक क़्यामतख़ेज़ धमाके के मुंतज़िर हैं जो (मआज़ अल्लाह) "गुंबदे सुख़रा" के इन्हिदाम पर होगा क्योंकि उनके (फ़रसूदा नज़रियात और मनघड़त मज़हबी दासतानों के मुताबिक़) हैकल की मिस्मारशुदा इमारत "गुंबदे सुख़्रा" के नीचे है। जब गुंबद की बुन्यादें उखड़ कर हैकल आसार बरआमद होंगे तो "मसिय्या" निकल आयेगा और उसकी आमद पर ग़ैर यहूदियों का वह क़त्ले अज़ीम बरपा होगा जिसके बाद ग़ैर यहूदी व ईसाई इंसानियत (ख़ुसूसन अह्ले इस्लाम) का ख़ातिमा हो जाएगा और अह्ले मग़रिब (यहूदी या ईसाई) बिला शिर्कत ग़ैरे इस क़हे अर्ज़ के हुक्मरान होंगे।

वाहिद राहे नजात:

इस एतिबार से आज की दुनिया तीसरी जंगे अज़ीम के दहाने पर खड़ी है। वह वक़्त दूर नहीं जब मग़रिब व मशरिक़ इस जंग की आग में झोंक दिये जायेंगे। फ़र्क़ इतना है कि अह्ले मग़रिब ने इसकी तैयारी कर रखी है। वह लोग खुद को माद्दियत पसंद कहलवाते हैं और ग़ैबी हक़ाइक़ व पशेगोइयों के क़ायल नहीं समझे जाते.....लेकिन उन्होंने दरपर्दा तौरात व इंजील और तालमूद की तहरीफ़ शुदा पेशगोइयों के मुताबिक़ खुद को तैयार कर लिया है.....जबकि अह्ले मशरिक़ आतिश फ़शां के दहाने पर खड़े होकर भी इस हौलनाक इन्फ़िजार से बेख़बर हैं जिसकी उनके नबी पाक अस्सादिक़ुल मुसद्दिक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी है और उनकी दी गई इताअत हर्फ़ बा हर्फ़ पूरा होते हुए मुकम्मल होने के क़रीब पहुंच चुकी हैं। यह किताब अह्ले इस्लाम की ख़िदमत में दुहाई है, फ़रियाद है, मन्नत व ज़ारी और आजिज़ाना इल्तिजा है। मग़रिब से उठने वाला तूफ़ान अनक़रीब हम पर चढ़ दौड़ने वाला है। हमें अपने नजात दहिन्दा क़ाइदीन हज़रत मेहदी व हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मईय्यत में ईमाने रासिख़ व अमले सालेह अपनाते हुए जिहाद यानी क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह के लिये तैयार हो जाना चाहिये। यही वाहिद, पहली और आख़िरी मुअय्यन राहे नजात है।

अल्लाह तआला हम सब को आख़िरत की फ़िक्र नसीब फ़रमाए और क़्यामत से पहले जो क़्यामतें हमारी मुंतज़िर हैं, उनसे सुरख़ुरूई के साथ गुज़रने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

पहला बाब

मेहदवियात

हज़रत मेहदी कौन होंगे?
हज़रत मेहदी के साथी कौन होंगे?
हज़रत मेहदी की जद्दो जेहद किस नोइय्यत की होगी?
हज़रत मेहदी कब, कहां और किस तरह ज़ाहिर होंगे?
हज़रत हारिस व मंसूर का किर्दार क्या होगा?
मग़रिब की अज़ीमुश्शान माद्दी ताक़त के ख़िलाफ़
आप क्योंकर कामयाब होंगे?

हज़रत मेहदी के नाम एक ख़त

दारुल उलूम देवबंद के सबसे पहले मुहतमिम हज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साहब रहिमहुल्लाह ज़ाहिरी व बातिनी उलूम के जामेअ़ थे। नक़्शबन्दिया ख़ानदान के अकाबिर में से थे। आख़िर उम्र में हिजरत फ़रमाकर मक्का मुकर्रमा आये। वहीं उनकी वफ़ात भी हुई और वहीं क़ब्र भी है। आपको आख़िर ज़माना में अलामाते क़्यामत के ज़ुहूर ख़ुसूसन हज़रत मेहदी की क़्यादत में आलमी ईमानी जद्दो जेहद से ख़ुसूसी दिलचस्पी थी। हज़रत मेहदी का ज़ुहूर मक्का मुकर्रमा में होना था। दूसरी तरफ़ उन्हें यह हदीस मालूम थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शैबी ख़ानदान को फ़त्हे मक्का के मौक़े पर बैतुल्लाह की कुंजियां सिपुर्द की हैं और बैतुल्लाह चूंकि क़्यामत तक बाक़ी रहेगा इसलिये मक्का में चाहे सारे ख़ानदान उजड़ जायें, शैबी का ख़ानदान क़्यामत तक बाक़ी रहेगा।

चुनांचे मौलाना रफ़ीउद्दीन साहब रहिमहुल्लाह की जब आख़िरी उम्र हुई और उन्हें शदीद इश्तियाक़ था कि हज़रत मेहदी के हाथ पर बैअत और उनकी क़्यादत में जिहाद नसीब हो जाए तो उनको अजीब तरकीब सूझी कि जब यह ख़ानदान क़्यामत तक बाक़ी रहेगा तो ला महाला ज़ुहूरे मेहदी के ज़माना में भी मौजूद रहेगा। जब हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होगा और वह कअबतुल्लाह की दीवार से टेक लगाए मुसलमानों को बैअत करेंगे तब कअबतुल्लाह की कुंजियां शैबी ख़ानदान के किसी फ़र्द की हाथ में होंगी। चुनांचे इसी के पेशे नज़र उन्होंने एक हमाइल शरीफ़ और एक तलवार ली और एक ख़त हज़रत मेहदी के नाम लिखा। इस ख़त का मज़मून यह है: "फ़क़ीर रफ़ीउद्दीन देवबंदी मक्का मुअज़्ज़मा में हाज़िर है और आप जिहाद की तरतीब कर रहे हैं। ऐसे मुजाहिदीन आपके साथ हैं जिनको वह अज्र मिलेगा जो ग़ज़वए बदर के मुजाहिदीन को मिला था। सो रफ़ीउद्दीन

की तरफ़ से यह हमाइल तो आपके लिये हदिया है और यह तलवार किसी मुजाहिद को दे दीजिये कि वह मेरी तरफ़ से जंग में शरीक हो जाए और मुझे भी वह अज्र मिल जाए।" और ये तीनों चीज़ें शैबी के ख़ानदान वालों के सिपुर्द कीं और उनसे कहा कि तुम्हारा ख़ानदान क़्यामत तक रहेगा। यह हज़रत मेहदी के लिये अमानत है। जब तुम्हारा इन्तिक़ाल हो तो तुम अपने क़ायम मक़ाम को वसियत कर देना और उनसे कह देना कि वह अपने क़ायम मक़ाम को वसियत करे और हर एक यह वसियत करता जाये। यहां तक कि यह अमानत हज़रत मेहदी तक पहुंच जाए। (ख़ुत्बाते हकीमुल इस्लामः जि02, स098)

इब्तिदाई तीन बातें

हज़रत मेहदी के हवाले से तीन बातें समझना बहुत अहम हैं:

1) हज़रत मेहदी कौन होंगे?

2) ज़ुहूर के बाद क्या करेंगे?

3) कब ज़ाहिर होंगे?

इनको अगर कुछ समझ लिया जाए तो इस मौज़ू से मुतअल्लिक़ बहुत सी ग़लत फ़हमिया ख़त्म हो जाती हैं। आज तक इस हवाले से जो गुमराहियां फैलाई गईं या जो ग़फ़लत बर्ती गई, इसकी गुंजाइश भी नहीं रही।

पहली बातः हज़रत मेहदी कौन होंगे?

सबसे पहला सवाल यह है हज़रत मेहदी कौन होंगे? इस सवाल का जवाब दो तरह से दिया जा सकता है:

1-हज़रत मेहदी का ग़ाइबाना तआरुफ़ः

हज़रत का ग़ाइबाना तआरुफ़ तो मुतअय्यन है कि वह हसनी सादात में से होंगे। उनका नाम नामी मुहम्मद या अहमद और वालिद का नाम अब्दुल्लाह होगा। मेहदवियात के मुहक़्क़िक़ अल्लामा सय्यद बरज़न्जी फ़रमाते हैं: मुझे उनकी वालिदा के नाम के बारे में काई सही रिवायत नहीं मिली। अलबत्ता बाज़ हज़रात ने वालिदा का नाम "आमिना" तहरीर किया है। मेहदी इनका नाम नहीं, लक़ब है। बमअनी हिदायत याफ़्ता। यानी उम्मत को उनके दौर में जिन उमूर

की ज़रूरत होगी और जो चीज़ें उसकी कामयाबी और बरतरी के लिये ज़रूरी होंगी और पूरी रूए ज़मीन के मुसलमान बेतहाशा कुर्बानियां देने के बावजूद महज़ इन चंद चीज़ों के न होने की वजह से कामयाब न हो रहे होंगे, हज़रत मेहदी को कुदरती तौर पर इनका इदराक होगा और इन कोहताइयों की तलाफ़ी और चंद मतलूबा सिफ़ात को बआसानी अपनाकर उम्मत के लिये मिसाली किर्दार अदा करेंगे और चंद सालों में वह कुछ कर लेंगे जो सदियों से मुसलमानों से बन न पड़ रहा होगा? वह पहले से पैदा नहीं हुए। आम इंसानों की तरह पैदा होंगे। 40 साल की उम्र में उम्मते मुस्लिमा उनको अपना क़ाइद बनाएगी और उनके हाथ पर बैअत करके कुफ्र के बरपाकर्दा मज़ालिम के ख़िलाफ़ वह अज़ीम जिहाद शुरू करेगी जिसका इख़्तिताम आलमी ख़िलाफ़ते इस्लामिया के क़्याम पर होगा। यह तो इनका सीधा साधा तआरुफ़ है जो अक्सर अहादीस में मौजूद है।

2-हज़रत मेहदी का हाज़िराना तआरुफ़:

जहां तक बात हाज़िराना तआरुफ़ की है तो इस सिलसिले में सबसे पहले यह याद रखनी चाहिये कि वह शख़्स सच्चा मेहदी हो ही नहीं सकता जो मेहदी होने का दावा करे। दावाए मेहदवियत और हक़ीक़ी मेहदवियत में आग और पानी का तज़ाद है। इसके कई दलाइल हैं। चूंकि झूटे मुद्दई हर दौर में फ़ितना फैलाते रहे हैं.....हमारे ज़माने में भी इस रूहानी मन्सब पर फ़ाइज़ होकर दुन्यवी मफ़ादात बटोरने वालों की कमी नहीं, लिहाज़ा हम झूटे मुद्दइयों के फ़ितने की तरदीद में चंद मज़बूत दलाइल पेश करने की कोशिश करेंगे:

1) "मेहदवियत" एक रूहानी मन्सब है और मेरे शैख़ व मुर्शिद, महबूबुल उलमा व अस्सल्हा हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबन्दी दामत बरकातुहुम अकाबिर का एक मक़ौला नक़्ल

फ़रमाया करते हैं: "तसव्वुफ़ के मैदान में मुद्दई की सज़ा फांसी है।" फिर बात यह है कि हसनी सादात को ज़ुहूरे मेहदी का इनाम मिला ही इसलिये है कि वह अपने जाइज़ दावे और हक़ से दस्तबरदार हो गए थे तो अब सच्चे मेहदी के लिये दावे के ज़रीए यह अज़ीम मंसब हासिल करने की क्या गुंजाइश रह गई है? तफ़सील इस इजमाल की यह है कि नवासए रसूल सय्यदना हज़रत हसन रज़ि0 अज़ीम ईसार का मुज़ाहिरा करते हुए सय्यदना हज़रत मुआविया रज़ि0 के हक़ में ख़िलाफ़त से दस्तबरदार हो गये थे और महज़ मुसलमानों में इत्तिफ़ाक़ और सुलह की ख़ातिर अपना यह हक़ छोड़ दिया था। इसके बदले आख़िर ज़माने में जब उम्मत को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद की ज़रूरत होगी तो अल्लाह पाक उन्ही की औलाद में से एक मुजाहिद लीडर आलमी सतह पर ख़िलाफ़त के क़्याम के लिये मुंतख़ब फ़रमायेंगे क्योंकि अल्लाह तआला का क़ानून यही है कि जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर कोई चीज़ छोड़ देता है तो अल्लाह तआला उसको या उसकी औलाद को उससे बेहतर चीज़ इनायत फ़रमा देते हैं। चुनांचे महदूद इलाक़े में ख़िलाफ़त छोड़ने के बदले हज़रत हसन रज़ि0 की औलाद को आलमी ख़िलाफ़त का इन्आम मिलेगा। आपके हसनी होने की दूसरी वजह उलमाए किराम ने यह लिखी है जिस तरह हज़रत इस्हाक़ अलै0 की औलाद से बुत से अंबियाए किराम आये और हज़रत इसमाईल अलै0 की नस्ल में अल्लाह तआला ने सिर्फ़ एक नबी भेजे जो "ख़ातिमुल अंबिया" थे। इसी तरह हज़रत हुसैन रज़ि0 की नस्ल से बहुत से औलिया आए जबकि हज़रत हसन रज़ि0 की औलाद से एक ही बहुत बड़े वली आयेंगे जो "ख़ातिमुल औलिया" होंगे। (देखिये: मुल्ला अली क़ारी की मरक़ातुल मफ़ातीह:147/10 और मौलाना इदरीस कांधलवी की अत्तअलीकुल सबीह:197/6)

2) मेहदवियत का अज़ ख़ुद दावा करने वाले के झूटे होने की

दूसरी दलील यह है कि हज़रत मेहदी तो हदीस शरीफ़ की बयानकर्दा वाज़ेह अलामत और सच्चे अल्लाह वालों के तरीक़े के मुताबिक़ इमामत व उहदा और मंसब क़बूल करने से जितना उनसे बन पड़ेगा, गुरेज़ करेंगे, हत्ता कि वह सात उलमा तो दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों (मुम्किना तौर पर पाकिस्तान व अफ़ग़ानिस्तान, उज़बेकिस्तान, तुर्की, शाम, मराकश, अलजज़ाइर, सूडान) से हज़रत मेहदी की तलाश में आये होंगे और हर एक के हाथ पर तीन सौ दस से कुछ ऊपर अफ़राद ने बैअत कर रखी होगी और यह सब मिल कर सरगर्मी से उस शख़्स को तलाश कर रहे होंगे जिसके हाथ पर बैअत से उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ होगा, मरकज़ी क़्यादत नसीब होगी, फ़ित्नों का ख़ातमा होगा। यूरोप के सलीबियों और अमरीका व इस्राईल के यहूदियों की साज़िशें दम तोड़ देंगी और हुकूमते इलाहिया क़ायम होगी, यह सब अहले इल्म व सलाह भी होंगे और अपनी अपनी जमाअत से मौत तक जिहाद की बैअत भी लिये हुए होंगे (ऐ अहले इस्लाम! इल्मे दीन, तसव्वुफ़े शरई और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के हामिलीन व दाइयों से तुम कहां वरग़ला ले जाते हो?) ये सातों हज़रात मिल कर हज़रत मेहदी को हरमैन में तलाश करेंगे। जब हज़रत मेहदी तक पहुंच जाएंगे और उनमें तमाम अलामतें पायेंगे तो तस्दीक़ के लिये उनसे पूछेंगेः "आप फ़लां बिन फ़लां हैं?" हज़रत मेहदी उनको ख़ूबसूरती से टालते हुए कहेंगेः "मैं तो एक अंसारी हूं।" यानी अल्लाह के दीन की मदद करने वाला! और यह कहकर मक्का मुकर्रमा से छिप कर मदीना मुनव्वरा चले जायेंगे। ये हज़रात आपको तलाश करते करते मदीना शरीफ़ पहुंच जायेंगे। हज़रत मेहदी इमामत का उहदा दिये जाने से बचने से पहले उनसे छिप कर फिर मक्का मुकर्रमा आ जायेंगे। ये उलमाए किराम बेताब होंगे कि हमने दुनिया भर में जिहाद किया। इस्लाही कोशिशें कीं। जान, माल, इज़्ज़त आबरू बेहिसाब क़ुर्बानियां दीं। मंज़िल फिर भी हाथ आके

नहीं दे रही। कुफ़्र का ज़ोर टूट रहा है न कुफ़्रियात का ग़लबा ख़त्म हो रहा है। उम्मत को जिस क़ाइद की ज़रूरत है, जिस में अक़्ल व सूझबूझ भी हो, जुराअत व शुजाअत भी और कुदरत की तरफ़ से हिदायत व नुसरत भी, उसके क़रीब पहुंच कर भी हम फिर महरूम रह गये। ये आपको खोजते खोजते फिर हरमे मक्की आ पहुंचेगे। इस तरह तीन चक्कर हरमैन के दरमियात लगेंगे। आख़िरकार ये उलमा तीसरी मर्तबा हज़रत मेहदी को हज्रे असवद के पास जा लेंगे। आप कअबा के साथ चिमट कर, चेहरा कअबा की दीवार पर रगड़ते हुए उम्मत की हालत पर रो रहे होंगे। ये उलमा आपको पहले ख़ुदा का वास्ता देकर कहेंगे कि अगर आपने बैअत के लिये हाथ न बढ़ाया तो जितनी उम्मत मज़लूमियत की हालत में मारी जा रही है, इस सब का गुनाह आपके सर पर होगा। इस पर हज़रत मेहदी मजबूर होकर मक़ामे इब्राहीम और हज्रे असवद के दरमियान बैठकर उनसे कहेंगे कि आओ! फिर आख़िरी फ़तह तक इकट्ठे जीने मरने का अहद करते हैं। अमीर और मामूर के इस अहद को शरीअत की इस्तिलाह में "बैअत" कहते हैं। चुनांचे वह उन उलमाए किराम से शरीअत की इत्तिबा और मरते दम तक जिहाद पर बैअत लेंगे। इस हिज्रत और जिहाद के नतीजे में आलमी सतह पर ख़िलाफ़त क़ायम हो जाएगी। हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिज्रत फ़रमाकर जिहाद का अमल जारी किया था। हज़रत मेहदी मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा हिज्रत मअकूस फ़रमाकर जिहाद की सुन्नत को फिर से ज़िंदा फ़रमायेंगे और मुसलमानों की उम्मीदों, तमन्नाओं और ख़्वाबों की ताबीर मिल जाएगी।

3) एक और दलील जो हुब्बेजाह के मरीज़ों की तरफ़ से मेहदी होने का दावा करने वालों को झूटा साबित करती है, यह है कि ज़ुहूर से पहले ख़ुद हज़रत मेहदी अपने मक़ाम से नावाक़िफ़ होंगे। उनकी

अपनी सलाहियतें खुद उन पर मख़फ़ी होंगी और वह एक आम आदमी की ज़िंदगी गुज़ार रहे होंगे.....भला वह कैसे मेहदी होने का दावा कर सकेंगे? हज़रत अली रज़ि0 से एक रिवायत मन्कूल है:

"اَلْمَهْدِيُّ مِنَّا أَهْلُ الْبَيْتِ، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصْلِحُهُ اللّٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ".

(इब्ने माजा, बाब खुरूजुल मेहदीः 310/4, व मुस्नद अहमद 106/1)

तरजुमाः रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः मेहदी हम अह्ले बैत में से होंगे, अल्लाह तआला एक ही रात में उनको यह सलाहियत अता फ़रमा देगा।

इस हदीस की शरह में शैख़ अब्दुल ग़नी देहलवी रहि0 फ़रमाते हैं:

يُصْلِحه اللّٰهُ فى ليلةٍ، أى يُصلِحه للإمارةِ والخلافه بغاء ةً وبغتةً.

(इन्जाहुल हाजा अला हामिश इब्ने माजा)

यानी अल्लाह तआला एक ही रात में अचानक उनको इमारत और ख़िलाफ़त की यह सलाहियत अता फ़रमा देगा।

अल्लामा इब्ने कसीर रहि0 इस हदीस की शरह में फ़रमाते हैं:

"أى يتوبُ عليه ويُوَفِّقُهُ ويُلهِمه ويُرشدهُ بعدَ أن لم يكن كذلك".

(अलबिदाया वन्निहाया फ़िलफ़ित्ना वलमलाहिम31/1)

यानी अल्लाह तआला अपने ख़ुसूसी फ़ज़्ल व तौफ़ीक़ से सरफ़राज़ फ़रमाकर पहले उन्हें (हक़ीक़त का) इल्हाम करेंगे और उस मक़ाम से आशना करेंगे, जिस से वह पहले नावाक़िफ़ थे।

हज़रत मौलाना बदर आलम मेरठी मुहाजिर मदनी रहि0 फ़रमाते हैं: एक अमीक़ हक़ीक़त इससे हल हो जाती है और वह यह है कि यहीं पर बाज़ ज़ईफ़ुल ईमान क़ुलूब में यह सवाल उठ सकता है कि जब हज़रत मेहदी ऐसी खुली हुई शोहरत रखते हैं तो फिर उनका तआरुफ़ अवाम व ख़्वास में कैसे मख़्फ़ी रह सकता है? इसलिये

मसाइब व आलाम के वक़्त उनके ज़ुहूर का इन्तिज़ार माकूल मालूम नहीं होता है, लेकिन इस लफ़्ज़ (يصلحه الله فى ليلة) ने यह हल कर दिया कि यह सिफ़ात ख़्वाह कितने ही अशख़ास में क्यों न हों, लेकिन उनके वह बातिनी तसर्रूफ़ात और रूहानियत मश्ययते इलाहिया के मातहत ओझल रखी जायेगी। यहां तक कि जब उनके ज़ुहूर का वक़्त आएगा तो एक ही शब के अंदर अंदर उनकी अंदरूनी खुसूसियात मंज़रे आम पर आ जायेंगी। गोया यह भी एक करिशमए कुदरत होगा कि उनके ज़ुहूर के वक़्त से क़ब्ल कोई शख़्सियत उनको पहचान न सकेगी और जब वक़्त आएगा तो कुदरते इलाहिया शब भर में वह तमाम सलाहियतें उनमें पैदा कर देगी जिनके बाद उनका मेहदी होना खुद उन पर और तमाम दुनिया पर भी मुन्कशिफ़ हो जाएगा।

(तरजुमानुस्सुन्नाः 404/4)

इस सारी तफ़सील से जो मुस्तनद किताबों में मज़कूर है (इस वक़्त बन्दे के सामने दो दर्जन के क़रीब किताबें मौजूद हैं जिनकी फ़ेहरिस्त इस किताब के आख़िर में है) मालूम हुआ कि मेहदी होना जिहादी और अस्करी क़्यादत के साथ साथ एक तरह से रूहानी मंसब है और रूहानियत के मक़ाम पर फ़ाइज़ लोग मंसब का दावा नहीं किया करते। अलबत्ता उनकी कारकर्दगी और सलाहियत ऐसी होती है कि लोग उहदों और मनासिब को अज़खुद उन पर सद्क़े वारी करते हैं। फिर मेहदी की मस्नद फूलों की सेज नहीं, कांटों भरा ताज है। इसमें यूं नहीं होगा कि मेहदी मौऊद होने का दावा करके कोई साहब मस्नद नशीन हो जाएं, नज़राने वसूल फ़रमाते रहें और उम्मत के मसाइल हल करने और उसकी कश्ती को मंझदार से निकालने के लिये कुर्बानी देने के बजाए खुद एक नया मसला बनकर सदर नशीन हो जाएं। मेहदी होने का मतलब पूरी दुनियाए कुफ़्र की मुख़ालिफ़त, उससे टकराव, जान पर खेल कर मज़लूम मुसलमानों की

इम्दाद, आग के दरया से गुज़र कर फ़तह का हुसूल और खून का समन्दर पार करके "ख़िलाफ़ते इलाहिया अला मिनहाजुन्नुबुव्वा" का क़्याम है। अब फ़रमाइये कि इसमें दावा की गुंजाइश कितनी है और अमल व किर्दार की सच्चाई कितनी ज़रूरी है? मिर्ज़ा क़ादियानी की तरह के मर्दूदों और हर शाही क़िस्म के पाजियों का यहां क्या गुज़र है?

यहां यह बात खुसूसियत से मलहूज़ रहे कि हज़रत मेहदी जिस तरह कअबे के पर्दों से चिमट कर दीवारे कअबा पर मुंह रगड़ते हुए उम्मत की बदहाली पर रो रहे होंगे, उसी तरह ये सात उलमा भी उनकी जुस्तजू में बेचैन व बेताब होंगे। उनके साथ मौजूद तीन सौ के लगभग अफ़राद भी दुनिया भर से उनकी तलाश में हरमैन पहुंच चुके होंगे और अपना सब कुछ अमीर के एक इशारे पर लुटाने के लिये तड़प रहे होंगे। उम्मते मुस्लिमा के लिये अमीर और मामूर की यह तड़प और कुढ़न वह चीज़ है जिस पर अल्लाह तआला उम्मत की ख़िदमत का काम लेने, मुश्किल चीज़ों को आसान करते और सही वक़्त पर सही चीज़ की ग़ैबी तौफ़ीक़ अता फ़रमाते हैं। पस जिसे हज़रत मेहदी के मुतअल्लिक़ मालूमात का शौक़ है, उसे पहले तो अपनी हालत सुधारनी चाहिये, हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद की अदाइगी का एहतिमाम करना चाहिये और फिर अपने बजाए इस्लाम के लिये सोचना चाहिये। उम्मते मुस्लिमा की बिगड़ी बनाने में उलमा, मशाइख़ और मुजाहिदीन का हाथ बटाना चाहिये। अपने जान, वसाइल में मुसलमानों के लिये वाफ़िर हिस्सा रखना चाहिये। ऐसे ही लोग या उनकी नस्लें इस मुबारक लश्कर में शामिल हो सकती हैं। महज़ अंदाज़े, क़्यासात, तख़ैयुलात और अमल के बेग़ैर हुब्बे मंशा नताइज की उम्मीद या क़ुर्बानी के बेग़ैर निरे जज़्बात किसी काम के नहीं।

इन दो जवाबों के बाद बाज़ क़ारईन की नज़र में पहला सवाल

ख़त्म हो गया होगा, लेकिन दरहक़ीक़त यहीं से यह सवाल एक नये पहलू से सर उठाता है। हज़रत मेहदी कौन होंगे? इस सवाल पर अब तक जो बात हुई है वह किताबी या इल्मी और ज़ेहनी है। लेकिन क्या महज़ इस से तशफ़्फ़ी हो जाती है? इस तख़ैयुलाती तआरुफ़ को अस्री तत्बीक़ की शक्ल दिए बेग़ैर बात पूरी हो जाएगी? यह आजिज़ समझता है कि बात को यहीं तक लाकर छोड़ने से गुमराह और नफ़्स परस्त क़िस्म के लोगों को मौक़ा मिल जाता है कि वह जहां चाहें तत्बीक़ करते फिरें और जिसे चाहें मेहदी मान कर उसके लिये बहाई गई रूहानियत और नफ़्सियाती मुराअत की गंगा में हाथ धोते रहें.....हमारे यहां चूंकि तबीअतें और दिमाग़ फ़िलाज़ह हैं इसलिये झुटे मुद्दइयों के पीछे चलने वाले बहुत हैं और सच्चे मेहदी की तलब रखने वाले कम हैं। क्योंकि जो यह तलब रखेगा उसे उसके तक़ाज़े भी पूरे करने पड़ेंगे और नाआसूदा हसरतों और तिश्ना तमन्नाओं के मारे हुए आज के मुसलमानों के लिये यही वह चीज़ है जिस से हमारी जान जाती है। दूसरी तरफ़ यह भी हक़ीक़त है कि अल्लाह तआला और उसके सच्चे पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़्यामत की तरह इसकी अलामात को भी किसी क़द्र मुब्हम रखा है। उनकी सही तअय्युन किसी के बस की बात नहीं। बहुत से मुहक़्क़िक़ीन के अंदाज़े भी ग़ैर वाक़ई साबित हुए हैं। अलबत्ता हत्मी तअय्युन और मुकम्मल इब्हाम के दरमियान महज़ इम्कानी तत्बीक़ और मुम्किना मिस्दाक़ की हद तक बात की जाए, इसकी सिहत पर इसरार न किया जाए, न उसकी बुनियाद पर शरीअत के ख़िलाफ़ या अकाबिरीन के मशरब से हट कर कोई तावील की जाए और उलमाए किराम व मशाइख़े इज़ाम की तौजीहात व तंबीहात को क़बूल कर लेने के लिये तैयार रहा जाए तो ज़बान खोलना शायद मम्नू न होगा, ख़ुसूसन इसलिये कि मक़्सद सिर्फ़ और सिर्फ़ आम्मतुल मुस्लिमीन को

इस्लाहे नफ़्स और जद्दो जेहद व जिहाद की दावत देना हो। तो आइये! एक नज़र ज़रा इस पहलू पर डालते हैं।

وبا لله التوفيق، وهو العاصم من الشرور والفتن.

दम मस्त क़लन्दर

दूसरी बातः हज़रत मेहदी कौन होंगे?

हज़रत मेहदी कौन होंगे? यह सवाल जितना अहम है उतना ही अहम यह है कि उनके साथा चलने वाले कौन होंगे? अमीर की पहचान जितना लाज़मी है उतना ही लाज़मी यह भी है कि उसके मामूर और उसके गिर्द मौजूद जमाअत की पहचान हो ताकि हज़रत मेहदी को कोई पा सके या न पा सके, इन सिफ़ात को तो पा जाए जो मौत से क़ब्ल मौत की तैयारी में काम आ सकती हैं।

क़ारईने मुहतरम! अहादीस में दो इशारे ऐसे मिलते हैं जिन से आख़िरी ज़माने के कामयाब क़ाइद और उसके ख़ुशनसीब कारकुन दोनों की किसी क़द्र पहचान हो जाती है और आदमी को हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने, हक़ के लिये क़ुर्बानी देने और बातिल के ख़िलाफ़ डट जाने का हौसला मिल जाता है। ये दोनों अहादीस बन्दा के सामने अरबी में बा हवाला मौजूद हैं। हवाला मुस्लिम शरीफ़ और मिश्कात शरीफ़ का है। लेकिन अगर हम अरबी इबारत की तरफ़ गए तो यह तहक़ीक़ी मज़मून बन जाएगा जबकि बंदा तहक़ीक़ का अहल नहीं। तहक़ीक़ के लिये हमेशा अपने अकाबिर की तरफ़ रुजू करता है। अल्लाह पाक ने हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद को जिस इल्म और तक़्वा से नवाज़ा, वह रासिख़ है और जो फ़हम व बसीरत

अता की, वह कामिल है। हमारी खुशनसीबी यह है कि उनको देख देख कर, उनसे पूछ पूछ कर चलते रहें और उनकी तक़लीद में एहतियात और नजात को मुज़्मर समझें। हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम ने अपने वालिद हज़रत मुफ़्तीय आज़म मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहि0 की लिखी हुई जिस मअरकतु आरा किताब की तहक़ीक़ की है और उसके आख़िर में "फ़ेहरिस्त अलामाते क़्यामत" के उन्वान के तहत तीसरी अलामत यूं तहरीर है: "नुज़ूले ईसा तक इस उम्मत में एक जमाअत हक़ के लिये बरसर पैकार रहेगी जो अपने मुख़ालिफ़ीन की परवा न करेगी। इस जमाअत के आख़िरी अमीर इमाम मेहदी होंगे।" (स0: 142) इसमें आख़िरी जुम्ला (इस जमाअत के आख़िरी अमीर इमाम मेहदी होंगे) बहुत अहम है। इससे साफ़ मालूम होता है हज़रत मेहदी न किसी ग़ैर जिहादी जमाअत के अमीर होंगे न किसी और क़िस्म के फ़िक्री या तन्ज़ीमी गिरोह के, वह जिहादी जमाअतों के आख़िरी अमीर होंगे। अह्ले हक़ की तमाम जिहादी जमाअतें और उनके ज़िम्मेदार अपनी अपनी जमाअतों को उनके हाथ में देकर उनके साथ ज़म हो जाएंगे और दुनिया भर में अलग अलग जो कोशिशें हो रही हैं, वह हज़रत मेहदी के झण्डे तले जब इकट्ठी होंगी तो मुजाहिदीन की बेमिसाल क़ुर्बानियां और हज़रत मेहदी की ज़ेहन और जुर्अतमंद क़्यादत मिलकर मुसलमानों को वह गुमशुदा चाबी वापस दिलवा देगी जो अर्सा हुआ गुम हो गई है और फ़तह व नुस्रत और तरक़्क़ी व कामयाबी की गाड़ी के चारों टायर (इल्म, तक़्वा, दावत, जिहाद) मौजूद होने के बावजूद चल के नहीं दे रही।

अब मामूरीन और कारकुनों की पहचान की तरफ़ आइये! मसला ही बिल्कुल साफ़ हो जाएगा। दुनिया में इस वक़्त मुसलमानों के तीन मुख़ालिफ़ीन हैं: यहूद, हुनूद (मुश्रिकीन), ईसाई। हज़रत मेहदी की जंग ईसाइयों (यूरपी यूनियन) से होगी। यहूद और उनके सरबराह

अद्दज्जालुल अज़ीम के ख़ातमे के लिये हज़रत ईसा अलै0 नुज़ूल फ़रमायेंगे। इसकी एक हिक्मत तो यह है कि यहूद ने हज़रत ईसा अलै0 को बेतहाशा सताया। जान लेने की कोशिश की। आप के हवारियों ने आप के गिर्द जानें देकर आपकी हिफ़ाज़त न की। इन्ही यहूद ने मुश्रिकीन के साथ मिल कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 को भी बहुत सताया। जान लेने के दर पे हो गए। आप के सहाबा ने आप के गिर्द अपने जिस्मों की दीवार खड़ी कर दी। मुहाजिर सहाबा तो निकले ही कश्तियां जला कर थे लेकिन अंसार का हाल भी यह था कि जब तक एक भी ज़िंदा था, मुम्किन न था कि इस पर से गुज़रे बेग़ैर कोई आप तक पहुंच सकता। अल्लाह तआला इस वफ़ा और फ़िदाइय्यत पर उम्मते मुहम्मदिया को यह इन्आम देंगे कि जिस तरह इस उम्मत के शुरू के लोगों ने अपने पैग़ंबर के साथ मिल कर "यहूदे मदीना" के ख़ातमे का कारनामा अंजाम दिया, इसी तरह इस उम्मत के आख़िरी लोग "यहूदे आलम" के कुल्ली ख़ातमे के लिये भी दोबारा बहैसियत उम्मती आए हुए पिछले पैग़म्बर सय्यदना हज़रत ईसा अलै0 के साथी बन कर साबिक़ीन की याद ताज़ा करेंगे।

दूसरी वजह यह कि दज्जाल को ग़ैर मामूली साइन्सी ताक़तें हासिल होंगी। मग़रिब की तजुर्बागाहों में मसरूफ़कार तमाम दुनिया के ज़ेहन तरीन दिमाग़ जो कुछ ईजाद कर रहे हैं, यह दरअसल दज्जाल के ज़ुहूर के लिये मैदान हमवार कर रहे हैं। यह अपनी सारी टेक्नॉलोजी उसके दामन में ऐसे ही डाल देंगे जैसे कि अह्ले हक़ में से ख़ुशनसीब लोग हज़रत मेहदी का ज़ुहूर और हज़रत ईसा अलै0 का नुज़ूल होने पर अपना सब कुछ उनके पलड़े में डाल देंगे। अमरीका और दुनिया भर से खींच कर अमरीका आए हुए ज़ेहन ज़हीन दिमाग़ों की ईजादात कहां तक जा पहुंचेगी? इसका अंदाज़ा हुज़ूर पाक सल्ल0 की उन अहादीस से लगाया जा सकता है जिस में साइंस के बल बूते पर दज्जाल की ग़ैर मामूली "शोबदा बाज़ियां"

बयान की गई हैं। एक ताज़ा तरीन ईजाद सुन लीजिये। "बरमूदा ट्राई एंगल" नामी मक़्नातीस तिकौन में जो लहरें कारफ़रमा हैं, उन्हें महफ़ूज़ कर लिया गया है। इनको अगर किसी इंसान, जहाज़ या किसी भी देवहैकल चीज़ पर डाला जाए तो वह वैसे ही ग़ायब हो जाएगी जैसे बरमूदा के तिकौन में सालिम हवाई और बहरी जहाज़ ग़ायब हो जाते हैं। यह चीज़ हासिल होने के बाद महफ़ूज़ हो चुकी है। अन्क़रीब जब हालात की भट्टी में जंग की आग मज़ीद गर्म होगी तो इस ईजाद का इस्तिमाल माद्दापरस्तों की आंखों को ख़ीरा कर डालेगा और वह अर्ज़ी खुदाओं की झूटी खुदाई के पहले से ज़्यादा क़ायल हो जाएंगे जबकि खुदा मस्त मलंगों को उसकी वैसी ही मरवाना होगी जैसा कि साबिक़ा हदीस में बयान हुआ है और जैसा के आज दुनिया अपनी आंखों से देख रही है। दज्जाले आज़म को हासिल इस तरह की ग़ैर मामूली साइंसी कुव्वतों के मुक़ाबले के लिये ही हज़रत ईसा अलै0 को ग़ैर मामूली मोजिज़ाना कुव्वतें दी गई हैं।

जब हज़रत मेहदी की यूरपी ईसाइयों से जंग होगी, इसमें हज़रत के साथ बारह हज़ार के क़रीब मुजाहिद होंगे:

"बारह हज़ार की तादाद को कमी की बिना पर शिकस्त नहीं दी जा सकती।" (हदीस शरीफ़)

दूसरी तरफ़ मुत्तहिदा यूरपी फ़ौज में नौ लाख सात हज़ार का टिड्डी दल होगा। बारह झण्डे होंगे और हर झण्डे के नीचे अस्सी हज़ार सूरमा होंगे (12×80,000=9,60,000)। यह लोग यूरप के दरवाज़ा कुस्तुनतुनिया (इस्तन्बूल जो एशिया व यूरप के संगम पर है) से गुज़र कर शाम की सरज़मीन पर आए हुए होंगे। गोया ज़ाहिर में दोनों फ़रीक़ों में कोई जोड़ ही न होगा। इस पर "यूरपियन कोलेशन" हज़रत मेहदी और उनके रुफ़क़ा पर रहम खाकर एक पेशकश करेगी। एक आसान गुतालबा रखेगी कि यह पूरा कर दो, हम वापस चले जाते हैं। तुम सिर्फ़ इतना करो: "तुमने हमारे जो आदमी क़ैद

किये थे और वे हमारा मज़हब छोड़कर तुम्हारा मज़हब अपना चुके हैं, अब तुम्हारे साथ मिलकर हम से लड़ने के लिये आये हैं, तुम हमारे और उनके दरमियान से हट जाओ हम सिर्फ़ उनसे लड़ने के लिये आए हैं। तुम से हमें कोई सरोकार नहीं।"

आपने ग़ौर फ़रमायाः चंद गोरी चमड़ी वाले यूरपी जंगी क़ैदी मुसलमानों का हुस्ने सुलूक देखकर मुसलमान हो चुके हैं। वह आबाई मुसलमान नहीं, नो मुस्लिम हैं और हज़रत मूसा अलै0 के ज़माने के जादूगरों की तरह इनका ईमान इतना कामिल हो चुका है कि बारह हज़ार के लशकर के साथ शामिल होकर साढ़े नौ लाख से टकराने के लिये तैयार हैं। इन चंद नो मुस्लिम अफ़राद की हवालगी पर दुनिया की तरक़्क़ी याफ़ता तरीन मुत्तहिदा कुव्वतों का लशकर वापस जाने पर तैयार है और चंद हज़ार टूटे फूटे मुजाहिदीन की जांबख़्शी इससे मशरूत है जिन्हें मौत सामने नज़र आ रही है.....लेकिन इन चंद कामिलुल ईमान जिहादियों का जवाब सुनियेः

"अल्लाह की क़सम! ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता। वह इस्लाम क़बूल करके हमारे भाई बन चुके हैं। हम उन्हें किसी सूरत में अकेला नहीं छोड़ेंगे।"

अल्लाहु अकबर! बताइये यह जुरअत इस वक़्त रूए ज़मीन पर मौजूद किस तबक़े में है? कौन है जो एक सुपर पावर नहीं, तमाम सुपर पावर्ज़, नॉन पार्टनर्ज़ को टका सा जवाब दे सकते हैं कि मुल्क जाता है तो जाए, हुकूमत छिनती है तो सौ बार छिने, हम किसी मुसलमान को कुफ़्फ़ार के हवाले करने की बेग़ैरती कभी नहीं कर सकते। ये और होंगे जो चंद डालरों के इवज़ अह्ले बैत को बेचते हैं और फिर मां की गाली खाते हैं।

बताइये! पहचान में कोई मुश्किल रह गई है? कोई समझ कर भी न समझे तो उसकी मर्ज़ी.....वरना कोई हिजाब, कोई रुकावट, कोई हाइल नहीं।

"जब तुम देखो कि खुरासान की जानिब से सियाह झण्डे निकल आए तो उस लशकर में शामिल हो जाओ, चाहे तुम्हें इसके लिये बर्फ़ पर घिसट कर (क्रालिंग करके) क्यों न जाना पड़े, कि इस लशकर में अल्लाह के आख़िरी ख़लीफ़ा मेहदी होंगे।"

यहां पहुंच कर पहला सवाल काफ़ी हद तक हल हो चुका है। ग़ाइबाना तआरुफ़ से हाज़िराना तआरुफ़ तक मसला काफ़ी सनसनीख़ेज़ होता है। इसमें बहुत लोग या तो निहायत जल्दी करते हैं और झूटे मुद्दइय्यों को सच्चा समझने लगते हैं (एक झूटे मुद्दई शहबाज़ काज़िब की हाल ही में गिरिफ़्तारी के बाद फ़ैसलाबाद सैन्ट्रल जेल में उसके चेलों ने उसकी पेशगोइयां झूटी साबित होने पर ठुकाई लगाई है) और कुछ लोग उसके निहायत दूर दराज़ और तवीलुल मीआद होने के क़ाइल हैं। दरअसल सही तअय्युन तो मुम्किन ही नहीं, न इस मसले की न इस जैसे दीगर मसाइल की, लेकिन मुकम्मल इब्हाम भी क़ाबिले क़द्र रोश नहीं। हत्मी अंजाम और हत्मी तअय्युन के दरमियान का रास्ता मुहतात और महफ़ूज़ रवय्या है। हदीस शरीफ़ में एक और जुम्ले की कुछ वज़ाहत के बाद हम आगे चलेंगे। फ़रमाने नबवी है: "नुज़ूले ईसा तक इस ज़मीन में एक जमाअत हक़ के लिये बरसरे पैकार रहेगी जो अपने मुख़ालिफ़ीन की परवा न करेगी।"

इसमें जमाअते हक़ की दो मख़सूस सिफ़ात बयान की गई हैं: (1) जिहाद और मुसलसल जिहाद। (2) मुख़ालिफ़ीन की परवा न करना। आज कौनसी सरज़मीन है जहां जिहाद नामी फ़रीज़ा मिट जाने के बाद ज़िंदा हुआ और मुसलसल ज़िंदा है। दुनिया में जिहाद की कोई क़िस्म न होगी जो यहां न लड़ी गई हो। मुन्किरीन, मुलहिदीन, बाग़ीन, मुरतदद्दीन और अब मुत्तहिदा काफ़िरीन के ख़िलाफ़, ग़र्ज़कि हर नौअ़ का जिहाद यहां हुआ और हो रहा है। मुख़ालिफ़ीन की परवा न करना (क़रारी दा, शी नश्ताः सब ठीक है।

किसी क़िस्म का कोई मस्ला नहीं। पुश्तो का एक जुम्ला तालिबान अक्सर इस्तिमाल करते हैं) किसका मख़सूस मिज़ाज है? न्यूज़ वीक की ताज़ा रिपोर्ट है:

"तालिबान जिस क़िस्म की RESILIENCE और FEROCITY का मुज़ाहिरा कर रहे हैं, इससे वाशिंगटन और नेटो तन्ज़ीम के दूसरे दारुल हुकूमतों में ख़तरे की घंटियां बजना शुरू हो गई हैं और SOUL SEARCHING का एक नया दौर जन्म ले रहा है कि एक निस्बतन RAGTAG बग़ावत ने किस तरह दुनिया की ताक़तवर तरीन अफ़वाज को अपने क़रीब तक आने से रोका हुआ है।"

सुब्हानल्लाह! एक तरफ़ एक ऐसी बिखरी हुई मुन्तशिर और टूटी फूटी बे वसाइल जमाअत है जिनका अपना मुल्क भी इसके ख़िलाफ़ है। दूसरी तरफ़ 43 ऐसे मुमालिक हैं जिन में से कोई एक भी दुनिया के किसी मुल्क को धमकी दे तो उसके औसान ख़ता हो जाएं.....लेकिन नतीजा क्या है? जो आज से सात आठ साल पहले था कि फ़ज़ाई हमलों से इब्तिदा होकर वापस फ़ज़ाई हमलों पर बात चली गई है। क़रीब आना तो दूर की बात है, ज़मीन पर आने की जुरअत करना मुश्किल हो गया है। 43 मुमालिक "एसाफ़" में शामिल मुल्कों को अच्छी तरह गिनने के बाद सामने आए हैं। माद्दी ताक़त के लिहाज़ से तो अमरीका अकेला ही काफ़ी था। किसी को घर बैठे आंखे ही दिखा दे तो उसका काम हो जाता है। फ़ोन कर दे तो कंधे के बेज ही भूल जाते हैं। इससे अकेले बन न पड़ा तो "اجمعوا امركم وشركائكم" के तहत इसने नेटो को पुकारा। 26 मुमालिक दौड़े चले आए। जबकि दुनिया फ़तह करने के लिये उनमें से दस भी काफ़ी थे.....लेकिन बात फिर भी न बनी। ग़ैर मुनज़्ज़म

और ग़ैर तरबियत याफ़्ता जंगजू फिर भी भारी पड़ने लगे तो नान नेटो मुमालिक को मिला लिया गया। दस मज़ीद पार्टनर्ज़ के आने से बात 36 तक जा पहुंची। अब तो ज़मीन के अलावा किसी और सय्यारे को रौंदना भी मुम्किन था.....लेकिन मालूम हुआ कि अफ़ग़ानिस्तान क़ौम जब से मुसलमान हुई, चीज़ें दीगरास्त। चुनांचे सात के क़रीब नान नेटो और नान पार्टनर्ज़ भी आ पहुंचे। उनमें "बी मैन्डकी को भी जुकाम हुआ" के मिस्दाक़ सिंगापूर जैसे नाग के झपट्टे भी शामिल हैं और न्यूज़ीलैंड जैसे दूर दराज़ वाके भगोड़े गोरे जिनका तालिबान से कोई सरोकार नहीं, भी मौजूद हैं। इन 43 मुमालिक के बाद खुद अपना मुल्क अफ़ग़ानिस्तान भी ख़िलाफ़ है। हज़रत तालूत के क़लील लशकर का जालूत के मुत्तहिद लशकर से मुक़ाबले के बाद, बदर और अहज़ाब के बाद, अय्यूबी की सलीबी जंगों के बाद, इंसानी तारीख़ में किसी ने ऐसा मंज़र देखा होगा कि एक तरफ़ तो 44 मुमालिक और दूसरी तरफ़ कोई मुल्क नहीं, फ़ौज नहीं, मुनज़्ज़म ताक़त नहीं, बिखरी हुई "लाहूत लामकान" में रहने वाली जमाअत जिस का कोई फ़र्द सरे आम अपनी शिनाख़्त भी नहीं करवा सकता.....लेकिन उसकी खुद एतिमादी का हाल यह है कि पूरी दुनिया की ख़ौफ़नाक तरीन अस्करी ताक़तों की उसे ज़र्रा बराबर परवाह नहीं। "दम मस्त क़लंदर" का नारा लगाते तो बहुत से लोग हैं लेकिन निभाया उसे किसी किसी ने ही है।

कामयाबी का राज़

दूसरा सवालः हज़रत मेहदी की जद्दो जेहद क्या होगी और किस तरह होगी?

हज़रत मेहदी के मुतअल्लिक़ दूसरा अहम सवाल यह है कि ज़ुहूर के बाद उनकी जद्दो जहद की नौइयत क्या होगी और जो कुछ वह करेंगे वह उनके लिये क्योंकर मुम्किन होगा? बैअ़ते जिहाद के बाद क़यामे ख़िलाफ़त तक उन्हें दुनिया भर की तरक़्क़ी याफ़ता तरीन ताक़तों से जिस क़यामत ख़ेज़ मअरका आराई का सामना होगा, उसकी गर्मी से वह क्योंकर सुरख़ुरू होकर निकलेंगे? जबकि आज की दुनिया में सियासी, फ़िक्री, मआशी, अस्करी ग़र्ज़ हर सतह पर तागूती ताक़तें नाक़ाबिले शिकस्त तौर पर ग़ालिब नज़र आ रही हैं। ज़मीन पर और समंदरों में उनकी हुक्मरानी है। फ़िज़ा और ख़ला में उनही बरतरी का शोर है। बज़ाहिर ऐसी कोई सूरत मुस्तक़बिले क़रीब में दूर दूर तक नज़र नहीं आती कि मुसलमान इस ग़ल्बे के तिलस्म को तोड़ सकेंगे? एक एक मल्टी नैशनल कम्पनी का बजट कई मुस्लिम मुल्कों से ज़्यादा है। एक एक थिन्क टैंक ऐसा है कि अकेला ही मग़रिब को सौ साल की मंसूबाबंदी करके दे रहा है। इत्तिहाद भी उनमें ऐसा है कि अमरीका और रूस आपस में रिवायती दुश्मनी और

बोअ़दल मुश्रिकीन का अमली मिस्दाक़ होते हुए भी पाकिस्तान की मुख़ालिफ़त में बेग़ैर किसी की तरग़ीब के ख़ुद बख़ुद इकट्टठे हो जाते हैं। फिर दूसरों का तो कहना ही क्या, उनका इत्तिहाद तो वजूद में ही "दहशतगर्दी" के ख़ातमे और "आलमी हुकूमत" के क़्याम के लिये आया है। दुनिया भर की मेआरी तरीन यूनिवर्सिटियां मग़रिब में हैं। अमरीका में 5758 यूनिवर्सिटियां हैं। जबकि पूरी मुस्लिम दुनिया के 57 मुल्कों में यूनिवर्सिटियों की मज्मूई तादाद सिर्फ़ 500 है और पूरे आलमे इस्लाम में एक भी यूनिवर्सिटी ऐसी नहीं जिसे दुनिया की टॉप 500 यूनिवर्सिटियों में शुमार किया जा सकता हो। मग़रिबी हुकूमतें पूरी मुस्लिम दुनिया के ज़ेहन तरीन दिमाग़ों और आला तरीन हुनरमंदों को पुरकशिश मुराअत के इवज़ खींच कर अपने तिलस्म में जकड़ लेती हैं और फिर वह हमेशा वहीं का होकर रह जाता है। मुसलमानों के हाथ फ़क़त नाअहल, मफ़ाद परस्त और हुब्बुल वतनी से आरी कचरा माल ही मौजूदा ब्यूरो क्रैसी की शक्ल में बाक़ी रह जाता है। मुसलमानों में नज़्म व ज़ब्त, तालीम व तरबियत, आला अख़लाक़ियात, बुलंद नज़री, इज्तिमाइय्यत, सब्र व तक़्वा.....ग़र्ज़ यह कि हर वह चीज़ जो किसी इंसानी गिरोह को क़ौम और फ़तहगर को फ़ातेह बनाती है, हर उस चीज़ की एक एक करके कमी पाई जाती है। मुसलमानों की ज़िहानत का लोहा तो आज भी दुनिया मानती है मगर यही ज़िहानत और बेमिसाल सलाहियत मग़रिब के आंगन में रौशनी फैलाने के अलावा किसी काम आके नहीं दे रही??? जूं जूं वक़्त आगे बढ़ रहा है, हर सुब्ह मग़रिब की किसी नई अनोखी तरक़्क़ी की नवीद और हर शाम मुसलमानों की मज़ीद बदहाली की ख़बरें ला रही है। इस सूरते हाल में क्या हम यह तसलीम कर लें कि हज़रत मेहदी किसी "मावराउल फ़ित्रत" कुव्वत के मालिक होंगे कि इन तमाम माद्दी कुव्वतों को तबई क़वानीन से हट कर शिकस्त देना उनके लिये मुम्किन होगा? क्या महज़ ख़िलाफ़ आदत ज़ाहिर होने

वाली करामात से वह उन तमाम साइंसी ईजादात को पामाल कर डालेंगे जिनकी मिसाल इंसानी तारीख़ में नहीं मिल रही.....या उसमें उनकी और उनके साथियों की फ़िक्री, अमली और अस्करी जद्दो जेहद का अमल दख़ल भी होगा? और अगर होगा तो अचानक यह काया कैसे पलट जायेगी कि मग़रिब के हक़ में रुख़ करके चलने वाली हवाएं मश्रिक़ के मज़लूमों के लिये दादरसी की नवीद बन जायेगी???

इस सवाल का जवाब यह है कि दुनियाए कुफ़्र के इस फ़ित्नाख़ेज़ ग़ल्बे का तोड़ हज़रत मेहदी की बेलोस और अह्ले क़्यादत, और मुसलमानों की बिखरी हुई सलाहियत और मुंतशिर जद्दो जेहद दोनों मिल कर करेंगी। इसमें शक नहीं कि हज़रत मेहदी के हाथ पर अल्लाह तआला मुहैयरूल उकूल करामात को भी ज़ाहिर फ़रमायेगा लेकिन उनकी जो सबसे बड़ी करामत होगी वह यह कि जब वह अपने साथियों को गुनाहों से सच्ची तौबा करवा कर मिटी हुई सुन्नतों को ज़िंदा करेंगे तो इसकी बरकत से उनके तमाम साथियों को यक्सूई और यक फ़िक्री नसीब हो जायेगी। इन सब की सोच एक, फ़िक्र ही नहीं, अंदाज़े फ़िक्र भी एक और तर्ज़े अमल भी एक होगा। उनके दिल से हसद व बुग्ज़, कीना व इनाद निकल जायेगी। वे बाहमी इख़्तिलाफ़ात और अमीर की नाफ़रमानी की नुहूसत से आज़ाद हो जाएंगे। वे जीने मरने में हज़रत मेहदी की कामिल इताअत करेंगे और मौत को सामने देखकर भी मुंह नहीं मोड़ेंगे। मौत से मुराद तबई मौत ही नहीं होती, तबीअत की मौत भी होती है। यानी बहुत से लोग क़ुर्बानियां दे रहे हैं। मौत को खुशी खुशी गले लगा रहे हैं लेकिन बात जब नफ़्स की मौत की आती है तो वह उस पर वैसा ग़ल्बा नहीं पा सकते जैसा कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 ने हज़रत उमर रज़ि0 की इताअत करते हुए इस नबवी तरबियत का मिसाली मुज़ाहिरा किया था। हज़रत मेहदी की

बेनफ़्सी और इज्तिमाई मक़्सद के हुसूल की लगन और इस लगन में फ़नाइय्यत इस क़दर वाज़ेह होगी कि तमाम रूए अर्ज़ के सालेह मुसलमान अपने आप को मिटा कर अपना सब कुछ बनाके सौंप देंगे और उन पर वैसा एतिमाद करेंगे जैसा कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर उस दौर के मुसलमानों ने किया था। तारीख़ के तलबा पर यह बात मख़्फ़ी नहीं होनी चाहिये कि पूरे यूरप की मुत्तहिद सलीबी अफ़्वाज के मुक़ाबले में सुलतान की अपनी फ़ौज (मिस्र व शाम की फ़ौज) कुछ इतनी ज़्यादा न थी, अलबत्ता मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से आए हुए मुजाहिद क़बाइल जब उनको देखते कि वे मैदाने जंग में घोड़े पर सवार एक जानिब से दूसरी जानिब तक यूं चक्कर लगा रहे हैं जैसे इक्लौते बच्चे की मां उसकी तलाश में बोलाई बोलाई फिरती है। आंखों में आंसू हैं और ज़ुबान पर एक ही नारा है: "يـــــــــــا" "!يا للاسلام، يا للاسلام ऐ मुसलमानों! इस्लाम की मदद करो। ऐ मुसलमानों! इस्लाम की ख़बर लो।" तो यह क़बाइल जो अपनी असबियत, सरकशी और इंफ़िरादी मिज़ाज में मशहूर थे, सब कुछ छोड़ छाड़ कर सुलतान के साथ जीने मरने का अहद कर लेते थे और तारीख़ गवाह है कि सुलतान के पास ख़र्च न होता तो अपने ख़र्च पर, अपने अस्लहे से, जी जान से मैदान में डटे रहते थे और सुलतान का साथ छोड़ कर जाने का कुफ़्र व इर्तिदाद से ज़्यादा सख़्त आर वाली बात समझते थे। उनको यक़ीन था कि अगर शिकस्त हुई तो सुलतान उनको छोड़ कर भागेगा नहीं और अगर फ़तह हुई तो उसके फ़वाइद सुलतान ख़ुद हर्गिज़ नहीं समेटेगा बल्कि यह सारे समरात व नताइज इस्लाम की झोली में जायेंगे। कोई क़्यादत अपने कारकुनों को यह यक़ीन दिल दे तो ख़ुदा की क़सम! काया पलटने में इतने ही दिन लगेंगे जितने क़ाइद को अपनी बेनफ़्सी और इस्लाम के लिये फ़िदाइय्यत व वफ़ाइय्यत साबित करने में लगते हैं।

हज़रत मेहदी की कामयाबी का राज़ यही होगा कि वह बैअत से

पहले ही क़्यादत की इस मुमताज़ सिफ़त को साबित कर देंगे (इसकी तफ़सील पहले गुज़री है) तब दुनिया भर में बिखरे हुए क़ाबिल व लायक़ उलमा, तलबा (या तालिबान), मुजाहिदीन, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफ़ेसर, साइंसदान, सरमायादार, इन्तिज़ाम के माहिर, अस्करियत से वाक़िफ़.....ग़र्ज़ यह कि महारतों के हामिल अफ़राद अपना सब कुछ इस्लाम की ख़ातिर उनके क़दमों में ला डालेंगे और दिल से उनकी कामिल इताअत करते हुए अपने आप की, अपनी अना की, अपनी ख़्वाहिशात और मिज़ाजों की इन्फ़िरादियत की मुकम्मल नफ़ी कर डालेंगे। यह वह यादगार मंज़र और वह मुबारक रूहानी कैफ़ियत होगी जो बदर से पहले सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम से मशवरे के दौरान आसमान ने देखी थी, जिस ने "हतीन" के मअरके से क़ब्ल अय्यूबी की आंखें ठन्डी की थीं और जिसे नाटो और नान नैटो मुमालिक का इत्तिहाद आज आंखों से देख रहा है और जिसे दुनिया एक बार फिर बिलआख़िर आख़िर मअरके से क़ब्ल देखेगी और जब देखेगी तो सारे स्टाइल और हीरोशिप, सारी चौकड़ियां, उड़न खटोलियां, सारी परवाज़े भूल जाएगी।

"अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तानी क़बाइली इलाक़ों में लड़ाई के शर्ते इख़्तियार करने के बाद आलमी तज्ज़िया निगारों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ जंग का आठ साल गुज़रने के बाद अब यह वाज़ेह हो रहा है कि जंग दरअसल इत्तिहादी नहीं बल्कि अलक़ाइदा और तालिबान जीत रहे हैं। इसी तनाज़ुर में यूरप के कई आला उहदेदारों ने अलक़ाइदा के साथ अमन मुआहिदों के लिये राह हमवार करना शुरू कर दी है। नार्वे के दारुल हुकूमत उसूलो से शाए होने वाले मक़ामी अख़बार "डाक्स उवैसन" ने लिखा है कि नार्वे शायद अब मुस्लिम गुरूपों से अपने तअल्लुक़ात बेहतर बनाने की पॉलिसी पर अमल कर रहा है। अख़बार का मज़ीद कहना है कि जब नाइब वज़ीरे ख़ारजा से इस बारे में पूछा गया कि क्या वह

दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ जंग से पीछे हट रहे हैं? तो उनका कहना था कि दरअसल दोस्तों के साथ तो अमन और मुज़ाकिरात चलते ही रहते हैं मगर हक़ीक़ी अमन के लिये उन लोगों के साथ भी अमन मुज़ाकिरात होने चाहियें जिन्हें आप अपना दुश्मन क़रार देते हैं। नाइब वज़ीरे ख़ारजा राए मौनडेव हानसन का कहना था कि वह इस मामले में तन्हा नहीं हैं बल्कि दीगर यूरपी मुमालिक भी यह ख़्वाहिश रखते हैं। वाज़ेह रहे कि इससे कुछ ही क़ब्ल स्वीटज़रलैंड भी इस ख़्वाहिश का इज़हार कर चुका है कि वह अलक़ाइदा और उसामा बिन लादिन से मुज़ाकिरात और अमन मुआहिदा करना चाहता है और इस सिलसिले में किसी भी इब्तिदाई इक़्दामात के लिये बिल्कुल तैयार है। वह नहीं चाहता कि अमरीका की वापसी के बाद इन्तिक़ामी कारवाइयों का निशाना बने।''

तीन खुशनसीब तबक़े

चंद साल क़ब्ल बन्दा एक मज्लिस में कुछ नौजवानें से गुफ़्तगू कर रहा था। बात आलमें इस्लाम के हालात और मुसलमानों का दरपेश हमाजेहत मअरका आराई के हवाले से उनके किर्दार की तरफ़ मुड़ गई। एक साहब ला तअल्लुक़ से बैठे थे। नौजवान मायूसी की बातें करते, इम्कानियत के फ़ुक़्दान का शिक्वा करते और मैं उन्हें हौसला दिलाता कि सफ़र एक हज़ार मील का हो तो फिर भी शुरू एक क़दम से ही होता है। इतने में इन बड़े साहब से न रहा गया। बन्दा से मुख़ातिब होकर बोलेः

"मौलाना साहब! आप बच्चों को वैसे ही बरग़ला रहे हैं। सीधे साधे मान क्यों नहीं लेते कि आप सूरए फ़ील पढ़ कर फूंकने से मैदान नहीं मार सकते। मग़रिब बहुत आगे जा चुका है। आप के तसव्वुर से भी बहुत आगे।"

"आप मग़रिब को जितना आगे देख रहे हैं, हम उसको इससे भी बहुत आगे देख रहे हैं। मौजूदा ज़माने के मालूमाती इंसानों के तसव्वुर भी आगे, काफ़ी आगे जाते हुए देख रहे हैं। जब तक मग़रिब की मस्नूई ताक़त, फ़ितरी क़ुव्वतों से आगे (बज़ाहिर न हक़ीक़त में) न जाएगी, आख़िरी मअरका ही बरपा न होगा। और आख़िरी मअरका को सूरए फ़ील वाले ही जीतेंगे बशर्तिया कि उनको सूरए

कहफ़ भी याद हो।"

मुहतरम मौसूफ़ तो हक्का बक्का होकर बंदा की शक्ल देखने लगे कि यह कैसा झरलो घुमाओ क़िस्म का आदमी है? बात को कहां से कहां फेर देता है? उनको तो कुछ न सूझी अलबत्ता जिन नौजवानों से गुफ़्तगू चल रही थी, उनमें से एक बोलाः

"जनाब शाह साहब! लगता तो यही है अगर हज़रत मेहदी भी आ जाएं तो उनको हालात सुधारने में बहुत अर्सा लगेगा।"

"न मेरे अज़ीज़ ना! चंद साल भी न लगेंगे। इसलिये कि मग़रिब की चकाचौंध जो आप को नज़र आ रही है, उसमें मुसलमानों का खून पसीना शामिल है तो यह चिराग़ जल रहे हैं। अब मग़रिब अपनी इस कामयाबी के पीछे मुस्लिम दुनिया के क़ाबिल तरीन दिमाग़ों और मेहनती तरीन बा कमाल हुनरमंदों की मौजूदगी का एतिराफ़ करे या न करे बल्कि उनकी मेहनत पर भी अपनी ट्रेडमार्क लगा ले.....लेकिन एक दुनिया जानती है कि मुसलमान अपनी क़्यादत की तरफ़ से हौसला अफ़ज़ाई और एतिराफ़ व तहसीन न होने की वजह से मग़रिब की चांद गाड़ी का अपनी सलाहियतों से ईंधन दे रहे हैं। गोरों में इतने जीन्स नहीं पैदा होते जितनें हम में.....हमसे मुराद आलमे इस्लाम और बिलख़ुसूस पाकिस्तान है.....पैदा होते हैं। जब इज्तिमाइय्यत की पुरख़ुलूस आवाज़ लगेगी और क़्यादत का बेलोसपन सामने आएगा तो यह सब दौड़े दौड़े आएंगे तब आप गर्मिये बाज़ार देखियेगा।"

"लेकिन आप तो एक मज़मून में कह रहे थे कि दुनिया में इस वक़्त मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़नून में ख़ुसूसन जीनयाती और अस्करी साइंस में यहूदियों का बहुत बड़ा हिस्सा है। उनके नोबल इन्आम याफ़ता साइंसदानों की खेप है जो उनको दज्जाल की क़्यादत में दुनिया पर ग़ल्बा दिलाने और मौत पर भी क़ाबू पाने के लिये काम कर रही है।"

"यह बात आप ने खूब उठाई है। दुनिया की तारीख़ को यक्सर तबदील कर देने वाली हर ईजाद के पीछे यहूदी हैं। मसलनः माइक्रो प्रोसेसिंग चिप" के पीछे स्टेनले। न्यूक्लियर चीन रिएक्टर के पीछे लियो। ऑपटिकल फाइबर कैबल के पीछे पीटर। ट्रेफ़िक लाइट के पीछे चारलीस एडलर। स्टैन्लैस स्टील के पीछे बैनौस्टर्स। वीडयो टेप के पीछे चार्ल्स किन्सरबर्ग .....यहूद ने माइन्ड कंट्रोल टेक्नोलोजी हासिल की है जिस से वह इंसानी ज़ेहनों को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक फ़ेरने की सलाहियत किसी क़दर हासिल कर चुके हैं। यह दज्जाल का सबसे बड़ा हथियार होगा। इसका नाम ऐम के अल्ट्रा है। सी आई ए जैसे इदारे के डायरेक्टर सीलन फ़ील्ड ने 1977 में सरे आम तसलीम किया था कि लाखों डालर्ज़ जादू टोने, नफ़सियात और रूहानियात के मुतालआ पर ख़र्च किये गये हैं। मौसीक़ी की धुनों में "बेक ट्रेकिंग" के ज़रीये बेहूदा शैतानी पैग़ामात (मसलनः Kil your Mum) रीवर्स ट्रेक में छिपा कर पूरी दुनिया में नश्र किये जा रहे हैं। 1940 ई0 में एक अमरीकी यहूदी साइंसदान निकोला टीसलाने" "मौत की शुआएं" (Deat hray) ईजाद करने का ऐलान किया। 1987 ई0 से यहूदी साइंसदानों की सरबराही में ज़मीन की क़ुदरती गर्दिश को मुतअस्सिर करके "ज़मीन की नब्ज़" से छेड़छाड़ की कोशिशें शुरू हैं हत्ताकि ज़मीन का मक़्नातीसी मैदान ख़त्म हो जाएगा और उसकी गर्दिश थम कर हदीस शरीफ़ में बयानकर्दा ज़ुहूरे दज्जाल की अलामात के मुताबिक़ सुस्त हो जाएगी। एक दिन एक साल के बराबर, फिर एक दिन एक माह के बराबर, फिर एक दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा। ऑक्सफ़ार्ड की प्रोफ़ेसर सूस गिरीन फ़िल्ड ने कहा है कि इंसानी दिमाग़ की पूरी मैमोरी कम्प्यूटर में फ़ीड करना मुम्किन हो चुका है। इस प्रोफ़ेसर साहिबा ने अगले मरहले का इन्किशाफ़ नहीं किया। वह हम फ़क़ीर किये देते हैं। अगला अमल इसका अक्स होगा यानी किसी कम्प्यूटर की मैमूरी

किसी इंसानी ज़ेहन में आप लोड कर दी जाएगी ताकि सुपरमैन (अद्दज्जालुल आज़म) का रास्ता हमवार हो जाए जो क़तई तौर पर ग़ैर फ़ानी लगेगा। यहूदी साइंसदानों ने इंसानी जीनयाती कोड पढ़ लिया है। तीन अरब हुरूफ़ का इम्तिज़ाज है। मज़कूरा कामयाबी को इंसानी तारीख़ की सबसे बड़ी कामयाबी क़रार दिया गया है। यह सब मुहैयरूल उक़ूल क़िस्म की ईजादात अपनी जगह.....लेकिन जब हज़रत मेहदी आएंगे तो सालेह और क़ाबिल मुसलमानों के अलावा (लगता है) दो क़िस्म के तब्क़े उनके साथ शामिल हो जाएंगे।

1) एक तो वह यहूदी जो आजकल की मुतअस्सिब सियासी यहूदियत यानी सेहवनियत से बेज़ार हैं। (सेहवनियत से मुराद सियासी इस्राईलियत है। इसलिये सहीवनी हर वह शख़्स है जो इस्राईल का हामी हो, चाहे वह ग़ैर यहूदी हो या ग़ैर इस्राईली) उनके ख़्याल में जब "मसीहा" की क़्यादत में यहूदी रियासत का क़्याम और यहूदियत का आलमी ग़ल्बा होगा, वही यहूद को तारीख़ी ज़िल्लत से नजात दिलायेगा, तो इस्राईल के क़्याम के लिये लाखों फ़िलस्तीनियों का घर से बेघर करने और उसके इस्तिहकाम के लिये हज़ारों को क़त्ल करने और करते रहने की ज़रूरत ही क्या है? क्यों न हम मसीहा का काम उसके ज़िम्मे छोड़ दें और इस मक़्सद के लिये अपने यहूदियों को न मरवायें जो वह मसीहा की आमद से पहले हासिल कर ही नहीं सकते। यह मोअ़तदिल फ़िर्क़ा "हसीदी" कहलाता है। यह इसका क़दीम नाम है। इनका जदीद नाम "हैरेडी" है। यह इंतिहाई क़दीम मज़हबी यहूदी हैं जिनके असल मराकिज़ न्यूयार्क और लंदन हैं। उनको यक़ीन है कि सहीवनी तहरीक ने जो इस्राईल क़ायम किया है वह दरहक़ीक़त "नफ़रत की रियासत" का वह क़िल्ला है जिस में तौरात की पेशगोई के मुताबिक़ यहूदी आख़िरी ज़माने (एन्ड ऑफ़ टाइम) में आकर इकट्ठे होंगे और अल्लाह के ग़ज़ब व इन्तिक़ाम का शिकार होकर नाबूद हो जाएंगे।

रबाई हर्श उनका मशहूर मज़हबी रहनुमा है। अरफ़ात की फ़लस्तीनी अथारिटी में यहूदी मुआमलात का तो वज़ीर रखा गया था वह इसी तब्के से तअल्लुक़ रखता था। मशहूर फ़लसफ़ी और माहिरे लिसानियत नौम चौमस्की, अगरचे इस फ़िर्के से नहीं लेकिन वह उसके नज़रिये को तसलीम करते हैं। वे भी "ग़ैर सहीवनी" यहूदी हैं। यानी वह मज़हबी तौर पर इस बात के क़ाइल नहीं लेकिन ग़ैर मज़हबी सियासी तौर पर इस नुक्तए नज़र को तसलीम करते हैं। बरतानिया में मुख़्तलिफ़ मवाक़े पर इस फ़िर्के के लोग फ़िलस्तीनियों पर इस्राईली मज़ालिम के ख़िलाफ़ अपना रद्दे अमल रिकार्ड करवाते रहे हैं। हज़रत मेहदी जब ज़ाहिर होंगे और यहूदियों के गुमकर्दा मुक़द्दस आसारे क़दीमा यानी ताबूते सकीना, असाए मूसवी, अलवाहे तौरात के टुक्ड़े, माइदए बनी इस्राईल, मन्न व सलवा के मख़सूस बर्तन, तख़्ते दाऊदी (यह गुमशुदा नहीं, मुल्के बरतानिया की कुर्सी में नस्ब है। तफ़सील के लिये देखियेः बंदा की किताब "अक़्सा के आंसू") को बरआमद कर लेंगे तो यह मोअ़तदिल मिज़ाज यहूदी अपनी इंसा पसंदी की बिना पर हज़रत पर ईमान ले आयेंगे। इनको यक़ीन हो जाएगा कि हमारे बड़ों ने अपने गुनाहों और बदआमालियों की नहूसत से जिस चीज़ को गुम किया, उसको दरयाफ़्त करने वाला ही आख़िरी मसीहा (हज़रत मुहम्मद सल्ल0) का पैरूकार और सच्चे मसीह (हज़रत ईसा अलै0) का साथी है। ताबूते सकीना को देखकर चंद यहूदियों के ईमान लाने का ज़िक्र हदीस शरीफ़ में है अलबत्ता उनकी इस मज़कूरा बाला फ़िर्के पर तत्बीक़ बंदा की ख़्याली काविश है। यह यहूदी अपने साथी तो सरमाया और टेक्नोलोजी लेकर मुसलमानों से आ मिलेंगे, इससे मुसलमनों की माद्दी ताक़त भी "किसी हद तक" बेहतर हो जाएगी।

चंद साल की बात बंदा ने इसलिये की है कि हज़रत मेहदी अपने ज़ुहूर के बाद (जो चालीस साल की उम्र के लगभग होगा) सात

साल तक दुनिया की तीन बड़ी कुफ्रिया ताक़तों में से दो के ख़िलाफ़ जिहाद फ़रमायेंगे। कुफ्रिया ताक़तों और ईसाइयों के ख़िलाफ़ शानदार फ़तह हासिल करेंगे। अब पीछे सिर्फ़ यहूदी रह जाएंगे। आठवें साल दज्जाल ज़ाहिर होगा और मुसलमानों की क़िल्लत और ईसाइयों की शिकस्त से फ़ित्नए यहूद उरूज पर पहुंच जायेगा जो दरहक़ीक़त शैतानी ताक़तों का फ़ित्ना है। इसी साल हज़रत ईसा अलै0 नुज़ूल फ़रमायेंगे। नवां साल दज्जाल के क़त्ल और "शर के घर" इस्राईल के ख़ातमे के बाद मुस्तहकम तरीन आलमी इस्लामी ख़िलाफ़त के क़्याम और इस्तिहकाम का होगा। 49 साल की उम्र में हज़रत मेहदी इन्तिक़ाल कर जायेंगे। हज़रत ईसा अलै0 उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर बैतुल मुक़द्दस में उनको दफ़न फ़रमाएंगे। इसके बाद हज़रत ईसा अलै0 38 साल तक ज़मीन पर रहेंगे। इस तरह हज़रत मेहदी ज़ुहूर के बाद ज़मीन पर नौ साल रहेंगे। हज़रत ईसा अलै0 से पहले हज़रत मेहदी सात साल और वफ़ाते मेहदी के बाद हज़रत ईसा अलै0 अढ़तीस साल दुनिया में रहेंगे। बीच के दो साल दोनों क़ाइदीन इकट्ठे गुज़ारेंगे।

2) इस तफ़सील के बाद अब हम उस दूसरी क़ुव्वत का तज़किरा करने के क़ाबिल हो गए हैं जो अपनी टेक्नोलोजी और सरमाए से मुसलमानों को दरकार माद्दी ताक़त की कमी पूरी करेगी। यानी वे ख़ुशनसीब ईसाई हज़रात जो रहमदिल हैं और इंसानियत की ख़िदमत इख़्लास से करते हैं। वे हज़रत ईसा अलै0 के मुसलमानों की जिहादी जमाअत में नुज़ूल के बाद उनको भी "दहशतगर्दी का ताना" देने के बजाए उन पर ईमान ले आएंगे। उन्हें यह सआदत उनकी रिवायती रहमदिली और इंसाफ़ पसंदी के सबब मिलेगी। ये लोग यूरप और अमरीका की हैरानकुन साइंसी ताक़त में से "कुछ हिस्सा" का लफ़्ज़ जानबूझ कर इस्तिमाल किया है। यह इस वजह से कि मुसलमानों की कामयाबी की असल टेक्नोलोजी बातिन में बुग्ज़ व

हसद के ख़ातमे और ज़ाहिर में तक़्वा व जिहाद के अपनाने में है। यानी ऐसा नहीं होगा कि मुसलमान भी साइंस व टेक्नोलोजी और असकरी व मआशी वसाइल में इस हद तक पहुंच जायेंगे कि कुफ़्र के ग़ल्बे का माद्दी ताक़त के ज़रीए ख़त्म कर दें। न मेरे मुहतरम भाइयो ना! ऐसा नहीं होगा। ग़ज़वात हमेशा ग़ैर मसावी ताक़तों के दरमियान लड़े गये हैं। अल्लाह वालों और शैतानी कुव्वतों में ज़ाहिरन ज़मीन आसमान का फ़र्क़ रहा है। अगर ऐसा न हो तो हक़ और बातिल की तरक़्क़ी और फ़तह के पैमाने तो एक जैसे हो जायेंगे। अल्लाह की नुसरत और क़ुदरते कामिला का मुसलमानों के हक़ में ज़ुहूर का वक़्त फिर कब आयेगा?

अब भी वक़्त है!

कुछ बातें फ़क़ीर लोग अपनी मौज में कह देते हैं। अभी सुनने वाले यही सोच रहे होते हैं कि इसका मतलब क्या है और सौंस क्या है? कि इतने में उनकी तसदीक़ खुली आंखों सामने आ जाती है। पिछले मज़मून में बंदा के क़लम से ये जुम्ले निकल गये थे: "1987 ई0 से ज़मीन की क़ुदरती गर्दिश को मुतअस्सिर करके "ज़मीन की नब्ज़" से छेड़छाड़ की कोशिशें शुरू हैं हत्ताकि ज़मीन का मक़नातीसी मैदान ख़त्म हो जाएगा और उसकी गर्दिश थम कर हदीस शरीफ़ में बयानकर्दा ज़ुहूरे दज्जाल की अलामात के मुताबिक़ सुस्त हो जाएगी। एक दिन एक साल के बराबर, फिर एक दिन एक माह के बराबर, फिर एक दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा।"

ये जुम्ले बंदा ने किस तनाज़ुर में कहे थे? पहले इसे समझ लें तो आगे चलते हैं। हदीस शरीफ़ में आता है: "क़्यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक पहाड़ अपने मर्कज़ से हट न जायेंगे।" इस तरह हदीस शरीफ़ में है कि क़्यामत के क़रीब सूरज मग़रिब से तुलू होगा। जब यह निशानी ज़ाहिर हो जाए तो तौबा का दरवाज़ा बंद कर दिया जाएगा। इसके बाद कोई ईमान लाए या तौबा करना चाहे तो मक़्बूल न होगी। जब हम फ़ल्कियात पढ़ते पढ़ाते थे (अक्सर क़ारईन के इल्म में होगा कि जामिअतुर्रशीद में इस इल्म पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाती है। हमारे शोबा फ़ल्कियात की तहक़ीक़ात

को दुनिया के मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम के नामवर माहिरीने फ़ल्कियात क़द्र की नज़र से देखते और सौ फ़ीसद क़ाबिले एतिमाद समझते हैं) फ़ल्कियात में जब क़िब्ला रखने की बहस आती है तो आम लोग "कुतुब नुमा" को इस्तिमाल करते हैं। जबकि हमारे हां उसे क़ाबिले एतिमाद ज़रीआ नहीं समझा जाता। इसलिये कि कुतबीन के पास मौजूद मक़्नातीसी लहरों का देवहैकल ज़ख़ीरा अपना मक़ाम बदलता रहता है जिस से कुतुब नुमा की सूई मुतअस्सिर होती है। (तफ़सील के लिये देखिये: अहसनुल फ़तावा, जि0:2, स0:347) बाज़ लोग तो मुरव्वजा "क़िब्ला नुमा" इस्तिमाल करते हैं जबकि यह "कुतुब नुमा" से भी ज़्यादा मख़्दूश ज़रीआ है। इसमें दस से बारह दर्जे का नुमायां फ़र्क़ पाया जाता है। लिहाज़ा अवाम को चाहिये कि मसाजिद का क़िब्ला रखते वक़्त या जांच करवाते वक़्त मुस्तनद उलमा से राबता करें। खुद से इस फ़न के शनावर बनने का दावा न करें जिस की अब्जद से भी आम लोग वाक़िफ़ नहीं होते।

यह तो एक बात हुई दूसरी बात यह कि क़्यामत के क़रीब सूरज मग़रिब से तुलू होगा? उसकी फ़ल्कियाती तौजीह करते हुए दिमाग़ चकरा जाता था। ज़मीन तो वैसे ही "चकराती गोला" है लेकिन जब आप तलबा को इस चकराहट की तशरीह समझाना शुरू करते हैं तो थोड़ी देर के लिये दिमाग़ चक्कर खाके रह जाता है। इसकी आसान तशरीह सोचते सोचते और इस बारे में अर्ज़ियाती साइंस का मुतालआ करते करते वह बात हाथ लगी जो पिछले कालम में बरसबील तज़किरा आ गई थी और जिस की तसदीक़ इस चौंका देने वाली ख़बर से हो रही है जो इसी हफ़्ते सुर्ख़ियों के साथ पूरी दुनिया के बासियों को अपनी तरफ़ मुतवज्जोह कर रही है लेकिन अफ़सोस कि इसके पसपर्दा मक़ासिद पर कम ही लोग तवज्जोह देंगे। अब पहले एक नज़र इस ख़बर और इसमें मज़कूर इस तजरबे के मक़ासिद और मुतवक़्क़े ख़तरात पर, फिर इंशाअल्लाह वे नताइज

जिनसे हदीस शरीफ़ की पेशगोई पूरी होती नज़र आती है। यह ख़बर 11 सितम्बर 2008, बरोज़ जुमेरात मुल्क के तमाम क़ौमी अख़बारात में छपी है:

"न्यूकलियाई रिसर्च के यूरपी इदारे "सरन" के ज़ेरे एहतिमाम दुनिया में तबइय्यात का सबसे ताक़तवर तजुर्बा शुरू हो गया है जिसका मक़्सद काइनात की तख़लीक़ का राज़ जानना है। दुनिया में तबइय्यात का सबसे ताक़तवर तजुर्बा जिसके बारे में तीन दहाइयां क़ब्ल सोचा गया था [तसदीक़ मुलाहिज़ा हो। बंदा ने अपने मज़मून में 1987 ई0 लिखा था जो आज (2008 ई0) से पूरी तीन दहाइयां क़ब्ल बनती है] 27 किलोमीटर लम्बी सुरंग में ज़र्रात की पहली बीम या शुआ छोड़ दी गई है। पांच अरब पाउंड लागत से तैयार होने वाली इस मशीन में ज़र्रात को दहशतनाक ताक़त से आपस में टकराया जाएगा ताकि नई तबइय्यात में तबाही की अलामतों को आशकारा किया जा सके। इस तजरबे का बुन्यादी मक़्सद काएनात में बिग बैंग से चंद साने बाद के हालात को अज़सरे नो तख़लीक़ करना है। फ्रांस और स्वीटज़रलैंड की सरहद के नीचे खोदी गई इस बहुत बड़ी सुरंग में एक हज़ार सिलन्डर की शक्ल के मक़्नातीसों को साथ साथ रखा गया है। इन मक़्नातीसी सिलन्डरों से प्रोटॉन ज़र्रात की एक लकीर पैदा होगी जो सत्ताईस किलोमीटर तक दाएरए की शक्ल में बनाई गई सुरंग में घूमेगी। सुरंग में प्रोटॉन ज़र्रात के टकराने से दो लकीरें पैदा होंगी जिन्हें इस मशीन के अंदर रौशनी की रफ़्तार से मुख़ालिफ़ सिम्त में सफ़र कराया जाएगा, इस तरह एक सिकेण्ड में ये लकीरें ग्यारह हज़ार जिस्त मुकम्मल करेंगी। बी बी सी के मुताबिक़ साइंसदान काइनात के वजूद में आने की थियोरी "बिग बैंग" के हालात को जानने के लिये जो तजरबा कर रहे हैं, इसके हवाले से कुछ नाक़दीन ने ख़दशा ज़ाहिर किया है कि इस तजरबे के नतीजे में कहीं वह कैफ़ियत पैदा न हो जाए जिसे "ब्लैक होल"

कहते हैं। ब्लैक होल उस वक़्त ख़तरनाक होता है जब उसकी ज़िंदगी और तवानाई काफ़ी ज़्यादा हो। फिर उसमें चीज़ों को अपनी जानिब खींच सकने की सलाहियत होती है।"

ख़बर के आख़िर में साइंसदानों ने जो ख़दशात ज़ाहिर किये हैं, हक़ीक़त में बात इससे आगे की है। काएनात को तसख़ीर करने का जो मन्सूबा "यहूदी बिग बिरादर्ज़" ने बनाया है, यह तजरबा इसका हिस्सा है। इसमें जो 80 साइंसदान (बशमूल दो पाकिस्तानियों के जो ताली बजाने पर इक्तिफ़ा कर रहे थे) शरीक हैं, उनकी अक्सरियत यहूदी है। इस पर जो दस अरब डालर सरमाया ख़र्च हुआ है, वह यहूद का कमाया हुआ सूद है। ये दरअसल करना क्या चाहते हैं? ये झूटे ज़मीनी ख़ुदा (मसीह काज़िब, अद्दज्जालुल अक्बर) के ज़ुहूर से क़ब्ल ज़मीन को इतना मुसख़्ख़र कर लेना चाहते हैं कि इसकी गर्दिश, इससे पैदा होने वाले मौसम, बारिशें, हवाएं, फ़सलें, पानी, नबातात, जमादात व जंगलात.....ग़र्ज़ हर चीज़ पर उन्हें कंट्रोल हासिल हो जाए ताकि ज़मीन पर उसे ज़िंदा रहने दें जो दज्जाल को ख़ुदा माने और जो उसकी झूटी ख़ुदाई को धुतकार दे उस पर ज़मीन तंग कर दी जाए। यह दरहक़ीक़त उस इब्लीसी मिशन की तकमील है जिसके मुताबिक़ दज्जाल जिसको चाहेगा ग़िज़ा देगा, जिसको चाहेगा फ़ाक़े कराएगा। (दुनिया में ग़िज़ाई मवाद तैयार करने वाली तमाम बड़ी कम्पनियां ख़ालिस यहूदी मिलकियत हैं) जिसकी ज़मीन में चाहेगा फ़सलें उगेंगी, जिसकी ज़मीन से चाहेगा बारिश भी रोक देगा। (बीज पेटेन्ट होंगे और बारिश मस्नूई होंगी। क़ुदरती बारिश के अमल को किसी हद तक मुतअस्सिर करने का एक मुज़ाहिरा बीजिंग के हालिया ओलम्पिक गैम्ज़ 2008 ई0 में हो चुका है)

ये तो इस मंसूबे के मक़ासिद हैं। इसके नताइज क्या होंगे? वक़्त थम जाएगा और दज्जाल के ख़ुरूज की शर्त मुकम्मल हो जाएगी। मशहूर हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ जब दज्जाल निकलेगा तो

ज़मीन पर चालीस दिन रहेगा। पहला दिन एक साल के बराबर, दूसरा एक महीने के बराबर और तीसरा एक हफ़्ते के बराबर होगा। बक़िया सैंतीस दिन आम दिनों के बराबर होंगे। इस तरह उसके दुनिया में ठहरने की कुल मुद्दत एक साल दो महीने और चौदह दिन के बराबर बनती है। बाज़ मुहद्दिसीन ने फ़रमाया था कि ये दिन हक़ीक़त में लम्बे न होंगे। परेशानी के बाइस लोगों को तवील मालूम होंगे। लेकिन अल्लामा नववी रहि0 शरहे मुस्लिम में फ़रमाते हैं कि अक्सर उलमाए हदीस के नज़दीक हदीस से इसका ज़ाहिरी मअनी ही मुराद है यानी ये दिन फ़िल वाक़े इतने लम्बे होंगे जितना कि हदीस शरीफ़ में ज़िक्र है। इस बात पर नबी करीम सल्ल0 का यह फ़रमान खुली दलील है कि बाक़ी दिन आम दिनों की तरह होंगे। मालूम हुआ कि पहले तीन दिन आम दिनों से अलग क़िस्म के होंगे। नीज़ दज्जाल का फ़ित्ना ऐसा नहीं कि उससे पैदा होने वाली परेशानी तीन दिन में ख़त्म हो जाए। बहरहाल! अल्लाह तआला उन उलमा और मुहद्दिसीने किराम को बेहतरीन जज़ाए ख़ैर दे जिन्होंने हदीस शरीफ़ को हम तक असल शक्ल में पहुंचाया और इसका जो मअनी भी क़रीने क़्यास हो सकता था, वह बयान किया। कुछ मअनी ऐसे थे जो गुज़िश्ता दौर में समझ नहीं आ सकते थे लेकिन आज उनको समझना आसान है। आइये देखते हैं कि कैसे?

समझा जाता था कि ज़मीन की गर्दिश अपने महवर में हर सदी के दौरान 1.4 मिली सैकेण्ड सुस्त हो रही है। इस गर्दिश के सबब दिन रात बनते हैं, लेकिन जदीद तहक़ीक़ात के नतीजे में साइंसदानों ने दरयाफ़्त किया है कि रफ़्तार में यह कमी बाज़ औक़ात तेज़ी से मज़ीद गिरती है और इसके तीन बड़े असबाब हैं:

1) मुख़्तलिफ़ सय्यारों के कशिशे सिक़्ल इस रफ़्तार में कमी लाने का सबब बनती है क्योंकि वे ज़मीन को अपनी तरफ़ खींचती हैं।

2) गर्दिश की रफ़्तार को सुस्त करने के अमल में हवाओं का किर्दार भी है। हक़ीक़त यह है कि फ़ौरी गर्दिश में सुस्ती लाने का 90 फ़ीसद अमल हवाओं की तबदीली ही करती है। अगर हवा की रफ़्तार बढ़ जाती है तो कुर्रहये अर्ज़ की रफ़्तार सुस्त हो जाती है।

3) तीसरा और अहम सबब Haarp नामी इदारा है। यहूदी सरमाए के बलबूते पर यहूदी साइंसदानों की ज़ेरे निगरानी चलने वाला यह इदारा मौसमों के अंदाज़ में तबदीली, ज़मीन की महवरी गर्दिश में सुस्ती लाने, नीज़ कुर्रहये अर्ज़ में ज़लज़लों के इज़ाफ़े का भी ज़िम्मेदार है। Haarp एक प्रोजेक्ट है। इसका मअनी है: "हाई फ्रिक्वेन्सी इक्टोआरोरल रिसर्च प्रोजेक्ट"……1987-92 ई0 के दौरान इस इदारे के साइंसदानों ने एक ऐसा हथियार पेटेन्ट कराया जो ज़मीन के आयूनीकुर्रह या मक़्नातीसी कुर्रह के किसी हिस्से को तबदील कर सकता है। 11/अगस्त 1987 ई0 को रजिस्टर होने वाले इस अस्करी हथियार को मशहूर यहूदी साइंसदान बरनार्ड जे इसटलेन्ड ने ईजाद किया था। 1994 ई0 में अमरीकी महकमए दिफ़ा के सबसे बड़े मिलिट्री कंट्रीकट्रज़ "ई सिस्टम्ज़" ने यह हथियार ख़रीदा और दुनिया में सबसे बड़ा आयूनी हीटर तामीर करने का ठेका लिया। यह हथियार माहौलियात दबाव पैदा करके कुर्रहये अर्ज़ की फ़ित्री कुव्वतों में रद्दो बदल और ज़लज़लों की शिद्दत में इज़ाफ़ा ला सकता है। यह रद्दो बदल दज्जाली मिशन की तक्मील और दज्जाल के ज़ुहूर को करीब लाने की कोशिश है। आपने देखा होगा कि गुज़िश्ता चंद सालों से ज़मीन के मौसम में ग़ैर मामूली तबदीलियां आ रही हैं। यहूदी साइंसदान माहौल (फ़िज़ा) में किस तरह दबा व पैदा करते हैं और क्या वह वाक़ई फ़िज़ा में दबा पैदा कर लेते हैं? इसका जवाब है कि वह फ़िज़ा को आयोनाइज़ या डी आयोनाइज़ करके दबाव पैदा कर लेते हैं। 1958 ई0 में वाइट हाउस के मुशीरे मौसमियात, कैप्टन हावर्ड टीओरवेल ने कहा था कि महकमए दिफ़ा जाइज़ा ले रहा है कि

वे तरीके तलाश किये जायें जिनके ज़रीए ज़मीन और आसमान में आने वाले तबदीलियों को इस्तिमाल करके मौसमों पर असरअंदाज़ हुआ जा सके। मसलनः किसी मख़सूस हिस्से में फ़िज़ा को एक इलेक्ट्रोनिक बीम के ज़रीए आयोनाइज़ या डी आयोनाइज़ किया जा सके। यह 1958 ई0 की बात है और अब 2008 ई0 है। यहूदी साइंसदानों की ज़मीन के कुदरती निज़ाम से छेड़छाड़ और उसे अपने क़ब्ज़े में लेने की कोशिश बहुत आगे जा चुकी है और शायद वह वक़्त दूर नहीं जब वह कोई ऐसी हरकर करेंगे कि हमारी ज़मीन की कुदरती गर्दिश किसी "बिग बैंग" के नतीजे में शदीद मुतअस्सिर हो। वक़्त कुछ देर के लिये थम जाएगा और फिर कुछ देर बाद अपनी असली हालत पर आए। मसलन तीन दिन बाद जिनमें से पहला दिन बहुत लम्बा (महीने के बराबर) और तीसरा और कम (हफ़्ते के बराबर) हो। इस इज्माल की तफ़सील थोड़ी सी तशरीह चाहती है। आइये! इस पर एक नज़र डालें।

हमारी ज़मीन एक देवहैकल मक़्नातीस है जो गर्दिश के मुख़्तलिफ़ दर्जों के साथ मक़्नातीसी मैदान तख़्लीक़ करती है। ज़मीन जिस क़दर तेज़ी से गर्दिश करती है उसी क़दर ताक़तवर और कसीफ़ मक़्नातीसी मैदान बनता है। एक और कुव्वत भी है जो ज़मीन की गर्दिश से बराहे रास्त तअल्लुक़ रखती है और यह "ज़मीन की गुमक का तवातुर" है। यह तवातुर बुन्यादी गुमक का तवातुर या Schumman cavity Resonance कहलाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में इसे "ज़मीन की नब्ज़" भी कह सकते हैं। इसकी शनाख़्त 1899 ई0 में होती थी। तब से 1980 ई0 के अशरे के दरमियान तक ज़मीन की नब्ज़ 7.8 हर्ट्ज़ या 7 साइकिल फ़ी सेकेण्ड थी लेकिन 1986-87 ई0 के बाद जब से कुर्रहये अर्ज़ की फ़िज़ा से वरनार्ड जे ईसटलेन्ड के ईजादकर्दा आलात के ज़रीए छेड़छाड़ शुरू की गई है, नब्ज़ की रफ़्तार में तेज़ी आ गई है। 1995 ई0 के आख़िर तक एक अंदाज़े

के मुताबिक़ यह 8.6 हर्ट्ज़ थी और अब सुना है कि वह 10 के क़रीब पहुंच गई है। इसमें मज़ीद इज़ाफ़ा हो रहा है। मज़कूरा बाला तजुर्बे और इस जैसे मज़ीद तजुरबों से इसमें तेज़ी से इज़ाफ़ा होगा। ग़ालिब इम्कान है कि जब ज़मीन की गुमक 13 साइकिल्ज़ फ़ी सेकेण्ड तक पहुंचेगी तो एक ऐसा वक़्त आयेगा कि मक़्नातीसी फ़ील्ड ज़ीरो के क़रीब जो जाएगा। Awakening to Zero point नामी तहलकाख़ेज़ साइंसी इन्किशाफ़ात पर मब्नी किताब का मुसन्निफ़ क्रेग वरीडन इस वक़्त को "ज़ीरो प्वाइंट" कहता है जब ज़मीन का मक़्नातीसी मैदान बिल्कुल ख़त्म हो जाएगा क्योंकि हमारे सय्यारे की गर्दिश रुक जायेगी।

दज्जाल के ख़ातमे के बाद जब हज़रत मसीह अलै0 फ़ौत हो जायेंगे और दुनिया आख़िरी वक़्त के क़रीब पहुंच जाएगी तो ज़मीन कुछ लम्हों के लिये अपनी महवरी गर्दिश रोक देगी और फिर मुख़ालिफ़ सिम्त में अपने महवर पर घूमेगी तो सूरज एक दिन के लिये मग़रिब से तुलू होगा, फिर इसके बाद गर्दिश अपने मामूल पर आ जाएगी और हस्बे मामूल सूरज मश्रिक़ से तुलू होगा।

ऐन मुम्किन है कि इसका ज़ाहिरी सबब भी काइनात के फ़ित्री निज़ाम में यहूद की ग़ैर फ़ित्री मुदाख़लत की वह कोशिश हो जो वह ज़ुहूरे दज्जाल से पहले इसके इस्तिक़बाल के लिये करते रहे। इसके कुछ असरात तो ज़मीन की गर्दिश थम कर तीन दिन तक मुतअस्सिर हो जाने से ज़ाहिर हों और कुछ असरात दज्जाल की हलाकत के बाद क़्यामत से ज़रा पहले ज़ाहिर हों। यह महज़ एक इम्कानी तौजीह है। इससे ज़्यादा कुछ नहीं। हर चीज़ का हक़ीक़ी सबब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का हुक्म है। वह क़ादिरे मुत्लक़ किसी ज़ाहिरी सबब का मुहताज नहीं.....और अगर कोई चीज़ उसके हक़ीक़ी हुक्म का ज़ाहिरी सबब बन जाए तो यह उसकी "अम्रे कुन" की तक्मील का ज़रीआ है। न कोई चीज़ उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत से बाहर है और न

कोई ताक़त उसकी मंशा के ख़िलाफ़ कुछ कर सकती है। ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह यह नाक़िस समझ का नाक़िस इज़्हार है। हक़ीक़त तो अल्लाह बेहतर जानता है। यहां इस सारी तफ़सील का मक़्सद एक याद दिहानी है। हदीस शरीफ़ में आता है तीन वाक़िआत ऐसे नमूदार होंगे जो एक दूसरे के बाद रूनुमा होगे और फिर फ़ारिग़ वक़्त वालों के पास भी वक़्त न रहेगा। "अल्लाह के नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः जब ये तीन बातें रूनुमा होंगी तो फिर किसी ऐसे शख़्स का ईमान लाना उसको फ़ायदा न देगा जिसने पहले ईमान क़बूल नहीं किया था या उसने अपने ईमान से कोई ख़ैर का काम नहीं किया थाः

1) जब सूरज अपने गुरूब होने के मक़ाम से तुलू होना शुरू करेगा।

2) दज्जाल नमूदार होगा।

3) और ज़मीन का जानवर नमूदार होगा।"

इसी वक़्त के बारे में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन पाक में फ़रमाया हैः "जिस रोज तुम्हारे रब की बाज़ मख़्सूस निशानियां नमूदार होंगी तो फिर किसी ऐसे शख़्स को उसका ईमान लाना कुछ फ़ाइदा न देगा जो पहले ईमान न लाया हो और जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो।" (अलक़ुर्आन) जब ये निशानियां नमूदार हो जायेंगी तो फिर तौबा का दरवाज़ा बंद कर दिया जायेगा। फिर ईमान लाने का कोई फ़ाइदा नहीं होगा। गोया कि हमारे पास अब भी वक़्त है। आइंदा नहीं मालूम कि यह वक़्त हमारे हाथ में रहता है या यहूद की छेड़छाड़ से थम जाता है। ऐ मेरे भाइयो! इस रमज़ान को सच्ची तौबा का रमज़ान बना लो। (यह मज़मून रमज़ान में लिखा गया था) इस मर्तबा के रोज़ों को हक़ीक़ी तक़्वा का ज़रीआ बना लो। जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के लिये जान माल लगाने, इज़्ज़त

आबरू लुटाने का अज़्म कर लो.....वर्ना किसे मालूम कि मुहलत ख़त्म हो जाए.....ख़ातमे की इब्तिदा जो जाए और हम हाथ मलते रह जाएं।

जब लाद चलेगा बंजारा

हज़रत मेहदी की मुआविन तीन कुव्वतें:

अब हम असल सवाल की तरफ़ फिर लौटते हैं: हमने माना कि हज़रत मेहदी के साथ तीन तरह की कुव्वतें हो जाएंगी:

1) सालेह और क़ाबिल मुसलमान।

2) नेकबख़्त यहूदी, उनका सरमाया और इल्म।

3) सआदतमंद ईसाई और उनका तजुरबा व टेक्नोलोजी।

फिर खुद हज़रत मेहदी की क़ाबिलियत, ज़िहानत, जुरअत और उनके साथ ग़ैबी नुसरत व हिदायत (यानी हर मौके पर दुरुस्त फ़ैसले की सलाहियत) भी होगी.....लेकिन इस सब के बावजूद सात साल के क़लील अर्से में आख़िर किस तरह वह ताक़त कि उन पहाड़ों को जगह से हिला सकेंगे जो गुज़िश्ता दो तीन सौ सालों में मग़रिब ने थप्पी लगाकर खड़े किये हैं? इस सवाल का जवाब यह है कि ज़ाहिर में सुन्नत की कामिल इत्तिबा और बातिन में रब तआला से कामिल तअल्लुक़ की बरकत से अल्लाह पाक उनकी जद्दो जेहद और जिहाद व क़िताल में ऐसी बरकत अता फ़रमाएगा कि काइनात में कारफ़रमा ग़ैबी कुव्वतें उनके साथ हो जाएंगी। मग़रिब की दज्जाली ताक़त महज़ माद्दापरस्ती पर मब्नी है। माद्दा अल्लाह की नज़र में पस्त और हक़ीर है। अल्लाह तआला को परवाह नहीं कि वह हक़ीर और

नफ़्सपरस्त लोगों को यह हक़ीर चीज़ दे दे। इसके मुक़ाबले में हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 बुलंद मरतबा रूहानी शख़्सियात होंगी। उनको ग़ैर मामूली करामाती और मोजिज़ाती ताक़त दी जाएगी।

☆ .....''दुनिया के ख़त्म हो जाने का वक़्त क़रीब है। इसलिये मैं तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल की इताअत, कुर्आन करीम के अहकाम पर अमल, बातिल को ख़त्म करने और सुन्नतों को ज़िंदा करने की दावत देता हूं।'' (बैअत के बाद हज़रत मेहदी के पहले ख़ुत्बे से इक़्तिबास)

☆ .....''हज़रत मेहदी को अल्लाह तआला एक रात में सलाह (के बुलंद मक़ाम) तक पहुंचा देंगे।'' (हदीस शरीफ़)

☆ .....''हज़रत मेहदी के ख़िलाफ़ निकलने वाला लशकर जिसका सरबराह सुफ़यानी नाम का शख़्स होगा, ज़मीन में धंसा दिया जाएगा।''

☆ .....हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि (एक मर्तबा) हुज़ूर सल्ल0 ने सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम से पूछाः क्या तुमने किसी ऐसे शहर के मुतअल्लिक़ सुना है जिसके एक जानिब ख़ुश्की और दूसरी जानिब समंदर है? सहाबा ने अर्ज़ कियाः जी हां या रसूलुल्लाह! फ़रमायाः क़्यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि बनी इसहाक़ के सत्तर हज़ार अफ़राद इस शहर के लोगो से जिहाद कर लें। चुनांचे मुजाहिदीन जब वहां पड़ाव करेंगे तो न अस्लहा से लड़ेंगे और न तीर फेंकने की नौबत आएगी, सिर्फ़ एक मर्तबा "لا اله الا الله والله اكبر" कहने से शहर की हिफ़ाज़ती दीवार का एक हिस्सा गिर जाएगा।''

एक अहम नुक्ताः

इस रिवायत में एक लफ़्ज़ "سبعون ألفاً من بنى اسحق" आया है यानी बनू इसहाक़ में से सत्तर हज़ार मुजाहिदीन। इसके बारे में

बाज़ मुहद्दिसीन की राए यह है कि दरअसल यहां "بنی اسمٰعیل" मुराद हैं यानी मुसलमान, क्योंकि बनी इसहाक़ तो अहले किताब हैं। वे क्योंकर मेहदी के साथ मिलकर जिहाद करेंगे। ताहम मुस्लिम शरीफ़ के तमाम नुस्खों में "من بنی اسحق" ही वारिद है।

अल्लामा नववी रहि0 लिखतें हैं:

"قال القاضی: کذا هو فی جمیع أصول صحیح مسلم: "من بنی اسحق" قال: قال بعضهم: المعروف المحفوظ "من بنی اسمٰعیل" وهو الذی یدل علیه الحدیثُ وسیاقُه؛ لأنه انما أراد العربَ، وهذ المدینة هی القسطنطنیه."

(नववी अला हामिश मुस्लिम: 396/4)

तर्जुमा: "क़ाज़ी अयाज़ ने कहा है: "من بنی اسحق" का लफ़्ज़ ही मुस्लिम के तमाम नुस्ख़ों में आया है, अलबत्ता मशहूर मुस्तनद बात यह है कि मुराद "بنی اسمٰعیل" हों चूंकि इस मअनी पर हदीस की दलालत भी है और सियाक़े हदीस का मंशा भी यही है चूंकि उनसे मुराद अरब हैं और शहर से मुराद क़ुस्तुन्तुनिया है।"

क़ुस्तुन्तुनिया तुर्की दारुल हुकूमत इस्तंबुल का पुराना नाम है। इस शहर का कुछ हिस्सा एशिया में है और कुछ यूरप में। लगता है यूरपी यूनियन इस्तंबुल के उस हिस्सा पर क़ब्ज़ा कर लेगी जो यूरप में है। मुसलमान जिहाद करके इसको यूरप से वापस ले लेंगे।

बनी इस्माईल के लिये बनी इसहाक़ का लफ़्ज़ लाने की एक तावील यह भी हो सकती है कि हज़रत इसहाक़ अलै0 बनी इस्माईल के चचा हैं, और "عمُّ الرجل صنوأبیه" (चचा वालिद के क़ायम मक़ाम होता है) के क़ानून के मुताबिक़ चचा की तरफ़ निस्बत भी दुरुस्त है।

बाज़ मुहक़्क़िक़ीन का कहना है कि अगर हदीस को उसके

ज़ाहिरी मअनी पर ही रखें तो बनी इसहाक़ से मुराद वह अह्ले किताब होंगे जो उस ज़माना में मुसलमान होकर लशकरे मेहदी में शामिल हो जाएंगे जैसा कि बाज़ रिवायात में आता है।

और बाज़ का कहना है कि यहां बनू इसहाक़ ही दुरुस्त है और इससे मुराद पठान मुजाहिदीन है कि मुअर्रिख़ीन के एक तब्क़ा के मुताबिक़ नस्ली तौर पर यह अह्ले किताब हैं और तालिबान की शक्ल में हज़रत मेहदी के साथ होंगे।

एक अहम वज़ाहत:

फिर यह देखिये कि हदीस शरीफ़ में वज़ाहत है: "न अस्लहा से लड़ेंगे न तीर फैंकने की नौबत आएगी।" इस से मालूम हुआ कि मुसलमान अपने तौर पर जो बेहतरीन वसाइल दस्तियाब हों, उन्हें हासिल करें और ग़ल्बए दीन के लिये कुर्बानियां दें और देते रहें, आगे एक वक़्त पर अल्लाह पाक खुद ही ग़ैब से कोई सूरत पैदा फ़रमाएंगे।

यह बात उस वक़्त और भी वाज़ेह हो जाती है जब हम हज़रत ईसा अलै0 के नुज़ूल के बाद के वाक़िआत का जाइज़ा लेते हैं। हज़रत ईसा अलै0 जिस दिन फ़ज्र की नमाज़ में नाज़िल होंगे, उस दिन फ़ज्र के बाद वह दज्जाल और उसकी यहूदी फ़ौज (अमरीकन व इस्राईली आर्मी) के ख़िलाफ़ जिहाद शुरू करेंगे। दज्जाल उनको देखते ही दुम दबाकर फ़रार होगा। उसकी सारी शैतानी और माद्दी ताक़तें सल्ब हो जाएंगी और शाम तक हर दरख़्त और पत्थर पुकार कर मुजाहिदीन से कहेगा: "ऐ अल्लाह के बंदे! यह यहूदी मेरे पीछे छिपा है। इसे आकर ख़त्म कर दे।" अब बताइये! जब दज्जाल उनको देखते ही पिघलना शुरू हो जाएगा। (शायद इसमें सिक्स मिलियन डालर मैन या टरमीनेटर की तरह जुज़्वी तौर पर धात के आज़ा शामिल कर दिये गये होंगे) फ़िल्ला परदाज़ यहूदी, मुजाहिदीन के हाथों

शाम तक बरबाद हो जाएंगे तो एक दिन में कौनसी साइंस टेक्नोलोजी होगी जो अह्ले हक़ को हासिल हो जाएगी?

अगर आप इस अम्र की तसरीह चाहते हैं कि तक़्वा और जिहाद के बलबूते पर ग़ैबी कुव्वतें कमज़ोर व नातवां मुसलमानों के हमराह होंगी और बातिल की माद्दी ताक़त को पिघला डालेंगी, लिहाज़ा हमें माद्दी ताक़त हस्बे हैसियत हासिल तो करना चाहिये लेकिन इससे डरना या इसको हर्फ़े आख़िर नहीं समझना चाहिये.....तो इसकी वज़ाहत भी मिल सकती है। "अलामाते क़्यामत" (मुसन्निफ़ हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब) में अ्दुद्दुर्रुल मंसूर के हवाले से यह हदीस मौजूद है:

"ईसा बिन मरयम नाज़िल होंगे। पस लोगों की आंखों और टांगों के दरमियान से तारीकी हट जाएगी (यानी इतनी रौशनी हो जाएगी कि लोग टांगों तक देख सकें) उस वक़्त ईसा अलै0 के जिस्म पर एक ज़िरह होगी। पस लोग उनसे पूछेंगे आप कौन हैं? वह फ़रमायेंगे: मैं ईसा बिन मरयम अल्लाह का बंदा और रसूल हूं और उसकी (पैदा कर्दा) जान और उसका कलिमा हूं (यानी बाप के बेग़ैर महज़ इसके कलिमे "कुन" से पैदा हुआ हूं) तुम तीन सूरतों में से एक को इख़्तियार कर लो: (1) अल्लाह दज्जाल और उसकी फ़ौजों पर बड़ा अज़ाब आसमान से नाज़िल कर दे। (2) उनको ज़मीन में धंसा दे.....या (3) उनके ऊपर तुम्हारे अस्लहा मुसल्लत कर दे और उनके हथियारों को तुम से रोक दे।" मुसलमान कहेंगे: "ऐ अल्लाह के रसूल! यह (आख़िरी) सूरत हमारे कुलूब के लिये ज़्यादा तमानीनत का बाइस है। चुनांचे उस रोज़ तुम बहुत खाने पीने वाले (और) डील व डोल वाले यहूदी को (भी) देखोगे कि हैबत की वजह से उसका हाथ तलवार न उठा सकेगा। पस मुसलमान (पहाड़ से) उतर कर उनके ऊपर मुसल्लत हो जाएंगे और दज्जाल जब (ईसा) इब्ने मरयम को देखेगा तो सीसी की तरह पिघलने लगेगा हत्ता कि ईसा अलै0

क़्यामत तक मुसलसल हक़ पर क़िताल करती रहेगी (और) ग़ालिब रहेगी। फ़रमायाः फिर (उनमें) ईसा बिन मरयम अलै० नाज़िल होंगे तो उनका अमीर कहेगाः आइये! हमें नमाज़ पढ़ाइये! वे कहेंगे नहीं! बल्कि तु में से बाज़ लोग बाज़ पर अमीर हैं (चुनांचे उम्मती आगे बढ़ कर साबिक़ा नबी को नमाज़ पढ़ायेगा ताकि ख़त्मे नुबुव्वत का मस्ला वाज़ेह हो जाए) उम्मत की इंदल्लाह इज़्ज़त व इक्राम की ईमान वालों को चाहिये कि खुद को उस वक़्त के लिये ज़ेहनी व जिस्मानी तौर पर तैयार कर लें जब जिहाद ही ईमान का मेयार होगा। हज़रत मेहदी के साथ वही जा पाएगा जिसने पहले से जिहाद की तैयारी कर रखी होगी.....ऐन वक़्त पर तो बंजारा लाद चलेगा, सब ठाठ पड़ा रह जाएगा।

दो-धारी तलवार

तीसरी बातः हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे?

यह सवाल कि हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे? इतना अहम नहीं जितना नाज़ुक है। यह ऐसी दो-धारी तलवार है कि ज़रा सी फिस्लन कहीं से कहीं पहुंचा सकती है। पहले तो क़ुर्आन करीम की हिदायात मुलाहिज़ा फ़रमाइये। यह अगर्चे क़्यामत के मुतअल्लिक़ हैं लेकिन बंदा एक से ज़ाइद मर्तबा अर्ज़ कर चुका है कि अलामाते क़्यामत भी क़्यामत की तरह मुब्हम और पेचीदा हैं। उनमें अलामती ज़बान इस्तिमाल की गई है और इस मौज़ू का सारा मज़ा ही तजस्सुस में है जो इस इब्हाम और ज़ू मअनी अलामती लानत से पैदा होता है।

सूरह बनी इस्राईल में हैः "قُلْ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا" (ऐ नबी!) कह दीजिये ऐन मुम्किन है कि वह वक़्त बिल्कुल ही क़रीब आ गया हो!" (आयतः 51) बिल्कुल इसी तरह की एक बात सूरतुल मआरिज में भी वारिद हुई हैः "اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا، وَّنَرٰهُ قَرِيْبًا۔" "ये लोग इसे दूर समझ रहे हैं जबकि हम इसे बिल्कुल क़रीब देख रहे हैं।" (आयातः 6,7) क़ुर्आन हकीम में मुतअद्दिद बार आया है। "وَاِنْ اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ؟" (ऐ नबी!) कह दीजिये मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह क़रीब आ चुकी है या अभी दूर है!" (सूरतुल अंबियाः 109) "قُلْ اِنْ اَدْرِىْٓ

"اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا" "और (ऐ नबी!) कह दीजिये कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का वादा तुम से किया जा रहा है वह अंक़रीब पेश आने वाली है या अभी मेरा रब इसके ज़िम्न में कुछ ताख़ीर फ़रमाएगा!" (सूरतुल जिन्नः 25)

हुज़ूर नबी करीम सल्ल0 से एक साहब ने पूछाः "क़्यामत कब आएगी?" आपने फ़रमायाः "तुमने इसके लिये क्या तैयारी की है?" बिल्कुल यही बात इस सवाल के मुतअल्लिक़ कही जा सकती है। मेहदवियात के मौज़ू का सबसे सनसनीख़ेज और तजस्सुस आमेज़ सवाल यही है। इसका जवाब भी यही है कि हम ने इसके लिये क्या तैयारी की है? क्योंकि जिस तरह हज़रत मेहदी का साथ देने वाले बमुताबिक़ हदीस शरीफ़ रूए अर्ज़ के सालेह तरीन मुसलमान होंगे और उनकी फ़ज़ीलत अस्हाबे बदर वाली है, इसी तरह उनका साथ छोड़कर भागने वालों के लिये वईद भी उतनी ही सख़्त है। हदीस शरीफ़ में हैः

"इस पर (यानी मुसलमानों को काफ़िरों के हवाले न करने पर) जंग शुरू हो जाएगी और मुसलमान तीन गिरोहों में बट जाएंगेः (1) एक तिहाई लशकर तो मैदाने जंग से भाग जाएगा, उनकी तौबा अल्लाह तआला कभी क़बूल नहीं फ़रमाएगा। (2) एक तिहाई लशकर शहीद हो जाएगा, यह अल्लाह के नज़दीक अफ़ज़लुश शुहदा होंगे। (3) एक तिहाई लशकर को फ़तह नसीब होगी, यह आइंदा किसी फ़ित्ने में मुब्तिला न हो सकेंगे।" (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत का साथ छोड़कर भागने वाले कौन होंगे? जिन्होंने शिर्क व बिद्अत को दीन समझ रखा है। जिन्होंने अपने मुंह या शर्मगाह को हराम से आशना कर रखा है। जिनके दिलों में हसद, बुग्ज़ और कीना है। ज़बान पर ग़ीबत, तोहमत और झूट है। आंख में ख़यानत, हिर्स और हवस है। हाथ में बुख़्ल, करप्शन और फ़राड है। मुन्करात से तौबा नहीं की और दुनिया से मुन्करात के ख़ातमे के लिये जिहाद

करने वालों में शामिल होने का शौक़ है। ये वे लोग हैं जो हज़रत को ऐन मैदाने जंग में अकेला छोड़कर भाग जाएंगे।

तो मेरे भाइयो! अहम यह नहीं कि हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे? अहम यह है कि अगर वह ज़ाहिर हो गए तो हम में से किसने इसके लिये कितनी तैयारी की है? कहीं ऐसा न हो कि जब वह ज़ाहिर हों तो हम किसी ऐसे फ़ित्ने का शिकार हों कि उनका साथा देने के बजाए पीठ दिखा दें या उनके मुक़ाबले पर उतर आएं। जी हां! कुछ बदनसीब नाम निहाद मुसलमान सबसे पहले उनकी मुख़ालिफ़त में ख़म ठोंक कर निकलेंगे और दर्दनाक तरीक़े से बरबाद होंगे। अहादीस से वाज़ेह तौर पर मालूम होता है कि हज़रत के ज़माने में नाम निहाद मुसलमानों का एक तब्क़ा और होगा जो हज़रत का साथ छोड़कर भागने वालों से भी ज़्यादा बदबख़्त होगा। वह इस्लाम का दावेदार होने के बावजूद हज़रत के मुख़ालिफ़ीन में से होगा और उसे अल्लाह तआला सारी दुनिया की आंखों के सामने दर्दनाक अज़ाब में गिरिफ़्तार करेगा। वह ज़िंदा जिस्मों के साथ ज़मीन में धंसा दिये जाएंगे। ये वे लोग होंगे जो आज कल के सबसे बड़ फ़ित्ने यानी "फ़ित्री इर्तिदाद" का शिकर हो चुके होंगे और उनका सरबराह "अब्दुल्लाह सुफ़्यानी" नामी शख़्स होगा।

यह सुफ़्यानी कौन होगा? यह यहूदियों का तैयार कर्दा एक मुस्लिम लीडर होगा जिसको आलमी मीडिया मुसलमानों के हीरो और अक़ाइद के तौर पर पेश करेगा। बाज़ जंगों में वह मग़रिब के ख़िलाफ़ फ़ातिहाना किर्दार अदा करने का ड्रामा रचाएगा और फिर जब मुसलमानों में मक़्बूलियत हासिल कर लेगा तो असल रूप में ज़ाहिर हो जाएगा। नईम बिन हम्माद की "किताबुल फ़ितन" में है कि उसका नाम अब्दुल्लाह होगा और उसकी ख़ुरूज मग़रिबी शाम में "اَنْـدَرْ" नामी जगह से होगा। यह लफ़्ज़ असल में "عَيْـنُ دَوْر" है यानी दौर का चश्मा। अवाम की ज़बान में बिगड़ कर "اَنْـــدَرْ" हो

गया। "اَنْـدَرْ" इस वक़्त शुमाली इस्राईल के ज़िला "अन्नासिरा" का एक क़स्बा है जिस पर इस्राईल ने 24 मई 1948 ई0 में क़ब्ज़ा कर लिया था। बाज़ रिवायात से पता चलता है यह शुरू में मुसलमानों का हमदर्द और ख़ैरख़्वाह होगा, बाद में इसका दिल बदल जाएगा। इसका मतलब है कि इसे बातिल क़ुव्वतें मुसलमानों की जाली क़्यादत के लिये तैयार करेंगी जैसा कि आक्सफ़ोर्ड और कैम्बरिज के तिलस्म ख़ानों में होता है और जब वह मुसलमानों में मक़्बूलियत हासिल कर लेगा तो असल प्लान पर अमल शुरू करके हज़रत मेहदी के ख़िलाफ़ सफ़ आरा हो जाएगा। इसकी सोच व फ़िक्र का खुलासा "फ़िक्री इर्तिदाद" है।

फ़िक्री इर्तिदाद यह है कि इस्लाम के हलाल को हलाल और हराम को हराम न समझा जाए। शरई तालीमात को हर्फ़े आख़िर न माना जाए। इतने शुकूक व शुबहात और वसवसे पैदा किये जाएं कि शराब व ज़िना और सूद व जूए जैसी क़तई हराम चीज़ों को भी प्रोपेगन्डे के ज़ोर पर हलाल क़रार दिलवाया जाएगा।

☆ ....."उस दिन वह शख़्स सबसे बड़ा महरूम होगा जो बनूकल्ब के माले ग़नीमत से महरूम रहा (यानी हर साहबे ईमान मुजाहिद उस माले ग़नीमत में से कुछ न कुछ ज़रूर ले) अगर्चे ऊंट को बांधने की रस्सी ही क्यों न हो? सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! वे लोग उनके मुसलमान होने के बावजूद उनके अमवाल को ग़नीमत और उनके बच्चों को क़ैदी कैसे बना लेंगे? फ़रमाया: "वे शराब और ज़िना को हलाल समझने की वजह से काफ़िर क़रार दिये जाएंगे।"

☆ ....."सुफ़यानी ज़मीन में फ़साद बरपा किये हुए होगा हत्ता कि एक ओर से दिन के वक़्त दमिश्क़ की जामा मस्जिद में शराब की एक मज्लिस में बदकारी की जाएगी। इसी तरह एक औरत सुफ़यान की रान पर आकर बैठ जाएगी जबकि वह जामे दमिश्क़ की

मेहराब में बैठा होगा। उस वक़्त एक ग़ैरतमंद मुसलमान से मस्जिद की यह बेहुरमती और यह करीह मंज़र देखा न जाएगा और वह खड़ा होकर कहेगा कि अफ़सोस है तुम पर, ईमान लाने के बाद कुफ़्र करते हो? यह नाजाइज़ है। सुफ़यानी को हक़ की यह बात कड़वी लगेगी और वह उसको कलमए हक़ कहने की पादाश में मौत के घाट उतार देगा और सिर्फ़ उसी को नहीं बल्कि जिसने भी उसकी ताईद की होगी उसको भी क़त्ल कर देगा।"

यह है वह "फ़िक्री इर्तिदाद", यह है अल्लाह के अहकाम (हुदूदुल्लाह) की पामाली जो आज के "थिन्क टैंक्स" का बरपा कर्दा अज़ीम तरीन फ़ित्ना है। इससे जो वसवसे जन्म लेते हैं उनकी बिना पर आदमी सुब्ह को मुसलमाना होता है, शाम को काफ़िर। शाम को मुसलमान होता है तो सुब्ह को काफ़िर। इस फ़ित्ने की एक झलक देखनी हो तो हज़रत अल्लामए दौरां जावेद अहमद ग़ामदी और उनके तैयार कर्दा लाजवाब क़िस्म के बाकमाल फ़िल्ला पर्दाज़ों के प्रोग्रामों में देख लीजिये। जहां सीधे साधे नौजवानों से यह सवाल होते हैं: ख़ुदा का वजूद है भी या नहीं? हुदूद की तारीफ़ क्या है और तारीफ़ किसने की है? चेहरे के पर्दे का तकल्लुफ़ किसने जारी किया? वग़ैरा वग़ैरा। इन लोगों की बदनसीबी यह है कि इनके प्रोग्रामों की फ़ेहरिस्त देख लीजिये। एक भी तामीरी उन्वान नहीं मिलेगा। इस्लाही मौज़ूआत से इन्हें कोई सरोकार नहीं। इनका सारा ज़ोर तशकीक फैलाने और वसवसा पैदा करने पर है। कोई दुनियादार मुसलमान दीन की तरफ़ आ जाए, इसकी उनको काई फ़िक्र नहीं। सारा ज़ोर इस पर है कि जो बचे खुचे मुसलमान दीन पर टूटा फूटा अमल कर रहे हैं, वे किसी तरह से आज़ाद ख़्याल हो जाएं? तहारत के मसाइल न जानने वालों को इल्मी कलामी मबाहिस में उलझाने का आख़िर और क्या मतलब हो सकता है?

तो जनाबे मन! शराब व ज़िना को हलाल और सूद व जूए को

मेहराब में बैठा होगा। उस वक़्त एक ग़ैरतमंद मुसलमान से मस्जिद की यह बेहुरमती और यह करीह मंज़र देखा न जाएगा और वह खड़ा होकर कहेगा कि अफ़सोस है तुम पर, ईमान लाने के बाद कुफ़्र करते हो? यह नाजाइज़ है। सुफ़यानी को हक़ की यह बात कड़वी लगेगी और वह उसको कलमए हक़ कहने की पादाश में मौत के घाट उतार देगा और सिर्फ़ उसी को नहीं बल्कि जिसने भी उसकी ताईद की होगी उसको भी क़त्ल कर देगा।"

यह है वह "फ़िक्री इर्तिदाद", यह है अल्लाह के अहकाम (हुदूदुल्लाह) की पामाली जो आज के "थिन्क टैंक्स" का बरपा कर्दा अज़ीम तरीन फ़ित्ना है। इससे जो वसवसे जन्म लेते हैं उनकी बिना पर आदमी सुब्ह को मुसलमाना होता है, शाम को काफ़िर। शाम को मुसलमान होता है तो सुब्ह को काफ़िर। इस फ़ित्ने की एक झलक देखनी हो तो हज़रत अल्लामए दौरां जावेद अहमद ग़ामदी और उनके तैयार कर्दा लाजवाब क़िस्म के बाकमाल फ़ित्ना पर्दाज़ों के प्रोग्रामों में देख लीजिये। जहां सीधे साधे नौजवानों से यह सवाल होते हैं: ख़ुदा का वजूद है भी या नहीं? हुदूद की तारीफ़ क्या है और तारीफ़ किसने की है? चेहरे के पर्दे का तकल्लुफ़ किसने जारी किया? वग़ैरा वग़ैरा। इन लोगों की बदनसीबी यह है कि इनके प्रोग्रामों की फ़ेहरिस्त देख लीजिये। एक भी तामीरी उन्वान नहीं मिलेगा। इस्लाही मौज़ूआत से इन्हें कोई सरोकार नहीं। इनका सारा ज़ोर तशकीक फैलाने और वसवसा पैदा करने पर है। कोई दुनियादार मुसलमान दीन की तरफ़ आ जाए, इसकी उनको काई फ़िक्र नहीं। सारा ज़ोर इस पर है कि जो बचे खुचे मुसलमान दीन पर टूटा फूटा अमल कर रहे हैं, वे किसी तरह से आज़ाद ख़्याल हो जाएं? तहारत के मसाइल न जानने वालों को इल्मी कलामी मबाहिस में उलझाने का आख़िर और क्या मतलब हो सकता है?

तो जनाबे मन! शराब व ज़िना को हलाल और सूद व जूए को

यह सदी होगी या अगली? अल्लाह ही को बेहतर मालूम है। हमें वह दौर देखना नसीब होगा या हमारी अगली तीन नस्लों को उनका ज़माना मिलेगा? आलिमुल ग़ैब के अलावा किसी को इसका इल्म नहीं। इतनी बात है कि कुफ़्र का ग़ल्बा जहां तक पहुंच चुका है और मुसलमान जितने तवील अर्से से मज़लूमियत का शिकार हैं और क़ुर्बानियों के बावजूद पिसे चले जा रहे हैं, यह कुछ और ही बताता है।

कोई इब्हाम सा इब्हाम है!

हज़रत मेहदी कब ज़ाहिर होंगे?

अहादीसे मुबारका में ज़ुहूरे मेहदी की जितनी अलामात बयान की गई हैं, उनमें से कुछ में गुफ़्तगू अलामतन व इस्तिआरतन है। कुछ अलामतें बिल्कुल वाज़ेह हैं लेकिन उनके हक़ीक़ी ज़ुहूर से क़ब्ल उनके वक़्ते ज़ुहूर के बारे में कुछ कहना बहुत मुश्किल है। ज़ेल में इन दोनों के अक़्साम में से कुछ नुमायां निशानियों और अक्सर अहादीस में मुश्तर्का तौर पर मज़कूरा अलामात को ज़िक्र किया जाता है।

☆ .....एक अलामत यह बताई गई है कि आसमान से फ़लक शिगाफ़ निदा आएगी जो इमामे मुजाहिद के ज़ुहूर की मुनादी करेगी। इस अलामत का हक़ीक़ी मिस्दाक़ तो बिल्कुल वाज़ेह है लेकिन अव्वल तो यह उनके ज़ुहूर के बाद होगी जबकि हम क़ब्ल ज़ुहूरे इमाम उनके ज़मानए ज़ुहूर के अंदाज़ा लगाने की फ़िक्र में हैं। दूसरे मुम्किन है इसमें भी अलामती गुफ़्तगू की गई हो। यानी यह सदा डंके की चोट पर आसमान से आएगी ज़रूर, लेकिन आजकल कौन सी जगह ऐसी है जिसमें सैटिलाइट सिस्टम से वाबस्ता जदीद ज़राए इब्लाग़ मौजूद नहीं या कौन शख़्स है जिसकी इन ज़राए तक रसाई नहीं? हज़रत का ख़ाना काबा में ज़ुहूर और इसका रद्दे अमल ताज़ा

बा ताज़ा ख़ैर की सूरत में मस्नूई सय्यारे लम्हा बा लम्हा नश्र करेंगे और आसमान से सनसनीख़ेज़ इतलाआत के सिग्नल भेजेंगे।

☆ .....एक अलामत यह है कि आप सदी के मुजद्दिद होंगे। सदी के मुजद्दिद का इसके शुरू में आना ज़रूरी नहीं, वसत से पहले पहले आने वाले को इसी सदी का मुजद्दिद माना जाएगा। अब ख़ुदा जाने कि वह यही पुर आशूब सदी है जिसमें कोई सितम नहीं जो मुसलमानों पर ढाया न गया हो और कोई कुर्बानी नहीं जो मुसलमान जुअमा व मुजाहिदीन ने न दी हो और अगर यह सदी नहीं तो क्या हम तसलीम कर लें कि इतनी ज़बरदस्त कुर्बानियों के बावजूद भी कुफ्र हम पर मज़ीद कई सदियों तक बेधड़क हुक्मरानी करेगा???

हज्जाज ने कहाः "उसने हज़रत अली रज़ि0 ने सुना कि रसूले अकरम सल्ल0 ने फ़रमायाः चाहे दुनिया के लिये सिर्फ़ एक दिन काबी हो, अल्लाह तआला हम में से एक आदमी को भेजेगा जो दुनिया को इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह यह ज़ुल्म व सितम और नाइंसाफ़ी से भरी होगी। (मुस्नद अहमद)

☆ .....एक अलामत यह है कि फ़रात दरिया से पानी हट जाएगा और उसमें सोने का पहाड़ ज़ाहिर होगा। दज्ला और फ़रात दोनों तुर्की से निकलते हैं और इराक़ से गुज़रते हुए ख़लीजे अरब में गिरते हैं। तुर्की ने फ़रात पर मुतअद्दिद डेम बनाए हैं जिन में से "अतातुर्क डेम" दुनिया के बड़े डेमों में से एक है। इसकी वुस्अत 816 मुरब्बा किलोमीटर है। ख़िलाफ़ते उस्मानिया के बाद तुर्की में फ़िरी मिसन इक़्तिदार में रहे हैं। अगर तुर्की चाहे तो फ़रात का पानी इराक़ से बआसानी रोक सकता है और नबी करीम सल्ल0 की पेशगोई दुनिया आंखों से देखेगी कि सोने का पहाड़ ज़ाहिर होते ही दुनिया उस पर टूट पड़ेगी और सौ में से निन्नानवे इस लालच में मारे जाएंगे कि शायद मैं ही वह ख़ुशनसीब हूं जो इस सोने का मालिक बनेगा।

बा ताज़ा ख़ैर की सूरत में मस्नूई सय्यारे लम्हा बा लम्हा नश्र करेंगे और आसमान से सनसनीख़ेज़ इतलाआत के सिग्नल भेजेंगे।

☆ .....एक अलामत यह है कि आप सदी के मुजद्दिद होंगे। सदी के मुजद्दिद का इसके शुरू में आना ज़रूरी नहीं, वसत से पहले पहले आने वाले को इसी सदी का मुजद्दिद माना जाएगा। अब ख़ुदा जाने कि वह यही पुर आशूब सदी है जिसमें कोई सितम नहीं जो मुसलमानों पर ढाया न गया हो और कोई क़ुर्बानी नहीं जो मुसलमान जुअमा व मुजाहिदीन ने न दी हो और अगर यह सदी नहीं तो क्या हम तसलीम कर लें कि इतनी ज़बरदस्त क़ुर्बानियों के बावजूद भी कुफ़्र हम पर मज़ीद कई सदियों तक बेधड़क हुक्मरानी करेगा???

हज्जाज ने कहाः "उसने हज़रत अली रज़ि0 ने सुना कि रसूले अक्रम सल्ल0 ने फ़रमायाः चाहे दुनिया के लिये सिर्फ़ एक दिन बाक़ी हो, अल्लाह तआला हम में से एक आदमी को भेजेगा जो दुनिया को इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह यह ज़ुल्म व सितम और नाइंसाफ़ी से भरी होगी। (मुस्नद अहमद)

☆ .....एक अलामत यह है कि फ़रात दरिया से पानी हट जाएगा और उसमें सोने का पहाड़ ज़ाहिर होगा। दज्ला और फ़रात दोनों तुर्की से निकलते हैं और इराक़ से गुज़रते हुए ख़लीजे अरब में गिरते हैं। तुर्की ने फ़रात पर मुतअद्दिद डेम बनाए हैं जिन में से "अतातुर्क डेम" दुनिया के बड़े डेमों में से एक है। इसकी वुस्अत 816 मुरब्बा किलोमीटर है। ख़िलाफ़ते उस्मानिया के बाद तुर्की में फ़िरी मिसन इक़्तिदार में रहे हैं। अगर तुर्की चाहे तो फ़रात का पानी इराक़ से बआसानी रोक सकता है और नबी करीम सल्ल0 की पेशगोई दुनिया आंखों से देखेगी कि सोने का पहाड़ ज़ाहिर होते ही दुनिया उस पर टूट पड़ेगी और सौ में से निन्नानवे इस लालच में मारे जाएंगे कि शायद मैं ही वह ख़ुशनसीब हूं जो इस सोने का मालिक बनेगा।

☆ .....एक मशहूर अलामत हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा की रिवायत में है कि ज़मीन उस लशकर को निगल जाएगी जो हज़रत से लड़ने के लिये निकलेगा। इसका मअनी यह भी हो सकता है कि ज़मीन यक लख़्त फट जाएगी और उस बदनसीब फ़ौज को देखते ही देखते लुक़्मा बना लेगी जो मुसलमान होने की दावेदार होकर भी मुसलमान के नजाते दहिन्दा क़ाइद से लड़ने निकलेगी। यह भी इम्कान है कि यह लशकर जब शाम से आएगा (शाम के लफ़्ज़ में लब्नान और फ़लस्तीन.....यानी मौजूदा इस्राईल.....के अलावा उर्दुन भी शामिल है, जहां काफ़ी अर्से से हरमैन का एक ग़द्दार ख़ानदान हुक्मरान है जिसकी मलिकाएं अमरीकन यहूदी या बर्तानवी ईसाई होती हैं और मुसलमान हुक्मरानों को लुभाने के फ़न में ताक़ होती हैं) और उसकी मदद वह अमरीकी अफ़वाज करेंगी जो अर्ज़े हरमैन में छावनियां बनाकर लम्हए मौऊद के इन्तिज़ार में बैठी हैं तो फ़रीक़ैन में जदीद आलाते हर्ब के इस्तिमाल से ज़मीन में भारी भरकम गोले बड़े बड़े गढढे छोड़ जाएंगे। इसी गड़हों और मुहीब खडडों से दाग़दार ज़मीन जब अस्सादिक़ुल मुसद्दिक़ सल्ल० को दिखाई गई तो आप ने बिला तवक़्क़ुफ़ इसकी हक़ीक़त के क़रीब तरीन शानदार मंज़र कशी फ़रमाई।

इन अहादीस से एक बात यह सामने आई कि हज़रत अलइमाम को मुसलमानों की तरफ़ से फ़ौरी और आलमी पज़ीराई नहीं मिलेगी। इसलिये कि साहबे इख़्तियार हुक्मराने वक़्त, इस्लाह की अलमबरदार रूहानी हस्तियों को अपने असर व रुसूख़ के लिये हमेशा से ख़तरा समझते चले आये हैं। "इसी तरह आप से पहले भी हमने जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा वहां के आसूदा हाल लोगों ने यही जवाब दिया कि हमने अपने बाप दादा को एक राह पर और एक दीन पर पाया और हम तो उन्ही के नक़्शे पा की पैरवी करने वाले हैं। (अलज़ुख़रुफ़:32)

हज़रत मेहदी न रसूल हैं और न नबी, वह तो मुस्लेह और मुजाहिद हैं.....लेकिन उमरा का वतीरा रहा है कि शम्ए हक़ के मशअल बिरादरों की तदहीक व तहक़ीर करें चाहे वह जिस हैसियत में हों। इस मर्तबा तो उनको कुछ ऐसे उलमाए सू का सहारा भी हासिल होगा जो दुनिया परस्ती में मुन्हमिक हो चुके हैं और साहिबान इक़्तिदार से कुर्ब ने उनको हक़गोई से रोक रखा है या वह बिद्आत के मुरतकिब और ऐश परस्ती के आदी हैं। सुन्नत का इत्तिबा और जिहाद व क़िताल उनके नज़दीक गंवार तालिबान का काम है। जो दुनिया के पसमांदा तरीन ख़ित्ते "ख़ुरासान" से आएंगे जो पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के चंद इलाक़ों पर मुशतमिल इलाक़े का क़दीम जुग़राफ़ियाई नाम है। इन उलमा के लिये उलमाए यहूद की मिसाल सादिक़ आती है कि वह दिल से हुज़ूर सल्ल० को अच्छी तरह पहचान कर भी ज़बान से इसका इज़्हार और तसदीक़ के बजाए मुख़ालिफ़त करते थे।

☆ .....एक अलामत यह बयान की गई है कि इस साल ज़ुलहिज्जा में मिना में खून रेज़ी होगी लेकिन यह बहुत क़रीब की अलामत है, इसलिसे कि इस ज़िल हिज्जा के फ़ौरन बाद मुहर्रम में आशूरा की रात हज़रत के हाथ पर बैअते जिहाद होगी। इसलिये यह क़रीब तरीन अलामत हमारी बहस से ख़ारिज है। हम तो वक़्ते ज़ुहूर से पहले की अलामात पर बहस कर रहे हैं।

☆ .....एक अलामत यह भी है कि एक ख़लीफ़ा के इन्तिक़ाल पर शदीद इख़्तिलाफ़ होगा। इस इख़्तिलाफ़ की नौइयत बज़ाहिर यह लगती है कि सऊदी तख़्त पर इत्तिहादी अफ़वाज अपनी मर्ज़ी का आदमी बिठाना चाहेंगी जबकि अहले इस्लाम किसी ऐसे शख़्स को पसंद करते होंगे जिसके नज़रियात इत्तिहादियों को एक आंख नहीं भाते होंगे। मेहदवियात पर नज़र रखने वाले कुछ हज़रात इसका मिस्दाक़ शाह फ़हद को समझते थे लेकिन जब उसका इंतिक़ाल हुआ

और शाह अब्दुल्लाह की जानशीनी का अमल बख़ैर खूबी अंजाम पा गया तो उनके अंदाज़ों को ज़बरदस्त धच्का लगा लेकिन अंदाज़े तो अंदाज़े होते हैं। कुछ हज़रात के नज़दीक शाह अब्दुल्लाह के इंतिक़ाल पर इस तरह की सूरते हाल का अन्देशा निस्बतन ज़्यादा है।

अब हम दूसरी क़िस्म की अलामत की तरफ़ आते हैं जो इस लम्हए मौऊद की तरफ़ इशारा करती है, लेकिन मस्ला यहां यह है कि हम इस अलामत की क़तइय्यत के बावजूद क़ब्ल अज़ वक़्त उसे दरयाफ़्त नहीं कर सकते। यह वही अलामत है जिसने चंद साल क़ब्ल अवाम को गहरे तजस्सुस में मुब्तिला करने वाले पैग़ामात सुनने का मौक़ा पैदा किया था लेकिन इसमें फ़न्नी तौर पर एक अहम फ़ल्कियाती नुक्ते से तवज्जुह हट जाने के बाइस यह सनसनी ख़ेज़ी वाक़िआत की सान पर न चढ़ सकी। असल पेशगोई यूं है कि हज़रत मेहदी के माहे मुहर्रम में ज़ुहूर से क़ब्ल माहे रमज़ान में चांद और सूरज दोनों को गिर्हन लगेगा। नहीं! ऐसा हर्गिज़ नहीं। यह तो पहले भी होता रहा है। असल अनोखी बातें दो हैं और दोनों फ़ल्कियात के क़वानीन के एतिबार से आम तौर पर मुम्किन नहीं। इनका अदम इम्कान ही इनको मुहैयरुल उक़ूल अलामत बनाता है। पहली बात यह है कि फ़ल्कियात की रू से चांद गिर्हन हमेशा इस्लामी महीने के वसत में और सूरज गिर्हन आख़िर में होता है जबकि इस मर्तबा चांद गिर्हन शुरू में और सूरज गिर्हन वसत में होगा। दूसरी बात यह है कि एक महीने में दो मर्तबा चांद को गिर्हन नहीं होता। इस साल एक रमज़ान में दो मर्तबा चांद को गिर्हन लगेगा। यह वाज़ेह तरीन अलामत होगी कि तीन माह बाद मुहर्रम में हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होने वाला है। अब इसे इफ़रात व तफ़रीत के अलावा क्या कहा जाए कि कुछ लोग तो इन अलामतों के बग़ैर राह चलते शोबदा बाज़ों को मेहदी जैसी मुक़द्दस शख़्सियत मान लेते हैं और कुछ लोग इस वाज़ेह अलामात के बाद भी हज़रत को मानने से वैसे ही इंकार

करेंगे जैसा कि यहूद हुज़ूर सल्ल0 को पहचान लेने के बाद भी व वजूहे ईमान लाकर न देते थे बल्कि मुख़ालिफ़त पर कमर बांध कर हमेशा हमेशा के लिये रुसवा हो गए।

आज कल किसी भी फ़ल्कियाती वेबसाइट पर आप मुस्तिक़बिल में किसी भी लम्हे चांद सूरज की हरकात और गिर्हन का शिड्यूल देख सकते हैं लेकिन यह दोनों अनोखी अलामतें चूंकि हैं ही ख़िलाफ़े मामूल, इसलिये कोई माहिरे फ़ल्कियातदान भी इनका वक़्त बताने से क़ासिर है। आख़िरी रमज़ान से पहले और उनके वुक़ू से पहले वक़्त की तअय्युन मुम्किन नहीं। इस हवाले से दर्ज ज़ेल मज़मून में कुछ तफ़सील दी गई है:

दो गिर्हन चांद

आजकल मोबाइल फ़ोनों पर एक मेसेज चल रहा है जिसका ख़ुलासा कुछ यह है: "क़्यामत की आख़िरी निशानी। आसमान में दो चांद नज़र आएंगे। बी बी सी पर भी बताया गया है कि 27 अगस्त को दो चांद नज़र आएंगे। यही हज़रत मेहदी के ज़ाहिर होने का वक़्त है। क़ुर्आन पाक में है जब क़्यामत की आख़िरी निशानी नज़र आ जाएगी उसके बाद तौबा क़बूल नहीं होगी। इस पैग़ाम को जितना हो सके दूसरों तक पहुंचाएं।"

इस मेसेज पर तब्सिरा तो हम बाद में करेंगे, पहले हज़रत मेहदी के ज़ुहूर की अलामात में से जिस अलामत की तरफ़ इस पैग़ाम में मुब्हम, नाक़िस और ग़लत इशारा किया गया है, उसकी वज़ाहत हो जाए। अव्वल तो यह मुस्तनद हदीस नहीं। फिर इसके हवाले से जो कुछ इस पैग़ाम में कहा गया है वह भी दुरुस्त नहीं। तफ़सील इस इज्माल की यह है कि जुस्तजू की जाए तो 30 अलामात ऐसी मिलती हैं जो हज़रत मेहदी के ज़ुहूर से पहले काएनात में ज़ाहिर होंगी और दुनिया को मुतवज्जेह करेंगी कि मुसलमानों की मुसीबतों के ख़ातमे

(अगर्चे यह अच्छा वक़्त आग और खून के दरिया से गुज़रने का हौसला रखने वालों के लिये आएगा) और कुफ़्र की उम्मीदों पर पानी फिरने का वक़्त क़रीब आ गया है। इनमें से एक चीज़ ऐसी है जो दुनिया की पैदाइश से आज तक नहीं हुई और एक मर्तबा के बाद आइंदा भी नहीं होगी क्योंकि अल्लाह तआला की मुक़र्रर कर्दा फ़ल्कियाती तरतीब के मुताबिक़ यह मुम्किन ही नहीं।

इल्मुल फ़ल्कियात की रू से यह एक तैशुदा और मुसल्लमा क़ानून है कि चांद गिर्हन हमेशा क़मरी महीन के वसत और सूरज गिर्हन हमेशा महीने के आख़िर में ही मुम्किन है। यह मसला फ़ल्कियात का बिल्कुल इब्तिदाई और आम सा मसला है। इसकी वजह इस फ़न के मुब्तदी भी जानते और बआसानी समझ सकते हैं। दूसरे अल्फ़ाज़ में चांद गिर्हन हमेशा इस्लामी तारीख़ के हिसाब से 13, 14, 15 और सूरज गिर्हन हमेशा 27, 28, 29 को होगा। इससे आगे पीछे नहीं हो सकता। अल्लाह पाक ने फ़ल्की निज़ाम ही कुछ ऐसा रखा है। अलबत्ता हज़रत मेहदी के हाथ पर जिस साल के मुहर्रम में आशूरा की रात को हज्रे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान बैअते जिहाद व ख़िलाफ़त होगी और उस मुहर्रम से पहले ज़िल हिज्जा में मिना में सख़्त ख़ूरेज़ी होगी, उस साल रमज़ान में अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला से चांद गिर्हन 13, 14, 15 रमज़ान के बजाए यकुम रमज़ानुल मुबारक की रात को होगा और सूरज गिर्हन 27, 28, 29 रमज़ान के बजाए 15 रमज़ानुल मुबारक को होगा। यह दोनों बातें न मुम्किन हैं और न तख़्लीक़े काइनात से आज तक हुई हैं, लेकिन क़ानून से हट कर पेश आने वाली चीज़ों की अलामत भी आम क़वानीन से हट कर होती है।

1423 ई0 के बमुताबिक़ 2002 ई0 के रमज़ान में चांद और सूरज गिर्हन दोनों के इकट्ठे गिर्हन होने का वाक़िआ पेश आया था.....लेकिन इसकी नोइय्यत यह थी कि दोनों गिर्हन आम क़ानून के

मुताबिक अपने अपने वक़्त पर हुए थे यानी चांद गिर्हन माहे रमज़ान के वसत में और सूरज गिर्हन महीने के आख़िर में। रसदगाहों का रिकार्ड देखा जाए तो ऐसा 2002 ई0 से पहले कई मर्तबा हो चुका है। इस मौक़ा पर दर्जे बाला मेसेज की तरह के जो सनसनीख़ेज़ मज़ामीन शाए हुए थे, उनमें यह तकनीकी ग़लती हो गई थी कि चांद व सूरज के इकट्ठे गिर्हन को वह अलामत समझ लिया गया था जो इकट्ठे होने के अलावा अपने वक़्त से पहले होने से मशरूत थी। बल्कि मुतअल्लिक़ा आसार को देखा जाए तो चांद सूरज दोनों के इकट्ठे गिर्हन होने के साथ यह भी होगा कि चांद गिर्हन एक महीने में दो मर्तबा होगा। एक तो यकुम रमज़ान को और दूसरे माहे रमज़ान के बीच में किसी और दिन। अब यह तसरीह नहीं कि दूसरा गिर्हन हस्बे मामूल 13, 14, 15 को होगा या वह भी मामूल से हट कर किसी और तारीख़ में होगा। याद रहे कि एक क़म्री महीने में दो चांद गिर्हन या दो सूरज गिर्हन नहीं हो सकते अलबत्ता शम्सी महीने में हो सकते हैं। जैसा कि 2003 ई0 के जुलाई में हुआ कि यकुम और 31 जुलाई को दो सूरज गिर्हन हुए। गोया दूसरी निशानी भी ख़िलाफ़े मामूल होगी। आज कल जो हज़रात हज के मौक़ा पर हज़रत मेहदी की जुस्तजू में होते हैं, उन्हें हज से पहले ऐसे रमज़ान की जुस्तजू करनी चाहिये.....लेकिन मुश्किल यह है कि चांद सूरज की आइंदा कई सौ साल की सेकेण्ड सेकेण्ड की हरकत का हिसाब बताने वाले फ़ल्कियाती क़वाइद और वेबसाइट्स इस मौक़े पर इसलिये कोई मदद नहीं कर सकतीं कि ये दोनों गिर्हन ख़िलाफ़े मामूल होंगे और फ़ल्कियात का फ़न उनका सुराग़ पाने से आजिज़ है। इसलिये जो हज़रात "फ़ल्कियात" या "मेहदवियात" से मुनासिबत रखते हैं वह इस तरह की मुतअय्यन पेशगोइयों और ग़ैर सक़ा पैग़ामात को अहमियत नहीं देते।

अब उस नाक़ाबिले एतिबार मेसेज की तरफ़ वापस आते हैं जो

गुज़िश्ता चंद दिनों से ग़ैर सक़ा होने का सुबूत देते हुए सनसनी फैला रहा है। इतना तो आप समझ गये होंगे कि 27 अगस्त को न रमज़ान है न दोनों गिर्हन न दो चांद गिर्हन.....लिहाज़ा यह मेसेज राहे अमल से फ़रार के ख़्वाहिशमंदों के लिये वक़्ती तसकीन व तफ़रीह तो हो सकता है, हक़ीक़त से इसका कोई तअल्लुक़ नहीं। अब इसकी हक़ीक़त समझिये! 27 अगस्त 2003 ई0 को मरीख़ 50 हज़ार साला तारीख़ में पहली बार ज़मीन के इंतिहाई क़रीब और खूब रौशन था। इसको बाज़ नावाक़िफ़ मेहरबानों ने चांद समझ लिया और अब हर साल अगस्त में मुसलमानों के जज़्बात से खेलने के लिये कुछ शरारत पसंद ऐसा मेसेज सबको भेजते हैं और तहक़ीक़ के बेग़ैर सादा लोह मुसलमान इसे आगे चला देते हैं। इसलिये बंदा हमेशा अपने अहबाब को ताईद करता है कि हमेशा जय्यद उलमाए किराम की सोहबत इख़्तियार करें और सिर्फ़ मुस्तनद किताबें पढ़ा करें। हमारे अकाबिर अल्लाह तआला ने इल्मे रासिख़ के साथ अक़्ले कामिल अता फ़रमाई थी। इन्ही पर एतिमाद करें और इन्ही के क़दमों में पड़े रहने में अपनी नजात समझें। हज़रत मेहदी के ज़ुहूर के लिये माह व सन का तअय्युन दुरुस्त नहीं। अल्लाह तआला ने क़्यामत की तरह अलामाते क़्यामत को भी मुब्हम रखा है.....ताकि ग़फ़लत में पड़े हुए मुसलमान ज़िंदगी के हर दिन को आख़िरी दिन और हर रात को क़्यामत की रात समझ कर बदअम्ली और बेअम्ली से तौबा कर लें और अपनी तख़्लीक़ के मक़्सद को पूरा करने में जुत जायें।"

☆ ..... ☆ ..... ☆

नतीजा क्या निकला? अहम अलामतों पर गुफ़्तगू के बाद भी ज़ुहूरे मेहदी के वक़्त की मुतअल्लिक़ इब्हाम बाक़ी है। अगर हम तौरात की तरफ़ जाएं तो वहां एक ऐसी पेशगोई मिलती है जिस से कुछ मुहक़्क़िक़ीन ने वक़्ते मौऊद का अंदाज़ा लगाने की कोशिश की है।

मुहलत का इख़्तिताम

हज़रत दानियाल अलै0 (अल्लाह की रहमत और सलामती उन पर हो) बनी इस्राईल के मुक़द्दस पैग़म्बर थे। जब यहूद की बदआमालियों की पहली सज़ा के तौर पर अल्लाह तआला ने बुख़्त नस्र बादशाह को उन पर मुसल्लत किया और उसने इराक़ से आकर योरोशलम को तराज कर डाला। हैकले सुलैमानी की ईंट से ईंट बजा दी। तौरात के नुस्ख़े जला डाले। यहूद का क़त्ले आम किया। शहर को बरबाद व वीरान किया। बाक़ी बचे खुचे यहूदियों को गुलाम बनाकर अपने साथ बाबिल ले गया। तो जिस ज़माने में यहूद वहां गुलामों की ज़िंदगी गुज़ार रहे थे, अल्लाह तआला ने उन पर खाते हुए इस अज़ाब से नजात के लिये उनमें फिर से अंबिया भेजने शुरू किये। इन्ही अंबिया में से एक हज़रत दानियाल अलै0 थे। हज़रत दानियाल अलै0 अपनी शख़्सियत व किर्दार में सय्यदना हज़रत यूसुफ़ अलै0 से गहरी मुमासिलत रखते हैं। बनी इस्राईल के इन दोनों पैग़म्बरों को आग़ाज़ में गुलाम बना लिया गया था और फिर अजनबी मुल्क में अजनबी व मज़लूम शख़्स की हैसियत में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरते कामिला से उनकी जिस्मानी परवरिश और रूहानी तरबियत की हत्ताकि वह पैग़म्बर बनने के साथ दुन्यावी एतिबार से

भी बड़े उहदों तक पहुंचे। दोनों को अल्लाह तआला ने ख़्वाबो की ताबीर का खुसूसी इल्म अता किया था। वह मुश्किल हालात में भी लोगों को खुदाए वाहिद की तरफ़ बुलाते। जबर व ज़ुल्म के माहौल में कलमए हक़ बिला ख़ौफ़ व झिझक कहते रहे। दोनों पर फ़िला परदाजों ने तुहमत लगाई जिसकी नौइय्यत अलग अलग थी लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी कुदरते कामिला से उनकी पाकीज़गी और पाकदामनी ऐसे दलाइल से ज़ाहिर फ़रमाई कि दुश्मन भी इंकार न कर सके और मआफ़ी मांगने पर मजबूर हो गए।

बुख़्त नस्सर के बाद "नेबूशाने ज़ार" बादशाह हुआ। उसने एक ख़्वाब देखा। जिसका मतलब समझने में वह इतना उलझा कि परेशान होकर रह गया। उसने मुल्क के तमाम मशहूर नुजूमियों, जादूगरों, काहिनों और मुस्तक़बिल का हाल बताने वाले को जमा किया और ख़्वाब की ताबीर पूछी। जब इल्म का बेजा दावा करने वाले सब आजिज़ आ गए तो किसी ने उसे बनी इस्राईल के दानिशमंद और साहिबे फ़हम नौजवान दानियाल की इत्तिला दी। उसने उनको बुला भेजा। हज़रत दानियाल अलै0 ने अल्लाह तआला से फ़रयाद कि उन पर यह इल्म मज़ीद खोला जाए और उस ख़्वाब की सही सही ताबीर उन्हें समझा दी जाए। अल्लाह तआला ने उनकी यह दुआ क़बूल कर ली और उनके दिल में ख़्वाब का सही सही मतलब इल्क़ा कर दिया गया।

नेबूशाने ज़ार के इस ख़्वाब में उस वक़्त के बादशाह से लेकर क़्यामत तक आने वाले मुख़्तलिफ़ अदवार, हुकूमतों और बादशाहों के मुतअल्लिक़ जो पेशगोइयां की गई हैं, वे हैरतअंगेज़ तौर पर दुरुस्त साबित हुई हैं। मा सिवाए उन चंद बातों के जिन में यहूदी और ईसाई हज़रात ने तहरीफ़ कर दी है और उसे तोड़ मरोड़ कर कहीं और मुन्तबिक़ करने की नाकाम कोशिश की है, हज़रत दानियाल अलै0 के कलाम में आख़िरी नबी ख़ातिमुन्नबीय्यीन सल्ल0 के

मुतअल्लिक़ वाज़ेह पेशगोई है और यह कि एक अब्दी पैग़ाम और हमेशा क़ायम रहने वाला दीन ज़ाहिर होगा। अहले किताब की बदनसीबी कि वे हक़ीक़त का इंकार उस वक़्त करते हैं जब वह उनके सामने वाज़ेह हो जाती है। सरे दस्त हमारा मौज़ू इस ख़्वाब में से अददी पेशगोइयों पर मुशतमिल वह हिस्सा है जो हर दौर में बहस व तहक़ीक़ का मौज़ू रहा है और अब तो उनके ज़ुहूर के दिन उफ़क़ से परे नहीं, उरे दिखाई देते हैं।

अब आगे चलने से पहले एक वाक़िआ यह बयान करते चलें जिसे इब्ने इस्हाक़, इब्ने अबी शैबा, इमाम बैहिक़ी, इब्ने अबी अद्दुन्या और दीगर मुहद्दिसीन ने बयान किया है। ये हज़रात फ़रमाते हैं:

"हज़रत उमर रज़ि0 के दौर में "तसतूर" नामी शहर फ़तह हुआ तो फ़ातेह फ़ौज में शामिल सहाबा व ताबईन ने वहां हज़रत दानियाल अलै0 का मज़ार दरयाफ़्त किया। आपका जिस्म मुबारक एक ताबूत में बिल्कुल असल हालत में बेग़ैर किसी क़िस्म की तबदीली व तग़य्युर के मौजूद था। उनके सर पर कपड़े का एक ख़त था जिस पर अजनबी ज़बान में कुछ लिखा हुआ था। दरयाफ़्त कुनिन्दा जमाअत में जिन ताबईन के नाम हैं उनमें अबुल आलिया और मुतरफ़ बिन मालिक मशहूर हैं। ये हज़रात यह तहरीर लेकर सय्यदना हज़रत उमर रज़ि0 की ख़िदमत में पहुंचे। आपने मशहूर सहाबी हज़रत कअब अहबार रज़ि0 (जो पहले अहले किताब यहूद में से थे और सच्चा इस्लाम ले आए थे। अल्लाह उनसे राज़ी हो) से यह तहरीर पढ़कर अरबी में तर्जुमा करने की दरख़्वास्त की। हज़रत अबुल आलिया तावई फ़रमाते हैं कि इस तर्जुमे शुदा तहरीर को पढ़ने वाला पहला शख़्स मैं था। उसमें दर्ज था: "तुम्हारी तमाम तारीख़ और मुआमलात, तुम्हारी तक़रीर की सेहर आफ़रीनी और बहुत कुछ जो अभी वाक़े होने वाला है।" (इब्ने कसीर: अलबिदाया वन्निहाया

जि0 1, स0 40-42, बैहिक़ीः दलाइलुन्नुबुव्वा जि0 1, स0 381, इब्ने अबी शैबाः अलमुसन्निफ़ 7, 4, अलकर्मीः शिफ़ा अस्सुदूर स0 336)

तौरात में हज़रत उमर रज़ि0 के बैतुल मुकद्दस में फ़ातिहाना दाख़िले का भी तज़किरा है। मसलनः "ज़करिया" की सूरत में यह आयत दी हुई हैः

"ऐ सहीवन की बेटी! खुशी से चिल्लाओ। ऐ योरोशलम की बेटी! मुसर्रत से चीख़ो। देखो! तुम्हारा बादशाह आ रहा है। वह आदिल है और गधे पर सवार है। ख़च्चर या गधी के बच्चे पर। मैं यूफ़रैम से गाड़ी को ऊपर योरोशलम से घोड़े को अलाहिदा कर दूंगा। जंग के पर तोड़ दिये जाएंगे। इसकी हुक्मरानी समंदर और दरिया से ज़मीन के किनारे तक होगी।"

यह अल्फ़ाज़ वाज़ेह हैं लेकिन ईसाई उस ईसा बिन मरयम अलै0 के योरोशलम में तन्हा मुसाफ़िर की हैसियत से दाख़िले को मुराद लेते हैं। ऊंटनी के लफ़्ज़ को उन्होंने इसी लिये गधे से तब्दील किया है। यह इन हज़रात की दीदा दानिस्ता पैदा कर्दा ग़लतफ़हमी है। इसलिये कि बेशक मज़कूरा पेशगोइयों में "इस्लामी फ़ुतूहात" और "हज़रत उमर रज़ि0" का नाम नहीं दिया गया। लेकिन फ़ारसियों और रूमियों में से कोई भी हुक्मरान ऐसा नहीं गुज़रा कि जिसने फ़ारिस के साहिल से बह्र मुतवस्सित और बहीरए तब्रिया से अदन तक पूरे इलाक़े पर हुक्मरानी की हो। यह हक़ीक़त सिर्फ़ हज़रत उमर रज़ि0 और उनके साथियों पर सादिक़ आती है।

अब हम असल वाक़िए की तरफ़ लौटते हैं। बादशाह ने हज़रत दानियाल अलै0 को बुला भेजा। जब यह उसके पास पहुंचे तो उसने कहाः "मैंने तेरे बारे में सुना है कि इलाहों की रूह तुझ में है और नूर और दानिश और कमाल हिक्मत तुझ में हैं। हकीम और नुजूमी मेरे हुज़ूर हाज़िर किये गए ताकि इस तहरीर को पढ़ें और इसका मतलब मुझ से बयान करें लेकिन वह इसका मतलब बयान नहीं कर सके

और मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू ताबीर और हल्ल मुश्किलात पर क़ादिर है। पस अगर तू इस तहरीर को पढ़े और इसका मतलब मुझसे बयान करे तो अरग़वानी ख़िलअत पाएगा और तेरी गर्दन में ज़रीन तौक़ पहनाया जाएगा और तू ममलिकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा।" तब दानियाल अलै0 ने बादशाह को जवाब दिया: "तेरा इन्आम तेरे ही पास रहे और अपना सिला किसी और को दे तो भी मैं बादशाह के लिये इस तहरीर को पढ़ूंगा और इसका मतलब उस से बयान करूंगा।" (सूरह दानियाल: ब0 5, आयत 18,3)

इसके बाद बादशाह ने ख़्वाब सुनाया और हज़रत ने इसकी ताबीर बताई। इसमें दुनिया की तारीख़ के मुख़्तलिफ़ अदवार और मुख़्तलिफ़ हुकूमतों के आग़ाज़ व अंजाम के मुतअल्लिक़ पेशगोइयां हैं। इनमें से जिस पेशगोई का तअल्लुक़ हमारे दौर और हमारे ज़माने में हज़ारों साल बाद एक ख़ास हुकूमत के क़्याम से है इसका नाम उन्होंने "नफ़रत की रियासत" और "गुनाहों की ममलकत" रखा है। इस रियासत के क़्याम से दुनिया के अंजाम का आग़ाज़ होगा और इसमें गुनाहों की भरमार से यह आग़ाज़ अपने अंजाम की तरफ़ बढ़ेगा और यही वक़्त दो मुक़द्दस रूहानी शख़्सियतों (जनाब मेहदी और हज़रत ईसा बिन मरयम अलै0) और दो बड़े फ़ित्नों (अद्दज्जालुल अकबर और याजूज व माजूज) के ज़ुहूर का होगा।

हज़रत दानियाल अलै0 की इस पेशगोई के जिस हिस्से से हमें दिलचस्पी है वह यह है: "शिमाली बादशाह की जानिब से फ़ौजें तैयार की जाएंगी और वे मुहतरम क़िले को नापाक कर देंगी। फिर वे रोज़ाना की क़ुर्बानियों को छीन लेंगी और वहां नफ़रत की रियासत क़ायम करेंगी।"

इस इबारत में मुहतरम क़िले को नापाक करने से मस्जिद अक़्सा पर यहूदी क़ब्ज़ा और वहां ख़िन्ज़ीर के समोसों के साथ शराब नोशी मुराद है। रोज़ाना की क़ुर्बानियां छीनने से नमाज़ों पर पाबंदी की

तरफ़ इशारा है। रोज़ाना की कुर्बानी से इबादत मुराद है क्योंकि नमाज़ रोज़ होती है जबकि कुर्बानी रोज़ नहीं होती। नफ़रत की रियासत जो अलकुद्स (योरोशलम) पर कब्ज़ा करके यहां "गुनहगार मम्लकत" कायम करेगी, इससे मौजूदा इस्राईली रियासत मुराद है। यह रियासत कायम कैसे होगी? और इसके करतूत क्या होंगे? मुलाहिज़ा फ़रमायें:

"और अफ़वाज इसकी मदद करेंगी और वह मुहकमे मुक़द्दस को नापाक और दाइमी कुर्बानी को मौकूफ़ करेंगे और उजाड़ने वाली मक्रूह चीज़ नस्ब करेंगे। और वे उहदे मुक़द्दस के ख़िलाफ़ शरारत करने वालों को बरगश्ता करेगा लेकिन अपने खुदा को पहचानने वाल तक़वियत पाकर कुछ दिखाएंगे।" (तौरातः स0 846.....दानियालः ब0 11, आयतः 32, 31)

नफ़रत की रियासत की मदद करने वाली अफ़वाज अमरीका और बर्तानिया हैं। उजाड़ने वाल मक्रूह चीज़ की तन्सीब से मस्जिदे अक़्सा की जगह दज्जाल के क़स्र सदारत का क़्याम है। शरारत करने वालों को बरगश्ता करने से मुराद ईसाई दुनिया को वरग़ला कर सहीवनी मक़ासिद की तक्मील के लिये इस्तिमाल करना है। अपने खुदा को पहचानने वालों के कुछ करने से फ़लस्तीनी फ़िदाईन की बेमिसाल मज़ाहमत की तरफ़ इशारा है और ये उनकी खुदा परस्ती और खुदा के हां मक़्बूलियत की वाज़ेह खुशख़बरी है जो इन मज़लूमों के ज़ख़्मों का मरहम है।

यह रियासत कब क़ायम होगी? यह हमारी इस बहस का अहम तरीन सवाल है। हज़रत दानियाल अलै0 फ़रमाते हैं:

फिर मैंने दो मुक़द्दस ग़ैबी आवाज़ों को कहते सुनाः "यह मुआमला कब तक इसी तरह चलेगा कि मीज़ान और मुक़द्दस मक़ाम को क़दमों तले रौंद दिया जाए?" इस पर दूसरी आवाज़ ने जवाब दियाः "दो हज़ार तीन सौ दिनों तक के लिये। फिर ये

मुक़द्दस मक़ाम पाक साफ़ कर दिया जाएगा।" (तौरातः स0 846.....दानियालः ब08 आयतः 13, 14)

इस पेशगोई से मालूम हुआ कि नफ़रत की रियासत 2300 साल बाद क़ायम होगी। किस लम्हे से 2300 साल बाद??? यह हम आगे चल कर बताएंगे। पहले आख़िरी पेशगाई जिस से पता चलता है कि यह रियासत 45 दिन बाद ख़त्म हो जाएगी।

हज़रत दानियाल अलै0 फ़रमाते हैं: "अगर्चे मैंने फ़रिश्तों की यह बात सुन ली मगर मैं इसे समझ नहीं सका। चुनांचे मैंने अल्लाह से दुआ कीः "ऐ अल्लाह! खेल किस तरह ख़त्म होगा? अल्लाह ने जवाब दियाः दानियाल अपने काम से काम रखो। अल्फ़ाज़ पर क़फ़्ल चढ़ा दिये गए हैं और मुआमलात पर मुहर लगा दी गई है। अब आख़िरी वक़्त आने पर सारा राज़ फ़ाश होगा जिस दिन कि क़ुर्बानियां छीन ली जाएंगी और नफ़रत की रियासत क़ायम कर दी जाएगी। इसके बाद से एक हज़ार दो सौ नब्बे दिन बाक़ी रह जाएंगे। मुबारक हैं वे लोग जो एक हज़ार दो सौ पैंतीस के इख़्तिताम तक पहुंच जाएंगे। लेकिन (ऐ दानियाल!) तुम अपना काम दुनिया के इख़्तिताम तक करते रहो। तुम्हें आराम दिया जाएगा।" (तौरातः स0 849, ब0 12, आयत, 8, 13)

ईसाई और यहूदी शारिहीन यहां पहुंच कर सख़्त तज़बज़ुब का शिकार हो जाते हैं उन्हें समझ नहीं आता कि इसमें वक़्त का जो तअय्युन किया गया, इस से क्या मुराद लिया जाए? क्योंकि दुनिया में ऐसी रियासत नहीं जो 2300 दिनों के बाद क़ायम हुई हो और महज़ 45 दिन क़ायम रहने के बाद ख़त्म हो गई हो। (1290−1235=45)

मगर वे तौरात से ही मदद लें और आईना देखने से न डरें तो तौरात में दिनों से मुराद साल लिया जाता है। मसलन हज़क़ील में है: "मैंने तुम्हारे लिये एक दिन को एक साल के बराबर कर दिया है।"

लिहाज़ा आयत में 45 दिनों से मुराद 45 साल हैं। अब पेशगोई के मुताबिक़ उस रियासत का क़्याम 2300 साल बाद होगा। तौरात व इंजील के शारिहीन के मुताबिक़ इन सालों का आग़ाज़ सिकंदरे आज़म के एशिया फ़तह करने से होता है जो 333 क़ब्ल मसीह में हुआ। चुनांचे नफ़रत की रियासत (Abomination Of Desolation) का क़्याम 333 क़ब्ल मसीह के 2300 साल बाद होगा (2300−333=1967) यानी 1967 ई0 में। यही वह साल है जिस में इस्राईली अफ़वाज अलक़ुद्स में दाख़िल हुईं और मस्जिदे अक़्सा की हौलनाक आतिशज़दगी का वाक़िआ पेश आया। इस्राईल अगर्चे 1948 ई0 में बना लेकिन अलक़ुद्स (यरोशलम) जिस तक रसाई यहूद का असल मक़्सद है, वह 1967 ई में इस्राईलियों के क़ब्ज़े में गया। अब अगर यह रियासत अपने क़्याम के 45 साल बाद तबाह व बरबाद होती है और उसकी बरबादी हज़रत ईसा अलै0 और हज़रत मेहदी की अफ़वाज के हाथों होगी और यह दज्जाल और गुस्ताख़ यहूदियों के कुल्ली ख़ातमे पर ख़त्म होगी तो फिर बाज़ मुहक़्क़कीन का कहना है कि (ई0 1967+45=2012) के फ़ार्मूले से नफ़रत की इस गुनहगार ममलिकत का इख़्तिताम.....या इख़्तिताम के आग़ाज़.....का ज़माना 2012 ई0 के आसपास बनता है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

"वे पूछते हैं: ये सब कब होगा? कह दीजियेः शायद यह अन्क़रीब ही हो जाए।"

आलमे अरब के मशहूर हक़गो आलिम डाक्टर सफ़र बिन अब्दुर्रहमान अलहवाली जिन्हें हक़गोई की पादाश में मुतअद्दिद मर्तबा क़ैद व बंद की सुऊबतें बर्दाश्त करनी पड़ी हैं, उनका कहना है: "यह कोई हत्मी साल नहीं है। हां! अगर यहूदी हज़रात हम से शर्त लगाना चाहें जैसे कि अहले क़ुरैश ने हज़रात अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से शर्त लगाई थी तो हम बिला किसी तर्दीद के कह सकते हैं कि वह अपनी

शर्त हम से हार जाएंगे।" (यौमूल ग़ज़बः तर्जुमा रज़ीउद्दीन सय्यद, स0: 174)

यहूद यह शर्त हारें या न, इनका अर्ज़े फ़लस्तीन हारना और आख़िरी बरबादी का शिकार होना यक़ीनी है। और तौरात के मुताबिक़ मुबारक है वे लोग जो तक़्वा और जिहाद पर कारबंद रहते हुए मज़लूमों का साथ दिल, ज़बान या हाथ से देते हैं, उनके लिये तन्हाइयों में रोते और दुआएं करते हैं, उनके लिये नेक जज़्बात रखते हैं और उनके साथ हश्र के मुतमन्नी हैं।

नफ़रत की रियासत के ख़ातमे पर अहले हक़ ख़ुशी के तराने पढ़ेंगे, योरोशलम पाक साफ़ हो जाएगा। तमाम अहले ज़मीन और आसमानी मख़्लूक़ात यह कहते हुए अल्लाह तआला की तारीफ़ करेंगीः

"अलहम्दु लिल्लाह! नजात, अज़्मत, इज़्ज़त और ख़ौफ़ सब के लिये हम ख़ुदा के सज़ा वार हैं जो हमारा रब है। उसके फ़ैसले दुरुस्त हैं क्योंकि उसने उस तवाइफ़ को सज़ा दी जिसने अपनी बदकारी से रूए ज़मीन को भर दिया था। उसने अल्लाह के बंदों का ख़ून बहाया था और अल्लाह ने उससे इसका इंतिक़ाम लिया।"

रूए ज़मीन को ज़ुल्म से भरने वाला अमरीका है और अल्लाह की सज़ाओं से मुराद हुआ, तूफ़ान, ज़ल्ज़ले, और ताऊन (एड्ज़) हैं जो अमरीका को हर तरफ़ से घेर लेंगे। आलमी शर के ख़ातमे के बाद आलमी ख़ैर का वक़्त आएगा और ख़ुदा अपने उन वफ़ादार बंदों को इन्आम देगा जो हक़ की फ़तह पर आजिज़ी के साथ उसका शुक्र अदा करते हैं।

"क्योंकि फिर मैं लोगों के लिये एक पाकीज़ा ज़बान दूंगा जो अल्लाह का नाम पुकारेंगे और जो कंधा से कंधा मिलाकर अल्लाह की इबादत करते हैं।"

यहां पहुंच कर ईसाई व यहूदी मुहक़्क़िक़ीन गुंग हो जाते हैं कि

अगर आख़िरी फ़तह उनकी हुई तो फिर कंधे से कंधा मिला कर हम्द के गीत वे किस तरह गाएंगे? यह उनका तजाहुले आरिफ़ाना और अल्लाह की आयात में मअनवी तहरीफ़ है। पूरी दुनिया ख़ुसूसन ईसाई और यहूदी अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कि इस्लाम के इलावा दुनिया में कोई मज़हब नहीं जिस में इबादत गुज़ार "बुन्याने मर्सूस" की मानिंद नमाज़ में कंधे से कंधा मिला कर खड़े होते हैं और उनकी ज़बान पर पाकीज़ा तक्बीरात और हम्द का तराना (सूरह फ़ातिहा) जारी होता है।

शर्त हम से हार जाएंगे।" (यौमूल ग़ज़बः तर्जुमा रज़ीउद्दीन सय्यद, स0: 174)

यहूद यह शर्त हारें या न, इनका अर्ज़े फ़लस्तीन हारना और आख़िरी बरबादी का शिकार होना यक़ीनी है। और तौरात के मुताबिक़ मुबारक है वे लोग जो तक़्वा और जिहाद पर कारबंद रहते हुए मज़लूमों का साथ दिल, ज़बान या हाथ से देते हैं, उनके लिये तन्हाइयों में रोते और दुआएं करते हैं, उनके लिये नेक जज़्बात रखते हैं और उनके साथ हश्र के मुतमन्नी हैं।

नफ़रत की रियासत के ख़ातमे पर अह्ले हक़ ख़ुशी के तराने पढ़ेंगे, योरोशलम पाक साफ़ हो जाएगा। तमाम अह्ले ज़मीन और आसमानी मख़्लूक़ात यह कहते हुए अल्लाह तआला की तारीफ़ करेंगीः

"अलहम्दु लिल्लाह! नजात, अज़्मत, इज़्ज़त और ख़ौफ़ सब के लिये हम ख़ुदा के सज़ा वार हैं जो हमारा रब है। उसके फ़ैसले दुरुस्त हैं क्योंकि उसने उस तवाइफ़ को सज़ा दी जिसने अपनी बदकारी से रूए ज़मीन को भर दिया था। उसने अल्लाह के बंदों का ख़ून बहाया था और अल्लाह ने उससे इसका इंतिक़ाम लिया।"

रूए ज़मीन को ज़ुल्म से भरने वाला अमरीका है और अल्लाह की सज़ाओं से मुराद हुआ, तूफ़ान, ज़ल्ज़ले, और ताऊन (एड्ज़) हैं जो अमरीका को हर तरफ़ से घेर लेंगे। आलमी शर के ख़ातमे के बाद आलमी ख़ैर का वक़्त आएगा और ख़ुदा अपने उन वफ़ादार बंदों को इन्आम देगा जो हक़ की फ़तह पर आजिज़ी के साथ उसका शुक्र अदा करते हैं।

"क्योंकि फिर मैं लोगों के लिये एक पाकीज़ा ज़बान दूंगा जो अल्लाह का नाम पुकारेंगे और जो कंधा से कंधा मिलाकर अल्लाह की इबादत करते हैं।"

यहां पहुंच कर ईसाई व यहूदी मुहक़्क़िक़ीन गुंग हो जाते हैं कि

की मुहर सब्त कर दी जाए। उनका कहना था हदीस शरीफ़ में जिस शख़्स को हारिसुल हरास कहा गया है, आख़िर उसका इम्कान तो है कि वह मैं हूं। तो आप हज़रात इस आजिज़ाना तज्वीज़ पर मुहरे तसदीक़ सब्त फ़रमाएं ताकि एक अहम ख़ला पुर हो। उनके पास काग़ज़ात का जो पुलंदा था उसमें दुनिया जहां के दस्तख़त, तस्दीक़ात और मुहरें थीं। उनके पास मौजूद क़िस्मा क़िस्म तसदीक़ात देखकर ऐसा लगता था कि उन्हें मुहरों के नमूने जमा करने का शौक़ है, जैसा कि कुछ लोगों को टिकट, सिक्के या माचिस की डिबिया वग़ैरा जमा करके गिनीज़ बुक ऑफ़ दी वर्ल्ड रिकार्ड में नाम लिखवाने या और किसी तरह का एज़ाज़ पाने का शौक़ होता है। ऐसा मैं इसलिये कह रहा हूं कि आज तक मेहदवियत का दावा करने वाले तो बहुत से कज़्ज़ाब सामने आए। ये सारे कज़्ज़ाब शैतान सिफ़त होते थे या नफ़्स परस्त, जाह परस्त और माल परस्त। हज़रत मेहदी के साथी होने का दावा करने वाला पहली बार सामने आया था और वह था भी ऐसा भरंजान मरंज, भोली भाली और मासूम व बे ज़रर शख़्सियत कि उस पर गुस्सा के बजाए उससे शुग्ल करने और लुत्फ़ लेने का दिल चाहता था। बंदा ने उनसे अर्ज़ की कि यह रूहानी मनासिब कुछ करके दिखाने वालों के लिये हैं। उनमें ऐसा नहीं होता कि पहले किसी को मुक़द्दस शख़्सियत बनाकर रूहानी मंसब पर फ़ाइज़ कर दिया जाए और फिर उससे दरख़्वास्त की जाए कि अब वह हमारी तजवीज़ और ताईद की लाज रखने के लिये नज़राने की वसूलियों के अलावा भी कुछ करके दिखाया करे.....लेकिन उनका बस यही इसरार था कि पहले किसी शख़्स को (बिल तअय्युन उन्हीं को) हारिस मान लिया जाए फिर बात आगे बढ़ेगी। बाबा जी मिज़ाज के बुरे न थे। बस उनके दिमाग़ में किसी तरह यह सौदा समा गया था। बंदा ने उनको शाम तक अपने साथ रखा और जब दारुल इफ़्ता का वक़्त ख़त्म हो गया तो उन्हें साथ "फ़क़ीरी थल्ले" पर ले गया। बंदा

की मस्जिद साथ एक थल्ला था जिस का नामयार लोगों ने "फ़क़ीरी थल्ला" रखा छोड़ा था। मग़रिब से इशा और मा बाद इशा तक वहां मुतालआ और पढ़ाई होती थी और काम से फ़राग़त के बाद तआम व कलाम फ़क़ीरी नशिस्तें। यहां हमने बाबा जी को खूब जांचा परखा। टटोल टटोल कर देखा। दिल इस पर था कि अगर यह किसी फ़ित्ने का आग़ाज़ है तो उनके पास मौजूद तसदीक़नामे और काग़ज़ात का पुलिंदा ग़ायब कर दिया जाए और अगर महज़ बेज़रर क़िस्म के शख़्स को एक शौक़ चढ़ गया है और आगे चल कर ऐसा कोई ख़तरा नहीं तो उन्हें उनके हाल पर छोड़े दिया जाए। खूब छान फटक के बाद यही सामने आया कि बाबा जी न तो कोई बात अच्छी तरह कर सकते हैं न तालीम याफ़्ता हैं। न दस्तख़त और मुहरों के नक़्श जमा करने से आगे का कोई मंसूबा है। ज़ाहिर में जितने मासूम नज़र आते हैं हक़ीक़त में इससे भी ज़्यादा भोले हैं। इसलिये एक दो रोज़ मेहमानी के बाद रुख़सत कर दिया। बवक़्ते रुख़सती उनको शिक्वा था कि तुम सारी बात करते हो लेकिन अपनी दस्तख़त और मुहर नहीं देते। बताइये! ऐसा शख़्स भी हारिसुल हरास हो सकता है जिसे यह भी ख़बर न हो कि हम उनके पास मौजूद बक़िया तसदीक़ी ज़ख़ीरे को ठिकाने लगाना चाहते हैं और वह हम से हमारी तसदीक़ न मिलने पर शिक्वा कर रहा है।

हारिस और मंसूर दो लक़ब है। दो ज़िम्मेदारियां हैं। दो अज़ीम ख़िदमात हैं, जो ये हज़रात दीने इस्लाम की बुलंदी के लिये अंजाम देंगे। जब हज़रत मेहदी सात उलमा के मजबूर करने पर इमारत क़बूल करते हुए इस्लाह व जिहाद पर बैअत लेंगे तो पहले पहल उन्हें दुनियाए कुफ़्र से ज़्यादा अपने उन लोगों से ख़तरा होगा जो ग़फ़्लत, दुन्या परस्ती, फ़ितनए माद्दियत में मुब्तला हो जाने या अहादीस की असरे हाज़िर पर तत्बीक़ न कर सकने की वजह से उन्हें इस्लाही व जिहादी क़ाइद मानने से इंकार करेंगे। इस वक़्त से पहले हज़रत

मेहदी की कोई जमाअत, कोई तहरीक या तंज़ीम वग़ैरा कुछ नहीं होगी। बल्कि उन्हें पता भी न होगा कि वह "मेहदी" हैं। एक यका व तन्हा, ग़रीब व मुसाफ़िर शख़्स जिसके साथ चंद उलमा और इन उलमा के मुक़ल्लिद चंद जांबाज़ होंगे। इसे ग़ैरों के अलावा अपनों की भी शदीद मुख़ालिफ़त का सामना होगा। इसको जिसकी नुस्रत और इआनत की ज़रूरत होगी इसके लिये अल्लाह तआला तो अफ़राद को तौफ़ीक़ देगा कि एक उनकी माली किफ़ालत व ख़बरगीरी करेगा और दूसरा उनके लिये अस्करी कुमक व रसद का इंतिज़ाम करेगा। पहले को हदीस शरीफ़ में "हारिस" यानी किसान कहा गया है कि वह ज़िराअत वग़ैरा के ज़रीए किसानों की तरह मेहनत करेगा और दौलत कमा कर हज़रत की ख़िदमत में पेश करके इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह का वह अमल ज़िंदा करेगा जो सहाबा किराम रज़ि0 अजमईन की प्यारी सुन्नत है। दूसरे को "मंसूर" यानी वह शख़्स जिसकी ग़ैबी मदद की जाए, का अलामती नाम दिया गया है। वह अस्करी उमूर का माहिर जो क़ाबिल और दिलैर सालार होगा और हज़रत मेहदी के दुश्मनों को रौंदता हुआ और हज़रत मेहदी के लशकर की राह हमवार करता हुआ बढ़ता चला जाएगा और क़ुदरत की ग़ैबी मदद की बदौलत उसका और उसके साथ मौजूद सरफ़रोश मुजाहिदीन का रास्ता कोई न रोक सकेगा। इसकी मिसाल अगर समझना चाहें तो आज के दौर में आलमे कुफ़्र को मतलूब दो अहम शख़्सियात में से एक ने तागूत से बरसर पैकार लशकरे इस्लाम की अस्करी मदद की है, उनको पनाह फ़राहम की है और दूसरी अल्लाह के लिये कमाए गए अमवाल में से अल्लाह के सिपाहियों पर अल्लाह कि लिये ख़र्च कर रहा है। यह हतमी तअय्युन हर्गिज़ नहीं, बतौर मिसाल और नमूना है। हदीस शरीफ़ का बिऐनिही मिस्दाक़ ये दो शख़्सियतें हों या न हों लेकिन बमुताबिक़ हदीस इस तरह की शख़्सियात की मदद करना उम्मत के हर मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है।

इन शख़्सियात को तसदीक़ी दस्तख़त और मुहरों से नहीं, उनके कारनामों और दीन के लिये दी गई क़ुर्बानियों से पहचाना जाता है।

हज़रत हारिस व हज़रत मंसूर यानी जिहाद बिलमाल और जिहाद बिन्नफ़्स के फ़रीज़े को अदा करने के लिये अपना तन मन धन लगाने वाली यह मुबारक शख़्सियात जो हज़रत मेहदी का दस्त रास्त होंगी, के अलावा अहादीस में उन सात उलमा का तज़किरा भी हज़रत मेहदी के तज़किरे के ज़िम्न में आता है जिहोंने तीन सौ से कुछ ऊपर अफ़राद से दीने इस्लाम की ख़ातिर जीने मरने की बैअत ले रखी होगी और वह कुर्रए अर्ज़ के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में ग़ल्बए दीन की कोशिशों की क़्यादत कर रहे होंगे और फिर आख़िरकार हज़रत मेहदी की तलाश में अपने साथियों के साथ हरमैन जा पहुंचेगे। ये लोग उम्मत को अपनी तरफ़.....अपनी शख़्सियत की तरफ़.....नहीं बुलाएंगे.....लेकिन मस्ला यहां भी वही आ जाता है कि उनके साथ भी वही चल सकेगा जो अपने दिल को ग़ैर अल्लाह से और अपने अमल को शरीअत की मुख़ालिफ़त से पाक साफ़ करके फ़िदाइय्यत हासिल कर चुका होगा। हज़रत मेहदी के साथी बहुत थोड़े लेकिन असहाबे बदर की तरह बहुत मुंतख़ब लोग होंगे। उनकी क़लील तरीन तादाद को देखकर ही आम मुसलमान कहेंगे कि यह तो दहशतगर्द दीवानों का टोला है। पूरी दुनिया की मुत्तहिद व मुनज़्ज़म फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ कर ख़ुदकशी का शौक़ पूरा करने चला है। यह तो शरीअत की सिखाई हुई हिक्मत के ख़िलाफ़ चल रहा है। यह तो ख़ुद भी मरेगा और हमें भी "पत्थरों के दौर" में पहुंचा कर छोड़ेगा।

सो मेहदी मौऊद की इस दुनिया में तशरीफ़ आवरी लाचार और बेयार व मददगार मसाकीन की इआनत के लिये होगी जो बमुश्किल अपने कमज़ोर वजूद को कांधा दिये हुए होंगे। अपने गर्द व पेश की

प्रागंदगी से बेपरवाह अपने ईमानों को सीनों से लगाए नहीं जानते कि रहनुमाई के लिये किधर का रुख़ करें। "अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।" यह वह हक़ीक़त है जो क़ुर्आन में बारबार दोहराई गई है। तारीख़ गवाह है कि हमेशा दुनिया के कमज़ोर तरीन ही सबसे पहले आगे बढ़कर नूरे हिदायत को सीनों से लगाते हैं और अब्दी नजात पाते हैं। हमेशा की तरह, यह ग़रीब व आजिज़ हैं जो हज़रत मेहदी से वफ़ादारी औ इताअत शिआरी की बैअत करेंगे। बिना हिचकिचाहट और बेग़ैर किसी लालच या दलील के। ये इन जज़्बात व एहसासात का निहायत तलातुम ख़ेज़ जोश ज़ुहूरे सानी होगा जो आंहुज़ूर सल्ल0 ने अपने अव्वलीन सहाबा किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम में मोजज़न कर दिये थे। हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 से मर्वी एक हदीस तसदीक़ करती है कि हज़रत मेहदी भी उम्मत में अक़ीदत व मुहब्बत के नफ़ीस एहसासात उजागर कर देंगे। जिसके मुक़द्दर में हिदायत पाना लिखा है वह आप की पुरकशिश और दिलरुबा शख़्सियत पर फ़रेफ़्ता हो जाएगा। अक़्ल व इश्क़ के यही दोराहे हैं जहां हक़ शनास दिल शक्की मिज़ाज दिमाग़ पर सबक़त ले जाता है और फ़हम व फ़रास्त किसी काम नहीं आती। ख़ालिस इल्म व दानिश अगर किसी काम आ सकता तो अबू जहल व अबू लहब ईमान लाने वालों में आगे होते। क्योंकि वे एक वजीह ग़ैर मामूली आदमी थे और अपनी फ़ित्री ज़िहानत और समझबूझ की वजह से इज़्ज़त व एहतिराम वाले थे, लेकिन वे हक़ की तलब न होने के बाइस पड़े रह गए और हब्शी व रूमी दुनिया व आख़िरत की इज़्ज़त पा गए। अलग़र्ज़.....ख़ुलासा यह कि हज़रत मेहदी के ज़ुहूर से पहले ये दो शख़्सियात उनके लिये राह हमवार कर रही होंगी और इस्लाम की नश्अते सानिया के लिये अपने क़ाइद के साथ मिल कर

वफ़ादारी और जांबाज़ी की शानदार रिवायात को ताज़ा करके इस्लाम और मुसलमानों के ग़ल्बे की नवीद साबित होंगी।

चंद बातें

इस ज़मीमे के बाद यह मौज़ू तक़रीबन मुकम्मल हो चुका है। आख़िर में चंद बातें अर्ज़ करनी हैं:

1) बाज़ हज़रात को इशकाल है कि यह बहस छेड़ने का क्या फ़ाइदा? बंदा को भी अर्से तक तरद्दुद था.....लेकिन इसका जवाब इस सिलसिलए मज़ामीन के आग़ाज़ में अर्ज़ किया जा चुका है कि इस से इंशाअल्लाह नुक़्सान कोई नहीं, अलबत्ता फ़ाइदे की उम्मीद ज़रूर है। नुक़्सान तो इंशाअल्लाह इसलिये नहीं कि झूटे मुद्दइय्यों की अलामात खोल कर मुकर्रर, सह कर्रर बयान की गई हैं, ये मज़ामीन पढ़ने वाले इंशाअल्लाह ऐसे किसी काज़िब के चक्कर में नहीं आएंगे बल्कि उसकी मुख़ालिफ़त में किर्दार अदा करेंगे.....और इफ़ादियत का पहलू इस तरह है कि अगर हज़रत मेहदी का ज़माना क़रीब हुआ तो उम्मते मुस्लिमा के सालेह और फ़हीम अफ़राद के लिये ख़ुद को तैयार कर लेंगे, मुजाहिदीन की हौसला अफ़ज़ाई होगी, मायूस लोगों को तक़्वियत मिलेगी। और अगर ऐसा न हुआ तो इस तज़किरे का पहला और आख़िरी मक़्सद इस्लाहे ज़ात और इक़ामते शरीअत की जद्दो जेहद है। अगर कोई मुसलमान इसमें लग जाता है तो चाहे वह हज़रत मेहदी का ज़माना पा ले.....या न पा सके.....लेकिन उनके साथियों के लिये मैदान हमवार कर जाए, इससे बढ़कर और सआदत क्या हो सकती है? मौलाना रूम मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि सूफ़िया लोगों से कहते हैं: "मौत क़रीब है, तैयारी कर लो।" फ़लसफ़ी कहता है: "साठ सत्तर साल से पहले मरना नहीं, जल्दी की क्या ज़रूरत है?" यह ऐसा ही है जैसे कोई हमदर्द शख़्स किसी मुसाफ़िर से कहे: "इज़ाफ़ी बोझ उठाने की क्या ज़रूरत है? पानी

उसके मक़्बूल बंदों से इस्लाह का तालिब हूं। अल्लाह तआला हम सबको हिदायत पर इस्तिक़ामत और अपने अकाबिरीन से मज़बूत तअल्लुक़ नसीब फ़रमाए। हक़ की पहचान और अह्ले हक़ की नुसरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

निहायत शदीद है। यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों किसी मसीहा के इंतिज़ार में हैं। मुसलमान और ईसाई तो हज़रत मसीह अलै0 के इंतिज़ार में (जिनके साथ हज़रत मेहदी का लशकर होगा) और यहूदी "मुख़ालिफ़ मसीह" (Anti Christ) यानी दज्जाले अक्बर के इंतिज़ार में हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि यहूद और ईसाई इसके लिये तैयारी कर रहे हैं। मैदान हमवार कर रहे हैं जबकि उनकी मज़हबी पेशगोइयों में तहरीफ़ होकर कुछ का कुछ बना लिया गया है। सिर्फ़ मुसलमानों के पास सच्चे नबी का सच्चा कलाम बिला तग़य्युर व तब्दील मौजूद है लेकिन वह इस से बेफ़िक्र हैं, बेसुध हैं और जगाने वालों पर नाराज़ हैं कि क्यों नींद ख़राब करते हो? अभी तो दिल्ली बहुत दूर है।

3) पाकिस्तान के हुक्मरानों ने क़्यामे पाकिस्तान से आज तक अल्लाह तआला से इतनी बद अहदियां की हैं कि यह तक्वीनी तौर पर अपने वजूद का जवाज़ खो चुका है। निफ़ाज़े इस्लाम के वादे से इन्हिराफ़ और हमाकिस्म निफ़ाक़ को फ़रोग़ देने तक कोई चीज़ ऐसी नहीं जिस में कोई कसर छोड़ी गई हो, लेकिन यहां के अवाम का पुरख़ुलूस ईमान और दीन से बेलोस तअल्लुक़ के इलावा कुछ काम ऐसे हैं जो अल्लाह तआला मुख़लिस और दर्दमंद पाकिस्तानियों से (और अफ़ग़ानों) से लेगा। इस बिना पर यह मुल्क आज तक जैसा तैसा बाक़ी है और चल रहा है। हमें अपनी नजात से और बक़ा के इस वाहिद सहारे के तज़किरे से ग़फ़लत किसी तरह ज़ेबा नहीं है।

आख़िरी बात यह कि बंदा ने यह सब कुछ ख़ुद से नहीं लिखा। ज़ख़ीरए अहादीस में से जो रिवायात हमारे अकाबिर ने अपनी किताबों में ली हैं, उनकी अस्री तत्बीक़ की कोशिश की है। अगर यह दुरुस्त है तो अल्लाह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से है और अकाबिर की बरकात हैं। बंदा तो महज़ नाक़िल है। और अगर इसमें कोई ग़लती है तो बंदा की कज फ़हमी है। अल्लाह से तौबा और

उसके मक़्बूल बंदों से इस्लाह का तालिब हूं। अल्लाह तआला हम सबको हिदायत पर इस्तिक़ामत और अपने अकाबिरीन से मज़बूत तअल्लुक़ नसीब फ़रमाए। हक़ की पहचान और अह्ले हक़ की नुसरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

दूसरा बाब

मसीहयात

सच्चे और झूटे वादों की कशमकश
सच्चे और झूटे मुद्दइय्यों का तआरुफ़
दस सवालात, दस जवाबात
इब्हाम की तशरीह, उलझनों की सुलझन

इस्लाम और आलमे इस्लाम के लिये धड़कते ज़ख़्मी दिलों की तसकीन का सामान
हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के हाथों मग़रिबी दज्जालियत की पामाली की रूदाद

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 की वसीयत उम्मते मुहम्मदिया के नाम

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: "يَنْزِلُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ، فَيَدُقُّ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيرَ، وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ، وَيُهْلِكُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ فِي زَمَانِهِ الدَّجَّالَ، وَتَقُومُ الْكَلِمَةُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ." قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: "أَفَلَا تَرَوْنِي شَيْخًا كَبِيْرًا قَدْ كَادَتْ أَنْ تَلْتَقِيَ تَرْقُوَتَايَ مِنَ الْكِبَرِ، إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ لَا أَمُوتَ حَتّٰى أَلْقَاهُ، وَأُحَدِّثَهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُصَدِّقَنِي، فَإِنْ أَنَا مِتُّ قَبْلَ أَنْ أَلْقَاهُ وَلَقِيْتُمُوهُ بَعْدِي، فَأَقْرِئُوا عَلَيْهِ مِنِّي السَّلَامَ."

(अस्सुनन लिद्दानी : 242 रक़्म 691)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है: "ईसा इब्ने मरयम अलै0 नाज़िल होंगे तो सलीब को तोड़ देंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल कर देंगे और जिज़्या को मंसूख़ फ़रमा देंगे। अल्लाह तआला उनके ज़माने में दज्जाल को हलाक फ़रमाएंगे। अल्लाह के दीन का बोलबाला होगा।"

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 ने फ़रमाया: "क्या तुम मुझे नहीं देखते हो कि मैं बिल्कुल बूढ़ा हो चुका हूं? मेरी हंसली की हड्डियां बुढ़ापे के सबब मिल जाने के क़रीब हैं। मेरी यह तमन्ना है कि मेरी मौत

उस वक़्त तक न आए जब तक कि मैं आप (हज़रत ईसा अलै0) से मिल न लूं और मैं उनको नबी करीम सल्ल0 की अहादीस सुनाऊं और आप मेरी तसदीक़ करें। अगर मैं आप की मुलाक़ात से पहले मर जाऊं और तुम्हारी उनसे मुलाक़ात हो जाए तो आप (हज़रत ईसा अलै0) का मेरा सलाम अर्ज़ करना।''

मसीह का मअनी

मसीह मीम ज़बर, सीन के नीचे ज़ेर और आख़िर में हा। यह लफ़्ज़ हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिमा अस्सलाम और दज्जाल दोनों पर बोला जाता है, लेकिन जब इससे मुराद दज्जाल हो तो मसीह के साथ दज्जाल का लफ़्ज़ ज़रूर आता है, यानी "मसीह दज्जाल"। लिहाज़ा ईसा अलै0 "मसीह अलहुदा" और दज्जाल "मसीहुज़्ज़लाला" है।

हज़रत ईसा बिन मरयम अलै0 का नाम "मसीह" क्यों रखा गया? अहले इल्म ने इसकी कई वुजूहात बयान की हैं:

(1).....मसीह के मअनी छूने के हैं। आपको मसीह इसलिये कहा गया कि आप जिस भी मुसीबत ज़दा को छूते थे वह अल्लाह के इज़्न से सिहतयाब हो जाता था।

(2).....मसीह के एक मअनी सियाहत के हैं। आप ने दावत इलल्लाह का काम करते हुए ज़मीन में सियाहत की इसलिये आप को मसीह कहा गया।

इन दो अक़्वाल की बुनियाद पर मसीह बमअनी मासिह (इस्मे फ़ाइल) यानी छूने वाला या सियाहत करने वाला होगा।

(3)……उनके पांव पूरे ज़मीन पर लगते थे, तल्वों में ख़ला नहीं था इसलिये मसीह कहा गया।

4)……चूंकि उन्हें बरकत के साथ मसह किया गया या गुनाहों से पाक किया गया, इसलिये वह बाबरकत थे।

इन दो अक़्वाल के मुताबिक़ मसीह बमअनी मम्सूह (इस्मे मफ़ऊल) के होगा।

नामों की इन वुजूहात में कोई तज़ाद नहीं। इस क़िस्म के तमाम फ़ज़ाइल ही उनमें जमा थे, लिहाज़ा ये तमाम वजूहात अपनी जगह दुरुस्त हैं।

जिस तरह हज़रत ईसा अलै0 को मसीह कहते हैं, दज्जाले अक्बर को भी मसीह दज्जाल कहा जाता है। दज्जाले अक्बर का नाम मसीह क्यों रखा गया? इसके बारे में बहुत सारे अक़्वाल हैं मगर सबसे ज़्यादा वाज़ेह क़ौल यह है कि दज्जाल को मसीह कहने की वजह यह है उसकी एक आंख और अबरू नहीं है। इब्ने फ़ारिस कहते हैं: "मसीह वह है जिसके चेहरे के दो हिस्सों में से एक हिस्सा मिटा हुआ हो, उसमें न आंख हो और न ही अबरू। इसी लिये दज्जाल को मसीह कहा गया है।" फिर उन्होंने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 की सनद से रसूलुल्लाह सल्ल0 की इस हदीस से इस्तिदलाल किया है:

"وَاَنَّ الدَّجَّالَ مَمْسُوْحُ الْعَيْنِ، عَلَيْهَا ظَفْرَةٌ غَلِيْظَةٌ."

"बिला शुबा दज्जाल मिटी हुई आंख वाला है जिस पर एक ग़लीज़ भद्दा नाख़ूना (फुल्ली) है।"

मसीहा का इंतिज़ार

अलामाते क़्यामत का जब भी तज़किरा होगा तो हज़रत मसीह अलै0 का ज़िक्र लाज़िमन आएगा। क्योंकि खुद कुर्आन करीम में इर्शाद है: "और वह (ईसा अलै0) क़्यामत की (निशानियों में से) एक निशानी हैं।" हज़रत मसीह अलै0 अल्लाह तआला के वह सच्चे पैग़म्बर थे जिन्हें यहूद की आख़िरी तंबीह के लिये भेजा गया था। यहूद ने आप से पहले बहुत से अंबिया की तक्ज़ीब की, उन्हें सताया, गुस्ताख़ी की, बहुत सों को शहीद भी किया। दो मर्तबा जिला वतनी की सज़ा, हैकल सुलैमानी की बर्बादी और योरोशलम की तबाही के बावजूद वह मान कर न दिये। अल्लाह तआला ने अब बनी इस्राईल में से आख़िरी नबी उनके पास भेजा कि उसकी पैरवी करें। यह उनके दीन की तजदीद करेंगे। यहूद की तहरीफ़ात को ख़त्म करके असल दीन को उसकी असली शक्ल में ज़ाहिर करेंगे और यहूद के लिये सच्चे मसीहा साबित होंगे। हज़रत ईसा अलै0 को पहले दिन से ही अल्लाह तआला ने सच्चे पैग़म्बर होने की मुतअद्दिद अलामात के साथ मबऊस फ़रमाया। आप बेग़ैर बाप के कुन्वारी मुक़द्दस मरयम के बतन से पैदा हुए। आप मां की गोद में ही बातें करने लगे थे।

बचपन से ही बहुत नेक सालेह थे। आप की मन मोहनी शख़्सियत और पाकीज़ा किर्दार सबको गरवीदा कर लेता था। सिवाए यहूद के कि उनकी बदबख़्ती ने उनको कहीं का न छोड़ा। उनके अहबार (उलमाए सू) और रुहबान (जाली पीर) ने अपनी रिवायती दुनिया परस्ती, दीन बेज़ारी, संगदिली और हटधर्मी दिखाते हुए जनाब मसीह अलै0 की नुबुव्वत का इंकार किया। उनकी मुक़द्दस व मुतह्हिर मां पर बुहताने अज़ीम लगाया। उनको तरह तरह से सताया। उनके मानने वालों का मज़ाक़ उड़ाया। अपना तमाम तर इल्म व फ़ज़्ल आपकी दावत की मुख़ालिफ़त करने, मुअ़तरज़ाना इशकालात उठाने और आपकी शख़्सियत के ख़िलाफ़ मन्फ़ी प्रोपेगेन्डा करने पर ख़र्च किया.....हत्ताकि हाकिमाने वक़्त को आप के ख़िलाफ़ वरग़ला कर झूटे इल्ज़ामात के तहत आपके क़त्ल का हुक्म जारी करवा दिया। ग़र्ज़ यह कि "आख़िरी तंबीह" को "आख़िरी मोहलत" समझने के बजाए मुसलसल "आख़िरी ग़लती" पर इसरार करते रहे। बिल आख़िर जब उनकी नफ़्स परस्ती और शयतनत आख़िरी हद को पहुंच गई तो अल्लाह तआला ने जनाब मसीह अलै0 के हवाले से एक और मोजज़ा ज़ाहिर फ़रमाया जो इंसानी तारीख़ का अजीब वाक़िआ है। आप को बहिफ़ाज़त ज़िंदा सलामत आसमानों पर उठा लिया गया। यहूद अपना सा मुंह लेकर रह गए। आपका बाल भी बीका न कर सके। इसके बाद एक आख़िरी और अज़ीम मोजज़ा फिर ज़ाहिर होगा कि बदी का मह्वर और सरापा शर "अद्दज्जालुल अक्बर" जो अपनी मसनूई और फ़र्ज़ी ख़ुदाई का मुज़ाहिरा करके पूरे रूए ज़मीन पर इंसानी बग़ावत को सबसे अज़ीम मुज़ाहिरा करते हुए काइनात की तसख़ीर का नापाक इरादा लेकर दनदना रहा होगा और हज़रत मेहदी और उनके साथ मौजूद फ़ातेह यूरप व ईसाइयत मुजाहिदीन को सख़्त मशक़्क़त में डाल चुका होगा, उसको क़त्ल करने और ज़मीन से तमाम दज्जाली क़ुव्वतों (यहूद और उनके हमनवाओं) का ख़ातमा

करने के लिये हज़रत मसीह अलै0 के हवाले से एक बार फिर ग़ैर मामूली वाकिए का ज़ुहूर होगा। आपको आसमान से ज़मीन पर भेजा जाएगा और ऐसी ग़ैर मामूली कुव्वतें अता की जाएंगी जो रहमानी होंगी और दज्जाल की शैतानी कुव्वतों से सामना होते ही उनको पिघला कर खाक कर छोड़ेंगी। यह रूए अर्ज़ पर दिज्ल व फ़रेब के अलमबरदारों का आख़िरी दिन होगा।

ज़ेरे नज़र मज़मून में हम सय्यदना मसीह अलै0 के हवाले से उन अहम पहलुओं का तज़किरा करेंगे जिनका अस्रे हाज़िर में जीने वाले मुसलमानों का जानना ज़रूरी है। सच्चे वादों और झूटे दावों के दरमियान कश्मकश में घिरे बिरादराने इस्लाम को हक़ व बातिल की अज़ीम मअरका आराई के दौरान हक़ पर इस्तिक़ामत और बातिल के खिलाफ़ मुक़ावमत के लिये ज़रूरी है कि सच्ची हदीसों को बयान किया जाए और झूटे कज़्ज़ाबों के दिज्ल से बचा जाए। हमारी यह तहरीर दस सवालात या यूं कहें कि हज़रत मसीह अलै0 के हवाले से दस उन्वानात पर मुशतमिल है जो इंशाअल्लाह इस पूरी बहस का जामे खुलासा होंगे.....लेकिन ये सवालात या उन्वानात बाद में.....इससे क़ब्ल चंद बातों को सामने रखने से बहुत सी उलझनें हल हो सकती हैं।

मुसल्लमा अक़ीदाः

1) अल्लाह के महबूब पैग़म्बर सय्यदना हज़रत ईसा अलै0 का ज़िंदा आसमानों पर उठाया जाना और क़ुर्बे क़्यामत में दोबारा ज़मीन पर नाज़िल होना अहले इस्लाम का मुसल्लमा अक़ीदा है। यह अक़ीदा अहादीसे मुतवातिरा से साबित है और इसका इंकार कुफ़्र है। माज़ी बईद में फ़िर्क़ए जहमिया और बाज़ मुअ़तज़ला और माज़ी क़रीब में सरसय्यद और मिर्ज़ा क़ादियानी और हाल में चंद गुमराह इस्कालर्ज़ के इलावा किसी ने इसका इंकार नहीं किया। इस अक़ीदे (हयाते

मसीह) पर उम्मत का इज्मा है। लिहाज़ा इस अक़ीदे पर ईमान लाना वाजिब है और इसका इंकार कुफ़्र तक ले जाने वाली गुमराही है। जिन्होंने इसका इंकार किया वे मुअ़तज़ला की तरह अक़्ल परस्त थे या मिर्ज़ा क़ादियानी की तरह नफ़्स परस्त (कि ख़ुद को मसीह क़रार दिलवाना चाहते थे) या यहूदियत ज़दा जदीदियों की तरह ज़र परस्त कि जिहाद के इंकार के लिये (हज़रत मसीह अलै0 इमामुल मुजाहिदीन होंगे) हज़रत मसीह अलै0 के नुज़ूल का इंकार कर बैठे। अल्लाह तआला बदबख़्ती की हर शक्ल से महफ़ूज़ फ़रमाए।

मोजज़ात की हिक्मतः

2) सय्यदना हज़रत ईसा अलै0 को जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सच्चे मोजज़ात दिये गये थे मसलनः ख़तरनाक बीमारियों में मुब्तला बीमारों को अच्छा और मुर्दों को ज़िंदा करना, मिट्टी के बने परिंदों में फूंक मारने से उनका ज़िंदा होकर परवाज़ कर जाना, मादर ज़ाद अंधों की बीनाई लौटा देना, वग़ैरा वग़ैरा। बाज़ हज़रात ने इसकी हिक्मत यह बयान की है कि उस दौर में यूनान के अतिब्बा के हाथों फ़न्ने तिब्ब उरूज पर पहुंच चुका था, अल्लाह तआला ने उसके मुक़ाबले में आपको वह यदशिफ़ा अता फ़रमाया कि जिस तक माहिरीने तिब्ब की सोच भी नहीं पहुंच सकती। यह हिक्मत अपनी जगह हक़ीक़त है। इसके साथ यह बात भी पेशे नज़र रखिये कि हज़रत के इन मोजज़ात का तअल्लुक़ एक और नुक्ते से भी है। यहूद बुरी तरह से माद्दियत परस्ती का शिकार थे। यानी दुनिया की मुहब्बत और लज़्ज़तों की शह्वत के आगे अल्लाह और यौमे आख़िरत को भूल चुके थे। हिर्स व हवस ने उनकी नज़रें ग़ैबी हक़ाइक़ से हटा दी थीं और वह सुफ़ला ख़्वाहिशात के ग़ुलाम होकर हलाल व हराम की तमीज़ भुला बैठे थे। मामूली मफ़ादात की बिना पर अल्लाह की किताब में तहरीफ़ से भी नहीं चूकते थे। यही चीज़ दज्जाल के फ़ित्ने का ख़ुलासा होगी, यानी ख़ुदा बेज़ारी और माद्दियत परस्ती। फ़ानी

रौशनियों की चकाचौंध के सामने जन्नत की नेमतों को भुला देना और वक़्ती लज़्ज़तों और आरज़ी मफ़ादात के बदले जहन्नम का दाइमी अज़ाब ख़रीदने पर तैयार हो जाना। हज़रत ईसा अलै0 ने अपने रूहानी मोजज़ात से यहूद की इस अक़्लियत पसंदी और माद्दियत परस्ती पर ज़र्ब लगाई और उन्हें एहसास दिलाया कि अल्लाह की ताक़त तमाम माद्दी ताक़तों से बाला व बरतर है। ज़मीनी क़ुव्वतों का ग़ुलाम होकर आसमान वाले को भुला देना बदतरीन हिमाक़त है। आपने दीनी रूहानी क़ुव्वतों के इज़्हार से माद्दियत परस्तों को सबक़ दिया कि सब कुछ सिर्फ़ वह ही नहीं जो आंखों से नज़र आता है, इस से आगे जहां और भी हैं। यहूद ने आप की बात न मानी बल्कि इसी मर्ज़ में मुब्तला हैं और उनका सरबराहे आज़म, मसीहे काज़िब, दज्जाले अक्बर चूंकि माद्दियत परस्ती (जो आज कल मग़रिब का नज़रयए हयात है) का सबसे बड़ा अलमबरदार हागा और उसकी सफ़ों में यहूदी पेश पेश होंगे, इसलिये अल्लाह तआला आप को दोबारा दुनिया में भेजेगा कि अपनी रूहानी क़ुव्वतों से दज्जाल की शैतानी और यहूद की साइंसी क़ुव्वतों को एक नज़र में पामाल कर डालें। चुनांचे दज्जाल आपको देखते ही यूं पिघलना शुरू हो जाएगा, जैसे नमक पानी में घुलता है या चर्बी धूप में गल्ती है। आपकी सांस जिस काफ़िर तक पहुंचेगी उसी वक़्त मर जाएगा और जहां तक आपकी नज़र जाएगी वहां तक आपका सांस पहुंचेगा। यहूद जिस पत्थर या दरख़्त के पीछे छिपेंगे वही उनके ख़िलाफ़ मुख़्बरी करेगा। इस तरह अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर के हाथों इस काइनात का सबसे झूटा शख़्स और सबसे फ़रेबी और मक्कार गिरोह अपने अंजाम को पहुंचेगा।

राहे वफ़ा के राही:

3) ईसाई हज़रात ने (अल्लाह उनको नेक हिदायत दे) हज़रत ईसा अलै0 से मुहब्बत तो बहुत की लेकिन मुहब्बत की कठिन राहों

पर चलते हुए जब इम्तिहाने इश्क़ में सरखुरूई का मरहला आया तो सच्ची मुहब्बत के दो तक़ाज़े फ़रामोश कर गए: (1) एक तो मुकम्मल इताअत और जांनिसारी। (2) दूसरे महबूब के दुश्मनों से नफ़रत और बेज़ारी। लिहाज़ा इनका मस्ला यह हुआ कि हज़रत ईसा अलै0 की इताअत के बजाए उनको खुदा बना लिया और आपके दुश्मनों से जिहाद के बजाए उनसे दोस्ती गांठ ली। दुनिया में ऐसी क़ौम न होगी जो अपने पैग़म्बर के साथ मिल कर जान देने वालों से तो नफ़रत और जंग करे जबकि पैग़म्बर की जान लेने की कोशिश करने वालों की हिमायत में इतनी आगे चली जाए कि उनकी "गुनहगार रियासत" का दिफ़ाई हिस्सा बन जाए। सितम ज़रीफ़ी है कि ईसाई हज़रात बावजूद इस अक़्ल व दानिश के जिसने मग़रिब की मुहैयरुल उक़ूल माद्दी तरक़्क़ी को परवान चढ़ाया, यही कुछ कर रहे हैं। मुसलमान इनके पैग़म्बर हज़रत मसीह अलै0 के साथ यक जान व यक क़ालिब होकर आख़िरी दौर का अज़ीम तरीन जिहाद करेंगे और यहूद, मसीह मुख़ालिफ़ "दज्जाले अक्बर" के साथ मिलकर ईसाइयों के पैग़म्बर के ख़िलाफ़ हौलनाक जंग लड़ेंगे। इसके बावजूद ईसाइयों की नफ़रत और जंग मुसलमानों से है जो सिवाए मुहब्बत और अदब के उनके पैग़म्बर का तज़किरा नहीं करते और उनकी मुहब्बत व हिमायत यहूद से है जो तमाम अंबिया की तरह ईसाइयों के मुक़द्दस पैग़म्बर के भी गुस्ताख़ और बज़ुअमे ख़ुद क़ातिल हैं।

आख़िरी मअरके का मैदान:

4) हज़रत मसीह अलै0 का इंतिज़ार दुनिया के तीनों बड़े मज़ाहिब कर रहे हैं। इस्लाम, यहूदियत और ईसाइयत। तीनों में किसी "मसीहे मुंतज़िर" की पेशगोई है जो नजात दहिंदा के तौर पर सामने आएगा। फ़र्क़ इतना है कि यहूद मसीहे काज़िब को सादिक़ समझ कर रहनुमा मानते हैं और मुसलमान व ईसाई मसीहे सादिक़

के मुंतज़िर हैं.....लेकिन हम ने जो फ़र्क़ अहमियत के साथ ज़िक्र करना है वह यह कि अस्रे हाज़िर के यहूदी और ईसाई निहायत शिद्दत से मसीहाए ग़ाइब के ज़ुहूर के मुतमन्नी हैं। अहले मग़रिब की अक्सरियत ला मज़हब या बेदीन होने की शोहरत रखती है लेकिन इसके बावजूद वह इस हवाले से निहायत पुरजोश, मुतजस्सिस और सरगर्म है। अमरीका में तक़रीबन 80 हज़ार बुन्याद परस्त पादरी मौजूद हैं जिनमें से बहुत से पादरी एक हज़ार क्रिस्चन रेडियो स्टेशनों से तक़रीर नश्र करते हैं और उनके एक सौ क्रिस्चन टेलीविज़न स्टेशन भी हैं। उनमें एक ख़ासी बड़ी तादाद Dispensationalism की है। ये वे लोग हैं जो हज़रत मसीह अलै0 की अंक़रीब आमद और अज़ीम तरीन जंग पर यक़ीन रखते हैं। इनकी तादाद बराबर बढ़ रही है। बड़ी और बा असर तालीमगाहें जो Dispensationalist अक़ीदे की तालीम देती हैं, उनमें दी बाइबल इंस्टीट्यूट ऑफ़ शिकागो, फ़्लाडिफ़िया कालेज ऑफ़ बाइबल, दी बाइबल इंस्टीट्यूट ऑफ़ लास एंजलिज़ और इन जैसे तक़रीबन दो सौ कालिज और इंस्टीट्यूट शामिल हैं। 1998 ई0 में बाइबल स्कूलों के तलबा की तादाद एक लाख से ज़्यादा थी। इनमें 80 से 90 फ़ीसद असातिज़ा और उनके तालिबे इल्म भी Dispensationalist हैं। बाइबल कालेज के ग्रेजुएट यहां से निकल कर पादरी बनेंगे और अपने अक़ाइद की तबलीग़ करेंगे या अपना अलग बाइबल स्कूल खोल लेंगे और उनमें तालीम देंगे। ये लोग इस अक़ीदे पर कामिल यक़ीन रखते हैं कि एक ख़ौफ़नाक तबाही आने को है लेकिन उन्हें एक पल की भी तकलीफ़ नहीं होगी क्योंकि उन्हें पहले ही नजात (Rapture) मिल चुकी होगी। इस अक़ीदे के मुक़ल्लिद अपने मसलक में शदीद बुन्याद परस्त हैं और इस वक़्त अमरीकी बाशिंदों की तक़रीबन एक चौथाई तादाद इसकी मानने वाली है। इस तंज़ीम को माली इम्दाद फ़राहम करने वाले बड़े

बड़े और मशहूर मालदार अमरीकी हैं। यह तहरीक बड़ी तेज़ी से फैल रही है। इसका मक़्सद एक बिलियन डालर जमा करना है ताकि क़ुरए अर्ज़ के हर फ़र्द तक मसीह का पैग़ाम पहुंचा दें। सोलह हज़ार मसीह पादरी जिनकी तादाद में हर रोज़ इज़ाफ़ा हो रहा है, सालाना दो बिलियन डालर के बजट से मुस्तफ़ीद होते हैं। इनके इलावा कुल वक़्ती मुबल्लिग़ दो करोड़ अफ़राद तक अपना पैग़ाम पहुचाते हैं और आधे बिलियन डालर से ज़्यादा अतयात इकट्ठा कर लेते हैं। इन लोगों का असर अमरीकी अवाम के हर तब्क़े पर है। अमरीका की मशहूर सियासी और बैनुल अक़्वामी शख़्सियात उनसे मुतअस्सिर नज़र आती हैं। हत्ताकि रोनाल्ड रैगन से लेकर बुश जुनियर तक के अजीब व ग़रीब बयानात सामने आते रहे हैं जिनकी तौसीक़ न हो चुकी होती तो यक़ीन भी न आता कि ऐसे जिद्दत पसंद ऐसी क़दामत पसंदी पर मुशतमिल बात कह सकते हैं। मसलनः सदर रैगन ने पादरी जिम बेकर से 1981 ई0 में बातचीत करते हुए कहा थाः

"ज़रा सोचिये! कम से कम बीस करोड़ सिपाही मशरिक़ से होंगे और करोड़ों मग़रिब से होंगे। सलतनते रूम (यानी मग़रिबी यूरप) की तजदीदे नो के बाद फिर ईसा मसीह पर हमला करेंगे जिन्होंने उनके शहर योरोशलम को ग़ारत किया है। इसके बाद वे उन फ़ौजों पर हमला करेंगे जो आरमेगाडोन की वादी में इकट्ठे होंगे। इसमें कोई शक नहीं कि योरोशलम से दो सौ मील तक इतना ख़ून बहेगा कि वह ज़मीन से घोड़ों की बाग के बराबर होगा। यह सारी वादी जंगी सामान और जानवरों और इंसानों के ज़िंदा जिस्मों और ख़ून से भर जाएगी। ऐसी बात समझ में नहीं आती। इंसान दूसरे इंसान के साथ ऐसे ग़ैर इंसानी अमल का तसव्वुर भी नहीं कर सकता लेकिन उस दिन ख़ुदा इंसानी फ़ितरत को यह इजाज़त दे देगा कि अपने को पूरी तरह ज़ाहिर कर दे। दुनिया के सारे शहर लंदन, पेरिस, टोक्यो, न्यूयार्क, लास एन्जिलज़, शिकागा, सब सफ़हए हस्ती से नाबूद हो

जाएंगे।"

मशहूर अमरीकी मुसन्निफ़ा ग्रीस हाल सील अपनी मअरकतुल आरा किताब जिसका तर्जुमा "अमरीका की आलमे इस्लाम पर यलग़ार क्यों?" के नाम से बंदा के मज़ामीन और मुसन्निफ़ के तआरुफ़ के साथ शाए हो चुका है, लिखती हैं:

"अमरीका में आठ साल तक एक ऐसा सदर भी (रोनाल्ड रेगन) रहा है जिसे यक़ीन था कि वह वक़्त के ख़ातमे पर (क़ुर्बे क़्यामत के दिनों में) ज़िंदा रहेगा बल्कि यह आस लगाए बैठा था कि यह वाक़िआ उसके इंतिज़ामी ज़माने में ही पेश आएगा।"

सदर बुश ने एक मर्तबा सदा लगाई: "मुझे बराहे रास्त ख़ुदा से हिदायात मिलती हैं।" एक मर्तबा एक फ़ज़ाई सफ़र के दौरान सदर साहब मौसूफ़ ने जो बुन्याद परस्तों के ख़िलाफ़ मुहिम में पेश पेश हैं, तय्यारे में ही एक दुआइया तक़रीब मुनक़्क़िद की जिसमें मुहतरमा कोन्ड वलीज़ा राइस साहिबा ने फ़ज़ाई दुआ गुज़ारों को कट्टर मज़हबी रुसूमात के मुताबिक़ सर्विस फ़राहम की।

यह तो दो मशहूर अमरीकी सदर की कारगुज़ारियां थीं। दीगर अमरीकियों की ज़ेहनियत से आगाही के लिये आइये! मज़कूरा बाला मुसन्निफ़ा की तहरीर से मज़ीद कुछ इक़्तिबासात देखते हैं:

☆ ....."रीवन्ड क्लाइड लोट एक बंटी कोस्टल पादरी हैं। उन्होंने बाइबल की एक इबारत की इस तरह तफ़सीर की है कि यहूदियों के तीसरी हैकल की तामीर लाज़मी तौर पर यरोशलम में मसीह की दूसरी बार आमद से पहले होगी। क्लाइडर सुर्ख़ बैल या कंवारी गाए को जो बिल्कुल बेदाग़ हो, ज़बह करने के लिये कहते हैं जिसके बाद आइंदा हैकल की तामीर की रसम पूरी होगी। इसकी ख़ातिर क़दीम इस्लामी इबादतगा हों (मस्जिदे अक़्सा और गंबदे सुख़्रा) को मिस्मार कर देना होगा। क्लाइड को यक़ीन है कि ख़ुदा की शिराकत से यह काम मुनासिब वक़्त में हो जाएगा।" (न्यूयार्क

टाइम्ज़: 27 दिसम्बर 1998 ई0)

☆ ....."1998 ई0 के अवाख़िर में एक इस्राईली ख़बरनामा, वेबसाइट पर देखा गया जिसमें कहा गया कि इसका मक़्सद मुसलमानों की इबादतगाहों को आज़ाद कराना और उनकी जगह एक यहूदी हैकल की तामीर है। ख़बरनामें में लिखा है कि इस हैकल की तामीर का निहायत मौजूं वक़्त आ गया है। ख़बरनामे में इस्राईली हुकूमत से मुतालबा किया गया था कि मुल्हिदाना इस्लामी क़ब्ज़े को मस्जिद की जगह से ख़त्म कराए। तीसरे हैकल की तामीर बहुत क़रीब है।"

☆ .....इस्राईल को अपने आख़िरी अज़ीम तारीख़ी ड्रामे में स्टेज की मुकम्मल तैयारी के लिये बस एक वाक़िआ होना बाक़ी है। यह है इसकी क़दीमी ज़मीन पर इबादत के लिये एक क़दीमी इबादतगाह की अज़सरे नो तामीर। हज़रत मूसा अलै0 के फ़रामीन की रू से एक ही जगह है जहां इस इबादतगाह को तामीर किया जाना है। यह है माउंट मोरया (Mount Moriah)। वही जगह जहां इससे पहले की इबादतगाहें तामीर की गई थीं यानी ऐन मस्जिदे अक़्सा और गुंबदे मेराज पर।"

अलग़र्ज़! क़िस्सा मुख़्तसर! मग़रिब अपनी माद्दियत परस्ती के बावजूद इस क़दर इंतिहा पसंद है कि शिद्दत से "मसीहा" का इंतिज़ार कर रहा है। उसका अक़ीदा यह है कि "मुक़द्दस बाप" के आने के बाद उन्हें आसमान पर उठा लिया जाएगा जहां से वे आख़िरी हौलनाक जंग का मुज़ाहिरा बाला ख़ानों (Grand Stand Seats) में बैठ कर करेंगे।

जबकि दूसरी तरफ़ मुसलमान मज़हब पसंद होने के बावजूद अपने नबी सल्ल0 की सच्ची पेशगोइयों की तरफ़ ऐसे मुतवज्जेह नहीं हैं जैसाकि दौरे हाज़िर में इन पेशगोइयों के आसार क़रीब देख कर

चौकना और मुतवज्जे होना चाहिये। हज़रत मसीह अलै0 का साथ जिन लोगों ने देना है, "मसीहा के इंतिज़ार" से उनकी ग़फ़लत समझ में न आने वाली बात है।

बीच की कड़ी

क़्यामत की अलामात तीन क़िस्म की हैं: (1) अलामाते बईदाः यानी वह अलामात जो हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़माने में या उनके ज़माने के बाद लेकिन आज से काफ़ी पहले ज़ाहिर हो चुकी हैं और उनके और क़्यामत के दरमियान निस्बतन ज़्यादा फ़ासला है। (2) अलामाते मुतवस्सिताः वह अलामतें जो ज़ाहिर हो गई हैं मगर अभी इंतिहा को नहीं पहुंची। जब यह उरूज को पहुंचेंगी तो तीसरी क़िस्म के अलामात की इब्तिदा जो जाएगी। (3) अलामाते क़रीबाः यह अलामात क़्यामत के बिल्कुल क़रीब की हैं। एक दूसरे के बाद पै दर पै ज़ाहिर होंगी और जब यह सब (कुल दस के क़रीब हैं) ज़ाहिर हो चुकेंगी तो किसी भी वक़्त क़्यामत अचानक आ जाएगी।

पहली और तीसरी क़िस्म की अलामात का तअल्लुक़ काइनात में होने वाले वाक़िआत से है जबकि बीच की दूसरी क़िस्म का तअल्लुक़ इंसानों के आमाल से है। मसलनः पहली क़िस्म में ये अलामात आती हैं: आख़िरी नबी रसूलुल्लाह सल्ल0 की बेअ़सत और वफ़ात, शक़्क़ुल क़मर का वाक़िआ, फ़ित्नए तातार वग़ैरा। दूसरी क़िस्म वह गुनाह और बद आमालियां हैं जिनमें इंसान मुब्तला होकर

जाइज़ व नाजाइज़ को भुला देंगे। बुराइयों का इतना चलन होगा कि मसाजिद व मदारिस भी मौसीक़ी की ग़ैर ज़रूरी मोबाइल घंटियों और दाएं बाएं से कान में पड़ने वाली गाने बजाने की आवाज़ों से मुतअस्सिर होंगे। ये सत्तर से कुछ ऊपर गुनाह हैं जो अहादीसे शरीफ़ा में तफ़सील से मज़कूर हैं।

तीसरी क़िस्म का तअल्लुक़ अजीब व ग़रीब काइनाती वाक़िआत से है। ये दस हैं और इनमें से पांच का तअल्लुक़ हज़रत ईसा अलै0 के नुज़ूल तक है और पांच का आप के नुज़ूल के बाद से। इन आख़िरी पांच को अलामाते क़ुर्बा या क़ुब्रा भी कहा जाता है कि इनके बाद क़्यामत बस यूं बपा हो जाएगी जैसे हामिला ऊंटनी के आख़िरी दिन, कि न जाने कब बच्चा जन दे। पहली पांच अलामात तक दुनिया पर ख़ैर का ग़ल्बा होगा और आख़िरी पांच शर के कुल्ली ग़ल्बा तक होंगी। बिलआख़िर सब इंसान चाहे ख़ैर के आमिल हों या शर पर कारबंद, आख़िरी हिसाब के लिये पेश हो जाएंगे।

इन पांच पांच अलामात से पहले यह समझिये कि हज़रत मेहदी अलामाते मुतवस्सिता और अलामाते क़रीबा के दरमियान की कड़ी होंगे यानी जब दुनिया पर हमागीर शर और ज़ुल्म ग़ालिब होकर दाइमी और हत्मी ग़ल्बा के क़रीब होगा और अहले हक़ की क़यादत के लिये हज़रत मेहदी का ज़ुहूर होगा जबकि हज़रत ईसा अलै0 की वफ़ात अलामाते क़रीबा और अलामाते क़ुर्बा की दरमियानी कड़ी होगी यानी हज़रत ईसा अलै0 के हाथों पूरी दुनिया में इस्लाम का निफ़ाज़ होगा, फिर उनकी वफ़ात के बाद हालात बदलने शुरू हो जाएंगे हत्ताकि कि रूए ज़मीन पर शरीर तरीन लोग रह जाएंगे जो सड़कों पर खुल्लम खुल्ला गधों की तरह बदकारी से भी नहीं शरमाएंगे।

पांच "अलामाते क़रीबा" ये हैं: (1) ज़ुहूरे मेहदी (2) ख़ुरूजे दज्जाल (3) नुज़ूले मसीह (4) हिरमज्दवन (Armegadon) नामी

आलमगीर जंग जो इस्राईल का ख़ातमा करेगी और (5) याजूज माजूज.....पांच अलामाते कुर्बा ये हैं: (1) ख़स्फ़ यानी ज़मीन में धंस जाने के तीन वाक़िआत। एक मशरिक़ में, एक मग़रिब में और एक जज़ीरतुल अरब में। (2) काइनात में हर तरफ़ फैला हुआ धुंआ (3) सूरज का मग़रिब से तुलू होना (4) ज़मीन से एक अजीबुल ख़िलक़त जानवर का निकलना जो लोगों से बातें करेगा और उन्हें आख़िरी मर्तबा बदआमालियों के बुरे अंजाम से डराएगा। (5) यमन से ज़ाहिर होने वाली आग जो लोगों को हंका कर शाम की तरफ़ ले जाएगी।

जबकि हज़रत मेहदी और हज़रत ईसा अलै0 अलामाते क़्यामत में से आख़िरी अक़्साम की बीच की कड़ी हैं और हज़रत मेहदी का ज़ुहूर उस वक़्त होगा जब ज़मीन गुनाहों से और आलमे इस्लाम कुफ़्र के ज़ुल्म व जबर से भर जाएगा, मुसलमान अपनी क़यादतों से नालां होंगे और किसी नजात दहिंदा क़ाइद का शिद्दत और बेचैनी से इंतिज़ार कर रहे होंगे और इस जबर के आलम में भी कुफ़्र की पेशक़दमी के सामने अपनी जिहादी मज़ाहमत जारी रखेंगे हत्ताकि पूरी दुनिया में थोड़ा सा टुक्ड़ा रह जाएगा जो उनकी पनाहगाह होगा.....जब ये सब कुछ "एण्ड आफ़ टाइम" के आसार में से है तो फिर इस दौर में जीने वाले मुसलमानों को एक रात भी तौबा किये बेग़ैर बिस्तर पर जाना और एक सुब्ह भी जिहाद और मुजाहिदीन की इआनत की नियत के बेग़ैर घर से निकलना रवा नहीं। इन तहरीरों का ख़ुलासा और हासिल है। अल्लाह तआला नेक तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इस तम्हीद के बाद हम हज़रत मसीह अलै0 के मुतअल्लिक़ चंद अहम बातें ज़िक्र करते हैं तो इस मौज़ू को वाज़ेह और साफ़ कर देंगी इंशा अल्लाह! इसमें हमने यह तरीक़ा अपनाया है कि ख़ुद से कुछ कहने के बजाए दस सवाल उठाएंगे और जवाब में हदीस शरीफ़ का तर्जुमा मुकम्मल नक़्ल कर देंगे ताकि दिलचस्पी का अन्सुर भी पैदा

हो और मौजू की सक़ाहत भी क़ायम रहे। हवाले के लिये हम हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहब की किताब "अलामाते क़्यामत और नुज़ूले मसीह" से मदद लेंगे। ज़ेल में दी गई अहादीस का तर्जुमा मज़कूरा किताब से बिऐनिही लिया गया है। जो हज़रात इन अहादीस का हवाला या मज़ीद तफ़सील देखना चाहें वह असल किताब का मुतालआ करें।

मसीहियात से मुतअल्लिक़ दस सवाल

(1) आप ही क्यों?

मसीहियात के हवाले से सबसे पहला सवाल ज़ेहन में यह जन्म लेता है कि यहूद और दज्जाल के क़त्ल के लिये अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै0 का ही इंतिख़ाब क्यों किया? और क्या वजह है कि उन्ही को यह काम सिपुर्द फ़रमाया गया? हदीस शरीफ़ हमें बताती है:

"हज़रत कअब अह्बार रह0 का इर्शाद है कि जब हज़रत ईसा अलै0 ने देखा कि उनकी पैरवी करने वाले कम और तक्ज़ीब करने वाले ज़्यादा हैं तो इसकी शिकायत अल्लाह तआला से की। अल्लाह ने उनके पास वह्य भेजी कि मैं तुम को (अपने वक़्ते मुक़र्रा पर तबई मौत से) वफ़ात दूंगा (पस जब तुम्हारे लिये तबई मौत मुक़र्रर है तो ज़ाहिर है कि उन दुश्मनों के हाथों फांसी वग़ैरा पर जान देने से महफ़ूज़ रहोगे) और (फ़िलहाल) मैं तुमको अपने (आलमे बाला) की तरफ़ उठाए लेता हूं और जिस को मैं अपने पास उठा दूं वह मुर्दा नहीं। और मैं इसके बाद तुमको काने दज्जाल पर भेजुंगा और तुम उसको क़त्ल करोगे (आगे फ़रमाते हैं कि) यह बात रसूलुल्लाह सल्ल0

की उस हदीस की तसदीक़ करती है जिसमें आपने फ़रमाया है: "ऐसी उम्मत कैसे हलाक हो सकती है जिसके शुरू में मैं हूं और आख़िर में ईसा?" (अहुर्रुल मंसूर ब हवाला इब्ने जरीर)

(2) आप की पहचान कैसे होगी?

बहुत से लोग मसीह होने का दावा करते करते दुनिया को अंधेरों से निकालने के बजाए गुमराही में धकेल कर चले गए। अहले हक़ मुसलमान सच्चे मसीह को कैसे पहचानेंगे? ज़बाने नुबुवत जवाब देती है: "हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: मेरे और उनके यानी ईसा अलै0 के दर्मियान कोई नबी नहीं, और वह नाज़िल होंगे। जब तुम उनको देखो तो पहचान लेना। उनका क़द व क़ामत दर्मियाना और रंग सुर्ख़ व सफ़ेद होगा। हल्के ज़र्द रंग के दो कपड़ों में होंगे। सर के बाल अगर्चे न हों तब भी (चमक और सफ़ाई की वजह से) ऐसे होंगे कि गोया उनसे पानी टपक रहा है। इस्लाम की ख़ातिर कुफ़्फ़ार से क़िताल करेंगे। पस सलीब तोड़ डालेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे और ज़िज़्या लेना बंद कर देंगे। और अल्लाह उनके ज़माने में इस्लाम के सिवा तमाम मज़ाहिब को ख़त्म कर देगा और (उन्ही के हाथों) मसीह दज्जाल को हलाक करेगा। पस ईसा अलैहिस्सालाम ज़मीन में चालीस साल रहकर वफ़ात पाएंगे, और मुसलमान उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे। (अबू दाऊद, इब्ने अबी शैबा, मुस्नद अहमद, सही इब्ने हिब्बान, इब्ने जरीर)

सही बुख़ारी की एक हदीस में हज़रत ईसा अलै0 की मज़ीद अलामात बयान फ़रमाई गई हैं: "ईसा अलै0 निहायत हसीन गंदुमी रंग के होंगे। बाल बहुत घुंघरियाले नहीं होंगे। बालों की लम्बाई कंधों तक होगी। सर से पानी टपकता होगा। मुअ़तदिल जिस्म व क़ामत के होंगे। सुर्ख़ी माइल रंग होगा। जैसे अभी हम्माम से (गुस्ल करके)

आए हों।" (सही बुख़ारी, हदीसः 3182, 3184)

(3) आप के साथी कौन होंगे?

आप अलैहिस्सलाम किन लोगों के दर्मियान नाज़िल होंगे? किस वक़्त और किस कैफ़ियत में नाज़िल होंगे? जिन ख़ुशनसीब लोगों में आप उतरेंगे वे किन सिफ़ात की बिना पर इस अज़ीम सआदत के मुस्तहिक़ होंगे कि अल्लाह तआला के मुक़द्दस बंदे की रिफ़ाक़त उनको नसीब होगी? लिसाने नुबुवत हमें आगाह फ़रमाती है:

☆ ....."हज़रत जाबिर रज़ि0 का बयान है मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 को यह फ़रमाते हुए सुना कि मेरी उम्मत में एक जमाअत (कुर्ब) क़्यामत तक हक़ के लिये सरबुलंदी के साथ बरसरे पैकार रहेगी। फ़रमायाः पस ईसा बिन मरयम अलै0 नाज़िल होंगेः तो इस जमाअत का अमीर उनसे कहेगाः "आइये! नमाज़ पढ़ाइये" आप फ़रमायेंगे नहीं! अल्लाह ने इस उम्मत को एज़ाज़ बख़्शा है इसलिये तुम (ही) में से बाज़ बाज़ के अमीर हैं। (मुस्लिम व अहमद)

☆ ....."वह आख़िरी बार उर्दुन के इलाक़े में "अफ़ीक़" नामी घाटी पर नमूदार होगा। [यह दो मील लम्बी घाटी उर्दुन में वाक़े है] उस वक़्त जो शख़्स भी अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता होगा उर्दुन के इलाक़े में मौजूद होगा। (मुसलमानों और दज्जाल के लशकर के दरमियान जंग होगी जिसमें) वह एक तिहाई मुसलमानों का क़त्ल कर देगा। एक तिहाई को शिकस्त देकर भगा देगा और एक तिहाई को बाक़ी छोड़ेगा। रात हो जाएगी तो मुसलमान एक दूसरे से कहेंगे कि तुम्हें अपने रब की रज़ा के लिये अपने (शहीद) भाइयों से जा मिलने (शहीद हो जाने) में अब किस चीज़ का इंतिज़ार है? जिसके पास खाने की कोई चीज़ ज़ाइद हो वह अपने (मुसलमान) भाई को दे दे। तुम फ़ज्र होते ही (आम मामूल की बनिस्बत) जल्दी नमाज़ पढ़ लेना फिर दुश्मन के मुक़ाबले पर रवाना हो जाना।